मेरा पालनहार अल्लाह है

هندي

www.with-allah.com

मुहम्मद बिन सरीर अलयामी
डाक्टर अब्दुल्लाह बिन सालिम बा हम्माम

डाक्टर अब्दुल्लाह बिन सालिम बा हम्माम
मेरा पालनहार अल्लाह है
मुहम्मद बिन सरीर अलयामी

https://www.with-allah.com/hi

मेरा पालनहार अल्लाह है

....

मुहम्मद बिन सर्रार अलयामी

डाक्टर अब्दुल्लाह बिन सालिम बा हम्माम

अनुवादक रू

अब्दुल करीम अब्दुस्सलाम मदनी

https://www.with-allah.com/hi

https://www.with-allah.com/hi

विषय सूची

विषय सूची-- 5

मेरा रब (प्रभू) अल्लाह है 7

जब अल्लाह तआला से विश्वास उठ जाये ---------------- 7
कंगाल दासों (बंदों) को अल्लाह की आवश्यक्ता ---------- 8
अल्लाह के आदेश का पालन करो वह तुम्हारी रक्षा करेगाः 9
अल्लाह सर्वशक्तिमान ------------------------------------ 9
कंगाल बंदों (दासों) को अल्लाह की आवश्यक्ताः --------10
ज्ञान का सम्मान उसी से 11
और हर एक चीज़ में उस की निशानी है 11
समीक्षा ---13

अल्लाह पर ईमान 15

अल्लाह पर ईमान का अर्थ और उस की वास्तविकता (हक़ीक़त)ः--------------------------------------15
ईमान का महत्व --16
ईमान के फल---16
ईमान के प्रभावः--20
अल्लाह का परिचय कराने वाले रसूलों पर ईमानः ------24
अल्लाह से मुलाक़ात पर ईमान--------------------------28
प्रलोक पर ईमान निम्न लिखित प्रकार हैंः 29
दूसरी बातः मरने के बाद जी उठने पर ईमान 30
तीसरी बातः क़यामत और क़यामत की निशानियों के विषय में जो आया है उस पर ईमान लानाः 31
चैथी बातः क़यामत की हौलनाकी और उस की घटनाओं के विषय में 32
बताई गई बातों पर ईमान जैसेः 32
पाँचवीं बातः हिसाब और बदले पर ईमानः 35
छटवीं बातः जन्नत और जहन्नम पर ईमानः 36
समीक्षा ---41

प्रजापति पैदा करने वाले अल्लाह को पहचानिये 43

पहली बात.मेरा रब अल्लाह हैः 43
1- रब का अर्थः --43
2- रब के वजूद पर प्रमाणः------------------------------44
प्रकृति (फित्रत) की दलील 45
अक़्ली दलीलः 46
शास्न्नानुसार प्रमाण (शरई दलील) 47
हिस्सी दलीलः 48
3- एकेश्वरवादी व्यक्ति पर तौहीदे रुबूबियत का प्रभावः49
4- नास्तिकता (इल्हाद) और उस की खतरनाकी -------52
समीक्षा ---55

उस अल्लाह को पहचानिये जिस के अतिरिक्त कोई सत्य उपास्य नहीं 57

इलाह का अर्थ --57
लाइलाहा इल्लल्लाह का अर्थः----------------------------57
"लइलाहा इल्लल्लाह" की प्रतिष्ठाः ----------------------58
लाइलाहा इल्लल्लाह की शर्तेंः ---------------------------58
"लाइलाहा इल्लल्लाह" के नवाक़िज------------------------60
समीक्षा ---65

एकेश्वरवादी पर लाइलाइलाहा इल्लल्लाह की गवाही का प्रभावः 66

प्रथम खंड दिलों पर भक्ति प्रभावः 66

1) प्रेमः---66
समीक्षाः---75
2-आशाः ---76
समीक्षाः---80
3) डरः 82
अल्लाह तआला से डरना ये दो चीज़ों से संबंधित हैः 84
अल्लाह तआला से डरने के फलः 84
अल्लाह तआला का ज्ञान रखने वालों का डर 87
डर के अहकाम और उस विषय में चेतावनीः 88
समीक्षाः---89

विषय सूची

आमाल और व्यवहार पर भक्ति प्रभावः 90

सब से पहले. व्यक्ति पर विशेष प्रभावः------------------90
प्विन्नताः 90
नमाज़ः 90
ज़कातः 92
रोज़ा (उपवास) 94
हजः 95
2- लोगों के बीच आम प्रभाव------------------------------96
घर और परिवार मेंः 96
रिश्तेदारों और पड़ोसियों के साथः 98
काम में और सभी लोगों के साथः 98
समीक्षा --101

तीसरी बातः अल्लाह तआला को उस के नामों और उस की विशेषताओं से पहचानोः 103

और अच्छे नाम अल्लाह के लिये ही हैं,इस लिये:----- 103
क- और अच्छे नाम अल्लाह के लिये ही हैं इस का अर्थः 103
ख- " इस लिये इन नामों से अल्लाह ही को पुकारो " इस का अर्थः 104
ग- "और ऐसे लोगों से सम्बंध भी न रखो जो उस के नामों में टेढ़ापन करते हैं" इस का अर्थः 105
अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषता जानने का महत्वः--105
अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं के समझने के विषय में नियम एवं चेतावनीः-------------112
बंदे पर अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं पर ईमान लाने के प्रभावः--------------------------------114
समीक्षाः---115
वही अल्लाह है जिस के सिवाय कोई पूज्य नहीं। 116

अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं के साथ जीवनः 118

क- बेशक वह अल्लाह हैः 118
" निःसंदेह अल्लाह तआला रहमान और रहीम है "--- 118
अल्लाह तआला वह्हाब और जव्वाद है.. --------------- 119
अल्लाह ताला अलवासे है.. ------------------------------ 120
अल्लाह तआला अल वदूद है..-------------------------- 121
अल्लाह तआला अल हय्य और अल क़य्यूम है..------ 122
अल्लाह अल जब्बार है.. -------------------------------- 123
अल्लाह तआला अल जमील है .. ----------------------- 124
अल्लाह तआला,अल अलीम,अल खबीर और अल मुहीत.. है।-- 124
अल्लाह तआला अल क़रीब है..------------------------- 125
अल्लाह तआला अल मुजीब है... ----------------------- 127
अल्लाह तआला अन्नूर है..------------------------------ 128
अल्लाह तआला अल हकीम है.. ------------------------ 128
अल्लाह तआला अल मलिक अल मालिक और अल मलीक है..--- 129
अल्लाह तआला अल कुद्दूस है.. ----------------------- 130
अल्लाह तआला अस्सलाम है..-------------------------- 131
अल्लाह तआला अल हक्क़ है.. ------------------------- 132
अल्लाह तआला अल मोमिन और अल मुहैमिन है.. -- 132
अल्लाह तआला अल अफ्व,अल ग़फूर और अल ग़फ्फार है.. -- 133
अल्लाह तआला अÿाव्वाब है ..------------------------- 134
अल्लाह तआला अलवाहिद और अल अहद है..-------- 135
अल्लाह तआला अस्समद है..--------------------------- 136
अल्लाह तआला अल अज़ीज़ है.. ----------------------- 137
अल्लाह तआला अल क़ाहिर और अल क़हहार है.. ---- 138
अल्लाह तआला अर्रज़्ज़ाक़ है.. ---------------------------- 139
अल्लाह तआला अल्लतीफ है..--------------------------- 140
अल्लाह तआला अल फÿाह है.. ------------------------ 141
अल्लाह तआला अल ग़नी और अल मुग़नी है.. ------- 142
अल्लाह तआला अल मुक़ीत है..------------------------- 143
अल्लाह तआला अल हसीब और अल काफी है.. ------ 144
अल्लाह तआला अल मुबीन है.. ------------------------ 145
अल्लाह तआला अल क़दीर,अल मुक्तदिर और अल क़ादिर है..-- 146
अल्लाह तआला अल वारिस है.. ------------------------ 147
अल्लाह तआला अस्समी और अल बसीर है.. -------- 148
अल्लाह तआला अश्शाकिर और अश्शकूर है.. --------- 149
अल्लाह तआला अल हमीद(प्रशंसा के योग्य) है..------ 149
अल्लाह तआला अल मजीद,अल कबीर, अल अज़ीम और अल जलील है..--- 150
अल्लाह तआला अल अली,अल आला और अल मुतआल है.. --- 150
अल्लाह तआला अल क़ाबिज़ और अल बासित है.. --- 152
अल्लाह तआला अल मुअती(देने वाला) और अल माने(मना करने वाला) है"-------------------------- 152
ख-संसार में अल्लाह तआला के नामों का प्रभावः----- 154
समीक्षाः---159

समाप्तिः शुद्ध ईमान का निमंन्त्रण 161

निष्ठा (इख्लास) का अर्थ-------------------------------- 161
इख्लास की स्थिति (मक़ाम)ः -------------------------- 162
किस प्रकार आप मुख्लिस बन सकते हैं? -------------- 163
इख्लास के फलः-- 165
समीक्षाः---167

मेरा रब (प्रभू) अल्लाह है

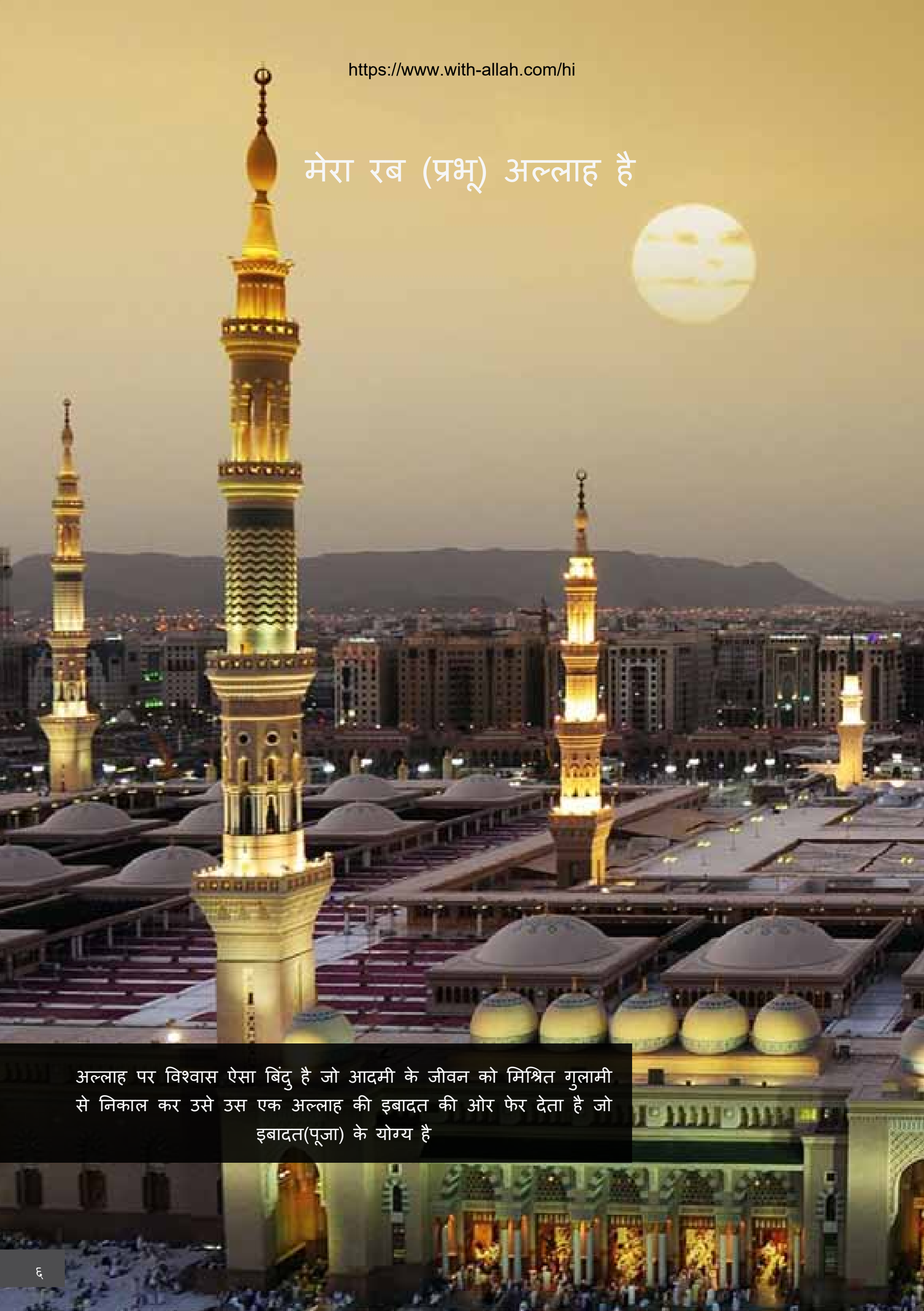

अल्लाह पर विश्वास ऐसा बिंदु है जो आदमी के जीवन को मिश्रित गुलामी से निकाल कर उसे उस एक अल्लाह की इबादत की ओर फेर देता है जो इबादत(पूजा) के योग्य है

मेरा रब (प्रभू) अल्लाह ह

जब अल्लाह तआला से विश्वास उठ जाये

अल्लाह पर विश्वास ऐसा बिंदु है जो आदमी के जीवन को मिश्रित गुलामी से निकाल कर उसे उस एक अल्लाह की इबादत की ओर फेर देता है जो इबादत(पूजा) के योग्य है

जब ईमान (विश्वास) की कुंजी अधिकतर आदमी के जीवन से गायब हो जाये तो उस का लाज़मी परिणाम तंगी और घुटन होगा जो कुछ समुदायों को इस बात की ओर उभारेगा कि वह आत्महत्या के लिये नित नये तरीकें निकालें ताकि वह तंग और घुटन वाले जीवन से छुटकारा पा सकें, संपूर्ण प्रशंसा अल्लाह तआला के लिये है कि उस ने इस्लाम की निधि (नेमत) दी और यह निधि बहुत है,और आप यह खबर भी पढ़ें

दुनिया से निकलने (मरने) का नया तरीक़ा

"फिलिप नितचेक" जो ऑस्ट्रेलिया मे दया वाली आत्महतया की ओर बुलाता है,उस का कहना है कि आत्महतया की मशीन जिसे (बाहर निकलने का बैग) कहा जाता है,और जिसे कनाडा से मेल द्वारा अनुरोध किया जाता है, देश में उस की महत्वपूर्ण बिक्री हो रही है

उस मशीन की क़ीमत 30 अमेरिकी डॉलर है,जिस के साथ प्लास्टिक से बना एक विशेष बैग आता है जिस के माध्यम से घुटन के कारण जान निकल जाती है.

"नितचेक" ने ऑस्ट्रेलिया के (ए. बी.सी) रेडियो के माध्यम से यह स्पष्ट किया कि मशीन किसी हद तक तकलीफ देने वाली है परन्तु पराण निकालने में कारगर है.

अधिक कहा कि इस का उपयोग आम है,और नितचेक कहते हैं कि मशीन, उस के विवरण और उस से सम्बंधित चीज़ों के विषय में डेली अनेक लोगों से उन की बात चीत होती है।

दूसरी ओर ब्रिटिश की एक महिला जो असबी निज़ाम (तंन्नान्निका तंन्न) को प्रभावित करने वाली बीमारी से पीड़ित थी जिस में आदमी गतिशीलता की क्षमता खो देता है,लंदन सुप्रीम कोर्ट में एक मुकदमा दायर किया ताकि उस के पति को अपनी बीवी के जीवन को समाप्त करने में सहायता की अनुमति मिल जाये।

और रेडियो लंदन के अनुसार 42 साल की "डायने पिरेटी" भी दो साल पहले इस बीमारी से पीड़ित थी, और रेडियो के अनुसार वह न्यायपालिका की सहायता लेने पर मजबूर हुयी क्योंकि अधिकारियों ने कहा कि यदि उस का पति अपनी पतनी के जीवन को समाप्त करने के लिये उस की सहायता करेगा तो पुलिस उसे गिरफतार कर सकती है। {सर्व शक्तिमान अल्लाह कहता हैः "और जो मेरी याद से मुंह फेरेगा उस का जीवन तंग रहेगा और हम क़यामत के दिन उसे अंधा करके उठायेंगे"।} [ताहाः124]

कंगाल दासों (बंदों) को अल्लाह की आवश्यकता

{हे लोगो तुम अल्लाह के भिकारी हो और अल्लाह ही बेनियाज़ तारीफ वाला है।} [फातिरः15]

ऐ मेरे बंदो..

नबी ﷺ ने हदीसे कुदसी में बयान किया कि सर्वशक्तिमान अल्लाह कहता हैः «ऐ मेरे बंदो! मैंने ज़ुल्म को अपने ऊपर हराम किया है और मैंने तुम्हारे लिये भी ज़ुल्म को हराम कर दिया है,तो तुम आपस में एक दूसरे पर अन्याय न करो, ऐ मेरे बंदो! तुम सब पथभ्रष्ट हो मगर जिस को मैं मार्ग दर्शन दूँ,अतः मुझ से मार्ग दर्शन की याचना करो मैं तुम को मार्गदर्शन दूँगा। ऐ मेरे बंदो! तुम सब भूके हो मगर जिस को मैं खाना खिलाउँ,मुझ से माँगो मैं तुम को खिलाउँगा। ऐ मेरे बंदो! तुम सब नंगे हो मगर मैं जिस को पहनाउँ,मुझ से वस्त्र मांगो मैं तुम को वस्त्र दूँगा,ऐ मेरे बंदो! तुम सब रात दिन गुनाह करते हो और मैं सब गुनाहों को क्षमा कर देता हूँ,अतः मुझ से क्षमा याचना करो मैं तुम्हें क्षमा करूँगा। ऐ मेरे बंदो! अगर तुम मुझ को हानि पहुँचाना चाहो तो मुझ को हानि नहीं पहुँचा सकते और अगर तुम मुझ को लाभ पहुँचाना चाहो तो मुझ को लाभ नहीं पहुँचा सकते। ऐ मेरे बंदो! तुम्हारे अगले तथा पिछले इन्सान और जिन्न सब के सब पविन्न दिल हो जायें तो मेरे राज्य में कुछ भी बढ़त न होगी। ऐ मेरे बंदो! तुम्हारे अगले तथा पिछले इन्सान और जिन्न सब के सब बुरे दिल वाले हो

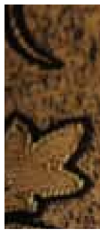

जायें तो मेरे राज्य में कुछ भी कमी न होगी। ऐ मेरे बंदो! तुम्हारे अगले तथा पिछले इन्सान और जिन्न सब के सब एक मैदान में एकत्र हो जायें और मुझ से मांगें और मैं सब को वह चीज़ दूँ जिसे वह माँग रहा है तो जो कुछ मेरे पास है उस में कोई कमी न होगी,किन्तु बस उतनी जितनी समुद्र में सूई डाल कर निकाल लेने से समुद्र के पानी में कमी आ जाती है। ऐ मेरे बंदो! यह तो तुम्हारे ही कर्म हैं जिन को मैं तुम्हारे लिये गिनता रहता हुँ फिर तुम्हें उन का पूरा पूरा अच्छा बदला दूँगा,अतः जो अच्छा बदला पाये वह अल्लाह की प्रशंसा करे और जो इस के विपरित(बुरा बदला) पाये तो वह केवल अपने आप को कोसे (मलामत) करे।» (मुस्लिम)

अल्लाह के आदेश का पालन करो वह तुम्हारी रक्षा करेगा:

अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजिअल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं कि एक दिन मैं नबी ﷺ के पीछे सवार था,आप ने फरमायाः «ऐ लड़के मैं तुम्हें कुछ बातें सिखाता हूँ, अल्लाह के आदेश का पालन करो वह तुम्हारी रक्षा करेगा,और जब मांगना तो केवल अल्लाह से मांगना और जब सहायता मांगना तो केवल उसी से मांगना। और यह विश्वाय रख कि अगर सारा संसार तुझ को लाभ पहुंचाना चाहे तो तनिक भी लाभ नहीं पहुंचा सकता मगर वही जो अल्लाह ने तेरे भाग्य में लिख दिया है। और अगर सारा संसार तुझ को हानि पहुंचाने पर तुल जाये तो वह तुझे हानि नहीं पहुंचा सकते मगर वही जो अल्लाह ने तेरे भाग्य में लिख दिया है। क़लम उठा लिये गये तथा सहीफे (भाग्य ग्रन्थ) सूख गये,(अर्थात जो कुछ भाग्य में है वह लिखा जा चुका,उस में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं होगा।» (त्रिमिज़ी).

अल्लाह सर्वशक्तिमान

अल्लाह जो महान है..प्रशंसा और इबादत के योग्य है..

सातों आकाश और धरती और जो कुछ उन में है उसी की महिमागान (तस्बीह़) करती हैं

रात और जो कुछ उस में है,दिन और प्रकट, ज़मीन और समुद्र .. हर चीज़ उस की प्रशंसा के साथ उस की महिमागान (तस्बीह़) और उस की पवित्रता (पाकीज़गी) बयान करती है। {अल्लाह तआला ने कहाः "ऐसी कोई चीज़ नहीं जो पाकीज़गी और बड़ाई के साथ उसे याद न करती हो। हाँ यह सत्य है कि तुम उस की महिमागान (तस्बीह़) समझ नहीं सकते"। [अल इस्राः44]."अल्लाह" की ज़ात सब से अधिक जानी पहचानी है उसे

पहचनवाने की आवश्यक्ता नहीं... दिलों को उस की ज़ात का ज्ञान है,उस के विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिये रूहें आजज़ी ज़ाहिर करती हैं.

"अल्लाह" की ओर दिल झुकते हैं और रूहें उस से क्षमा की आशा करती हैं और पराणी उस के वर्णन (ज़िक्र) से प्रसन्न होते हैं।

"अल्लाह" ने भारग्रस्तों (मुकल्लफ बंदों) के दिलों में टूटना, बिखरना और फितरी तौर पर मुहताजी डाल दी है जिस से बंदे को छुटकारा नहीं मगर जब बंदा सर्वशक्तिमान अल्लाह पर भरोसा करले।

"अल्लाह" उस ज़ाते इलाही का नाम है जिस में संपूर्ण अच्छी विशेषतायें पाई जाती हैं।

कंगाल बंदों (दासों) को अल्लाह की आवश्यक्ताः

बंदों पर अल्लाह की उदारता में से है कि उस ने अपनी पहचान को सरल कर दिया है।

बंदे को एक ऐसे जायपनाह (पनाह स्थल) की आवश्यक्ता है जो उसे परेशानियों में पनाह दे और बंदे को इसी हालत पर पैदा किया गया है,इस लिये वह अपने रब का हर समय और हर हाल में मुहताज है,बंदा शक्तिमान अल्लाह की प्रसन्नता की कोशिश करता है क्योंकि वह अल्लाह से मुलाक़ात करने वाला है।

जब बंदा (केवल) अल्लाह का मुहताज होता है और अपने कर्तब्य को निभाता है,और जो कुछ अल्लाह के पास है उस पर यक़ीन करता है अथवा धैर्य रखता है तो अल्लाह तअलाला उसे सृष्टि का इमाम बना देता है फिर वह ऐसा इमाम बन जाता है जिस की बात मानी जाती है। {और हम ने उन में से,चूंकि उन लोगों ने सब्र किया ऐसे अगुवा बनाये जो हमारे आदेश से लोगों की हिदायत करते थे और हमारी आयतों पर यक़ीन रखते थे"।}[अस्सज्दाः 24]

यही वजह है कि अल्लाह तआला ने धैर्य (सब्र) और यक़ीन को दीन में इमामत का कारण बना दिया है।

पैदा किये जाने वालों (मखलूक) का तअल्लुक़ सर्वशक्तिमान पैदा करने वाले के साथ जोड़ दिया गया है इसी प्रकार लोगों को इस स्थिति (कैफियत) पर पैदा किया गया है कि वह अपने ऊपर उपकार करने वाले अधिकतर प्रतिष्ठत से प्रेम करें और वह सर्वशक्तिमान अल्लाह है।

ईमान के अतिरिक्त हर एक मार्गव्यय (तोशा) खतम हो जायेगा,और अल्लाह तआला के इलावा हर एक सहायता और सहारा टूट जायेगा।

ज्ञान का सम्मान उसी स

ज्ञान का सम्मान विदित (मालूम) के सम्मान से जाना जाता है,और सर्वशक्तिमान रब,उस की विशेषताओं,उस के नामों,उस की बुद्विमत्ता (हिक्मत)और मखलूक़ पर उस के हक़ से श्रेष्ठ कोई चीज़ नहीं है,यही कारण है कि तौहीद दीन की सब से महत्वपूर्ण चीज़ है और कुरआने करीम के एक तिहाई हिस्से में स्पष्ट रूप् से तौहीद का बयान है।

और हर एक चीज़ में उस की निशानी है

अल्लाह तआला जो सर्वशक्तिमान है,उस ने अपनी पैदा की हुयी हर चीज़ में अपने वजूद अपनी एकता,पूर्णता,महिमा और महानता की निशानी रख दी है,बल्कि इन दलीलों में गौरो फिक्र करने का आदेश दिया है,और हमें बतलाया है कि यह अक्लमंदों एवं बुद्विमानों के लिये निशानियाँ हैं जो ज्ञानी,जानकार और सोच विचार करने वाले हैं।

मुनासिब होगा कि अल्लाह की किताब की कुछ आयतों पर सरसरी निगाह डालें जो अक्लमंदों और बुद्विमानों को (केवल) एक बेनियाज़ अल्लाह पर ईमान लाने की ओर बुलाती हैं।

{और यक़ीन करने वालों के लिये तो धरती में बहुत सी निशानियाँ हैं और खुद तुम्हारे अस्तित्व (वजूद) में भी,क्या तुम नहीं देखते हो"।} [अज़्ज़ारियातः20-21],

और अल्लाह तआला ने कहाः {आप कह दीजिये कि तुम ख्याल करो कि क्या-क्या चीजें आकाशों और धरती में हैं।} [यूनुसः 101],

और अल्लाह तआला ने कहाः

{निःसंदेह तुम्हारा रब अल्लाह ही है जिस ने छः दिनों में आकाशों और धरती को पैदा कर दिया फिर अर्श पर क़ायम हुआ,वह हर काम का इन्तिज़ाम करता है,उस की इजाज़त के बिना उस के पास कोई सिफारिश करने वाला नहीं,ऐसा अल्लाह तुम्हारा रब है तो तुम उस की इबादत करो,क्या तुम फिर भी नसीहत हासिल नहीं करते?तुम सब को अल्लाह ही के पास जाना है,अल्लाह ने सच्चा वादा कर रखा है,निःसंदेह वही पहली बार पैदा करता है,फिर वही दोबारा पैदा करेगा ताकि ऐसे लोगों को जो कि ईमान लाये और उन्होंने नेकी के कार्य

किये,इन्साफ के साथ बदला दे, और जिन लोगों ने कुफ्र किया उन के लिये खौलता हुआ पानी पीने को मिलेगा और दुखदायी अज़ाब होगा उन के कुफ्र के कारण,वह(अल्लाह तआला) ऐसा है जिस ने सूरज को चमकता बनाया और चाँद को रोशन बनाया और उस के लिये स्थान मुक़र्रर किये ताकि तुम सालों का हिसाब कर सको और हिसाब को जान लो अल्लाह तआला ने यह सभी चीज़ें बेकार नहीं पैदा कीं यह सबूत इन्हें साफ बता रहा है जो अक्ल रखते हैं,बेशक रात -दिन के एक दूसरे के बाद आने में और अल्लाह तआला ने आकाश और धरती में जो कुछ पैदा कर रखा है उन सब में उन लोगों के लिये सबूत हैं जो अल्लाह का डर रखते हैं"।}[यूनुसः 3-6],

और अल्लाह तआला ने कहाः {बेशक आसमानों और ज़मीन के बनाने में और रात-दिन के हेर-फेर में यक़ीनन अक्ल वालों के लिये निशानियाँ हैं,जो अल्लाह (तआला) का ज़िक्र खडे,बैठे और अपनी करवटों पर लेटे हुये करते हैं और आसमानों और ज़मीन की पैदाइश पर विचार करते हैं (और कहते हैं) कि हे हमारे रब! तू ने यह सब बिना फायदे के नहीं बनाया,तू पाक है,बस तू हमें आग के अज़ाब से बचा ले"।}[आले इमरानः 190-191],

और अल्लाह तआला ने कहाः {और खुद तुम्हारे जन्म में और जानवरों को फैलाने में यक़ीन रखने वाले समुदाय (क़ौम) के लिये बहुत सी निशानियाँ हैं"।}[अल जासियाः 4]

और अल्लाह तआला ने कहाः {क्या उन्हों ने धरती में सैर करके नहीं देखा जो उन के दिल इन बातों को समझते या कानों से ही इन (घटनाओं) को सुन लेते"।}[अल हज्जः 46],

और अल्लाह तआला ने कहाः {क्या उन्हों ने आकाश को अपने ऊपर नहीं देखा कि हम ने उसे किस प्रकार बनाया है और उसे शोभा दी है? उस में कोई दरार नहीं"।}[क़ाफः 6],

और अल्लाह तआला ने फरमायाः {यह है पैदाइश अल्लाह की जिस ने हर चीज़ को मज़बूत बनाया है"।}[अन्नमलः 88],

और अल्लाह तआला ने कहाः {बेशक इस में अक्लमंदों के लिये बहुत सी निशानियाँ हैं"।}[ताहाः 54].

समीक्षा

1. अगर लोगों के जीवन से ईमान ग़ायब हो जाये तो क्या होगा?

2. क्या अल्लाह तआला अपने बंदों की इबादत या उन के क्षमा माँगने का मुहताज है?

3- बंदे किन किन चीज़ों में अल्लाह के मुहताज हैं? और इस के क्या प्रमाण हैं?

4- अल्लाह तआला की वह निशानी जिसे आप अपने जीवन में देख रहे हैं और उस ने आप को अधिकतर प्रभावित किया हो बयान करें ?

https://www.with-allah.com/hi

अल्लाह पर ईमान

सच्चे ईमान में रूहों का जीवन और अधिक प्रसन्नतायें हैं

अल्लाह पर ईमान

अल्लाह पर ईमान का अर्थ और उस की वास्तविकता (हक़ीक़त):

सच्चे ईमान में रूहों का जीवन और अधिक प्रसन्नतायें हैं

सर्वशक्तिमान अल्लाह पर ईमान लाने में ही आत्मा (रूह) की खुशी है,ईमान न लाने वाली आत्मा डरी हुयी भटकी और कमज़ोर रहती है जिसे स्थिरता प्राप्त नहीं होती,और अल्लाह पर ईमान लाने में ही मुक्ति (निजात) है,इस का अर्थ है: सच्चा विश्वास रखना कि अल्लाह तआला ही हर चीज़ का रब,बादशाह और पैदा करने वाला है, वही इस बात का हक़दार है कि संपूर्ण इबादतें जैसे नमाज़, रोज़ा, दुआ, आशा,डर,हीनता (ज़िल्लत) नम्रता उसी के योग्य हैं,और उस में संपूर्ण विशेषतायें पाई जाती हैं,वह सर्वशक्तिमान अल्लाह हर दोष और हर कमी से पवित्र है।

और अल्लाह पर ईमान लाने में यह भी शामिल है कि उस के फरिशतों,उस की किताबों,उस के संदेशवाहकों,प्रलोक और तक़्दीर की अच्छाई और बुराई पर ईमान लाया जाये,और इसी प्रकार ईमान में सही मानव की खुशी है,बल्कि यही मोमिन की दुनियावी स्वर्ग (जन्नत) है और यदि अल्लाह ने चाहा तो उसे मरने के बाद स्वर्ग मिलेगा।

"शरीअत में ईमान कहते हैं: दिल से विश्वास रखने,ज़ुबान से इक़रार करने और शरीर के अंगों (आज़ा) से अमल करने को,ईमान आज्ञाकारित (इताअत) से बढ़ता है और पाप करने से घटता है। ".

जब इस का ज्ञान हो गया तो जानना चाहिये कि कर्म (अमल) के स्वीकार्य का आधार ईमान ही है अल्लाह तआला के फरमान की वजह से: {जो नेक काम करे और वह मोमिन (एकेश्वरवादी) भी हो"।}[अल हज्जः 94].

अल्लाह पर ईमान लाना न्याय, आज़ादी, ज्ञान, मार्गदर्शन,शान्ति और रूहानी सुरक्षा का नूर है।

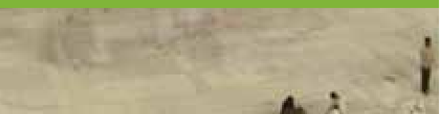

ईमान का महत्व

निःसंदेह सर्वश्रेष्ठ और अधिक पवित्र काम अल्लाह के समीप अल्लाह पर ईमान लाना है अबूज़र की हदीस की वजह से जिस में उन्होंने नबी ﷺ से पूछाः «ऐ अल्लाह के रसूल! कौन सा अमल सर्वश्रेष्ठ है? आप ﷺ ने फरमायाः अल्लाह पर ईमान लाना और उस के मार्ग में जिहाद करना» (मुस्लिम).

यह मार्गदर्शन,और दुनियावी एवं बाद में आने वाली ज़िन्दगी (प्रलोक) की खुशी का कारण है,सर्वशक्तिमान अल्लाह के फरमान की वजह सेः {जिस को अल्लाह सच्चा रास्ता दिखाना चाहता है उस के सीने को इस्लाम के लिये खोल देता है"।}[अलअन्आमः125].

और ईमान मोमिन को गुनाह से रोकता है, सर्वशक्तिमान अल्लाह के फरमान की वजह सेः {बेशक जो लोग (अल्लाह से) डरते हैं जब उन को कोई शक शैतान की तरफ से आ जाता है तो वह याद में लग जाते हैं इस लिये अचानक उन की आँखें खुल जाती हैं"।}[अलआराफः201].

अमल स्वीकार्य होने के लिये ईमान शर्त है, अल्लाह तआला ने फरमायाः {और बेशक तेरी तरफ भी और तुझ से पहले (के सभी नबियों) की तरफ भी वह्य की गई है कि अगर तू ने शिर्क किया तो बेशक तेरा अमल बर्बाद हो जायेगा और निश्चित रूप से तू नुक़्सान उठाने वालों में से हो जायेगा"।}[अज़्ज़ुमरः65].

शुद्व ईमान के कारण अल्लाह तआला अमल को बरकत वाला बनाता है और दुआओं को क़बूल करता है। {और बेशक तेरी तरफ भी और तुझ से पहले (के सभी नबियों) की तरफ भी वह्य की गई है कि अगर तू ने शिर्क किया तो बेशक तेरा अमल बर्बाद हो जायेगा और निश्चित रूप से तू नुक़्सान उठाने वालों में से हो जायेगा"।} [अज़्ज़ुमरः65].

ईमान के फल

अल्लाह तआला फरमाता हैः {क्या आप ने नहीं देखा कि अल्लाह (तआला) ने पाक बात की मिसाल(उदाहरण)एक पविन्न पेड़ जैसा बयान किया जिस की जड़ मज़बूत है और जिस की शाखायें आकाश में हैं,जो अपने रब के आदेश से हर समय अपने फल लाता है"।}[इब्राहीमः24-25].

ईमान के फल निम्न लिखित हैं:

1- सच्चा ईमान सूकून,मनोवैज्ञानिक आराम और तसल्ली प्रदान करता है,और इस पर अल्लाह तआला का यह कथन फिट बैठता है: {याद रखो कि अल्लाह के मिन्नों पर न कोई डर है न वे दुखी होते हैं"।}[यूनुस:62].

2- मोमिनों को अल्लाह तआला की खास संगति प्राप्त होती है,अर्थात वह उन को कुफ्र के अंधेरे और उस के परिणाम से निकाल कर ईमान की रोशनी और उस के सवाब की ओर ले जाता है।

3- अल्लाह की प्रसन्नता और उस स्वर्ग का पाना जिसे अल्लाह तआला ने उस व्यक्ति के लिये तय्यार की है जो ईमान लाये और उस की पुष्टि करे,सर्वशक्तिमान अल्लाह ने कहा: {इन ईमानदार मर्दो और औरतों से अल्लाह (तआला) ने उन जन्नतों का वादा किया है जिन के नीचे नहरें बह रही हैं,जहां वे हमेशा रहने वाले हैं और उन पाकीज़ा घर का जो उन खत्म न होने वाले जन्नत में हैं और अल्लाह की खुशी है"।}[अत्तोबा:72].

4-अल्लाह तआला का अपने मिन्नों,अपनी पार्टी और अपने मोमिन बंदो का बचाव करना: {बेशक अल्लाह (तआला) ईमान वालों के दुश्मनों को खुद हटा देता है"।}[अल हज्ज:38].

उदाहरण के तौर पर: अल्लाह तआला का अपने नबी मुहम्मद ﷺ का उन की हिज्रत के समय बचाव करना और सर्वशक्तिमान अल्लाह तआला का खलील इब्राहीम عليه السلام का बचाव करना उस समय जब उन्हें आग में डाल दिया गया था।

5- दीन में महानता और इमामत प्राप्त होती है, सर्वशक्तिमान अल्लाह ने कहा: {और हम ने उन में से चूंकि उन लोगों ने सब्र किया,ऐसे अगुवा बनाये जो हमारे आदेश से लोगों की हिदायत करते थे"।}[अस्सज्दा:24].दीनदार और अल्लाह पर यक़ीन करने वाले इस की जीवित मिसाल(उदाहरण) हैं,अल्लाह तआला ने उन की याद और उन के कारनामों को सदा के लिये बाक़ी रखा जब कि वे ज़मीन के तह में दफन हैं,वे हम में नहीं हैं पर उन के प्रभाव और उन की खबरें जीवन में मौजूद हैं।

अल्लाह पर ईमान लाना कमज़ोर व्यक्ति और उस के रब के बीच सम्बंध है जबकि शक्तिमान व्यक्ति अपनी शक्ति को उसी (अल्लाह) से प्राप्त करता है।

6- अल्लाह तआला का मोमिनों से प्रेम करना, अल्लाह तआला ने कहाः {वे अल्लाह के प्यारे होंगे और वे भी अल्लाह से प्यार करते होंगे"।} [अलमायदाः54].

और फरमायाः {बेशक जो ईमान लाये हैं और जिन्होंने नेक अमल किये हैं उन के लिये अल्लाह रहमान मुहब्बत पैदा कर देगा"।}[मरयमः96].

7- लोक प्रलोक में अच्छा जीवन, सर्वशक्तिमान अल्लाह ने कहाः {जो इंसान नेकी के काम करे मर्द हो या औरत और वह ईमान वाला हो तो हम उसे बेशक सब से अच्छी ज़िन्दगी देंगे और उन के नेकी के कामों का अच्छा बदला भी उन्हें ज़रूर देंगे"।}

[अन्नहलः97]. तो अच्छे जीवन और खुशी ढूँडने वाले कहाँ हैं?!!

बिना ईमान के जीवन अपरिहार्य मरना है..
बिना ईमान के आँख अंधी है..
बिना ईमान के ज़ुबान गूँगी है..
बिना ईमान के हाथ पंगु (शल) है..

8- अल्लाह की मुहब्बत मोमिन के लिये है और मोमिन की मुहब्बत अल्लाह के लिये, सर्वशक्तिमान अल्लाह फरमाता हैः {यह अल्लाह के प्यारे होंगे और वे भी अल्लाह से प्यार करते होंगे"।}[अलमायदाः54].

अर्थात वह उन से प्रेम करता है और लोगों के दिलों में उन के लिये प्रेम डाल देता है.

9- अल्लाह तआला की गरिमा से मोमिनों के लिये शुभसमाचार का प्राप्त होना है,सर्वशक्तिमान अल्लाह फरमाता हैः {और ईमान वालों को खुशखबरी सुना दीजिये"।}[अत्तोबाः112].

और शुभसमाचार महान चीज़ के कारण ही होता है जिस का प्रभाव त्वचा पर पड़ता है, इसी कारण इसे शुभसमाचार कहा जाता है,और सर्वशक्तिमान अल्लाह की दया,उस की प्रसन्नता,उस के स्वर्ग से अधिक बड़ी चीज़ कुछ भी नहीं हो सकती, सर्वशक्तिमान अल्लाह फरमाता हैः {और ईमान वालों और नेक काम करने वालों को उन स्वर्गों की खुशखबरी दो जिन के नीचे नहरें बह रही हैं"।}[अलबक़राः25].

10- ईमान स्थिरता का कारण है, सर्वशक्तिमान अल्लाह फरमाता हैः {जिन से लोगों ने कहा कि लोग तुम्हारे लिये जमा हो चुके हैं इस लिये उन से डरो तो उन का ईमान बढ़ गया और कहा कि अल्ला हमारे लिये बस है वह सब से अच्छा संरक्षक(वली) है"।}[आले इमरानः173].

संदेशवाहकों,सहाबा,ताबईन और उन के अनुयायियों का बलिदान इस स्थिरता का सबूत है।

11- उपदेश से लाभ उठाना, सर्वशक्तिमान अल्लाह फरमाता हैः {और शिक्षा (नसीहत) देते रहें बेशक यह शिक्षा ईमान वालों को लाभ पहुंचायेगी"।}[अज़्ज़ारियातः55].

ईमान वाले ही वाज़ो नसीहत से लाभ उठाते हैं.

मोमिन के लिये हर हाल में भलाई रख दी गई है कुशादगी और तंगी दोनों हाल में खैर मोमिन के संग होता है,अल्लाह के रसूल ﷺ ने कहा: «मोमिन की दशा कितनी अच्छी है कि उस के सब कार्य उस के लिये भलाई के कार्य हैं,यह विशेषता केवल मोमिन को ही प्राप्त है कि जब उसे कोई खुशी पहुंचती है तो वह शुक्र अदा करता है, यह उस के लिये अच्छा है तथा जब कष्ट पहुंचता है तो वह सब्र करता है तो यह भी उस के लिये अच्छा है।» (मुस्लिम),

ईमान मोमिन को कष्ट में सब्र और खुशी में शुक्र पर उभारता है।

13- बड़े पाप (गुनाह) में पड़ने से हिफाज़त,नबी ﷺ की सही हदीस में आया है: «व्यभिचारी (ज़िनाकार) व्यभिचार करने की हालत में मोमिन नहीं रहता».. (बुखारी).

यह महान ईमान के महान फल हैं,खुशी, मन की शान्ति,और सूकून चैन ढूँडने वाले कहाँ हैं?

ईमान के प्रभावः

मेमिन के जीवन में ईमान के प्रभावः

मेमिन के जीवन में ईमान के प्रभावः {ईमान वालों का कहना तो यह है कि जब उन्हें इस लिये बुलाया जाता है कि अल्लाह और उस का रसूल उन में फैसला करदे तो वह कहते हैं कि हमने सुना और मान लिया,यही लोग कामयाब होने वाले हैं"।}[अन्नूरः51].ईमान मोमिन को अल्लाह के आदेश का पालन और उस की ताबेदारी करने में जल्दी करने पर उभारता है।

अल्लाह पर ईमान लाना जीवन है और अल्लाह के साथ जीवन ईमान है.

अल्लाह तआला फरमाता हैः {तो क़सम है तेरे रब की यह (तब तक) ईमान वाले नहीं हो सकते जब तक कि सभी आपस के इख्तिलाफ में आप को फैसला करने वाला न कुबूल कर लें,फिर जो फैसला आप कर दें उन से अपने दिलों में ज़रा भी तंगी और नाखुशी न पायें और फरमाँबरदार की तरह कुबूल कर लें"।}[अन्निसाः65].

बल्कि ईमान मोमिन को स्वीकरण और अल्लाह के आदेश से संतुष्टि होने पर उभारता है।

2- अल्लाह तआला का स्पष्ट और गुप्त दोनों प्रकार के शिर्क से अपने बंदे का बचाव,अर्थात अल्लाह के अतिरिक्त से न तो दुआ करना न ही उस से सहायता या दुहाई माँगना,क्योंकि सर्वशक्तिमान अल्लाह ही लाभ और हानि का मालिक हैः {और अगर अल्लाह (तआला) तुझ को कोई तक्लीफ दे तो उस को दूर करने वाला अल्लाह तआला के सिवाय कोई दूसरा नहीं है"।} [अलअन्आमः17].

3-अल्लाह तआला के लिये प्रेम और उसी के लिये घृणा करना,और यही ईमान की शक्तिशाली कड़ी है, सर्वशक्तिमान अल्लाह फरमाता हैः {सभी मुसलमान भाई भाई हैं"।}[अल हुज्ज्रातः10].

इस का सब से अच्छा उदाहरण अन्सार का मुहाजिरीन को अपना भाई बनाना और अपने भाइयों के लिये धन और पराण की कुरबानी देना है,निर्दोष मुहम्मद ﷺ ने कहाः «तुम में से कोई व्यक्ति मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि वह अपने भाई के लिये वही न पसंद करे जो अपने लिये पसंद करता है» (बुखारी).

"ऐ ईमान वालो! (पूरे तौर पर) मोमिन बन जाओ"। ईमान के महान स्थान के कारण मोमिनों को उस की ओर बुलाना और उन्हें इस पर उभारना.

4- अल्लाह के मार्ग में जिहाद करने पर सब्र करना,और प्रिय और उत्तम चीज़ खर्च करना ताकि अल्लाह तआला प्रसन्न हो जाये,अल्लाह तआला फरमाता हैः {ईमान वाले तो वह हैं जो अल्लाह पर और उस के रसूल पर (मज़बूत) ईमान लायें,फिर शंका-संदेह न करें और अपने माल से और अपनी जान से अल्लाह के रास्ते में धर्मयुद्व (जिहाद) करते रहें,यही लोग सच्चे हैं"।}[अल हुज्रातः15].

5- अल्लाह,उस के वादों,और जो कुछ उस के पास है उस से दिल का जुड़ना अथवा उस से प्रसन्न होना,उस के लिये,अल्लाह पर ईमान लाना और उस की बंदगी करना मोमिन के लिये स्वर्ग समान है, और वह प्रलोक के स्वर्ग की आशा रखता है जिस का वादा अल्लाह तआला ने उस से कर रखा है,बल्कि मोमिन को जो भी थकावट,बीमारी और परेशानी पहुँचती है उस पर वह अल्लाह से सवाब और अपने आमाल की किताब में लिखे जाने की उम्मीद रखता है, अल्लाह तआला फरमाता हैः {मदीना और उस के आस पास गाँव वालों के लिये ठीक न था कि रसूलुल्लाह का साथ छोड़ कर पीछे रह जायें न यह कि अपनी जान को उन की जान से ज़्यादा प्यारा समझें,यह इस कारण कि उन को अल्लाह की राह में जो प्यास लगी और जो थकान पहुँची और जो भूक लगी और जो चलना चले,जो काफिरों के लिये क्रोध का कारण बना हो,और दुश्मनों की जो कुछ खबर ली,उन सब पर उन के नाम नेक काम लिखा गया,बेशक अल्लाह तआला नेकों का बदला बरबाद नहीं करता,और जो भी छोटा और बड़ा उन्होंने खर्च किया और जितने मैदान उन को पार करने पड़े,यह सब भी उन के नाम लिखा गया ताकि अल्लाह उन के कामों का अच्छे से अच्छा बदला अता करें"।}[अत्तोबाः120-121].

यह सब अल्लाह तआला पर ईमान और उस के मामले में सत्य अपनाने वालों के लिये है.

6- अल्लाह और उस के रसूल की विलायत का प्राप्त होना, अल्लाह तआला फरमाता हैः {तुम्हारा दोस्त खुद अल्लाह,उस के रसूल और ईमान लाने वाले हैं"}[अल माइदाः55].

अल्लाह की दोस्ती का अर्थ, अर्थात अल्लाह तअला से मुहब्बत, उस के दीन की मदद,उस के दोस्तों से प्रेम करना है और जो इस के विपरित हैं उस से मुक्ति होना है, क्योंकि वे अल्लाह के दुश्मन हैं,सर्वशक्तिमान अल्लाह कहता हैः {अल्लाह पर और क़यामत के दिन पर ईमान रखने वालों को आप अल्लाह और उस के रसूल के विरोधियों से प्रेम करते हुये कभी नहीं पायेंगे चाहे वे उन के पिता या उन के पुत्न या उन के भाई या उन के सम्बन्धी ही क्यों न हों,यही लोग हैं जिन के दिल में अल्लाह ने ईमान लिख दिया है और जिनकी पुष्टि अपनी आत्मा (रूह) से की है और जिन को उन स्वर्गों में प्रवेश (दाखिला) देगा जिन के नीचे पानी की नहरें बह रही हैं,जहाँ यह हमेशा रहेंगे,अल्लाह उन से खुश है और यह अल्लाह से खुश हैं, यह अल्लाह की सेना है,जान लो कि बेशक अल्लाह के गिरोह वाले ही कामयाब लोग हैं"।}[अल मुजादलाः22].

बल्कि मोमिन तो अल्लाह, उस के मैसेंजर, और मोमिनों को दोस्त रखता है, और वह काफिरों को बिल्कुल दोस्त नहीं रखता, सर्वशक्तिमान अल्लाह कहता हैः {मोमिनों को चाहिये कि ईमान वालों को छोड़ कर काफिरों को अपना दोस्त न बनायें"।}[आले इमरानः28].

7- अच्छे आचार की प्राप्ति,नबी ﷺ से साबित है आप ने फरमायाः

4- अल्लाह के मार्ग में जिहाद करने पर सब्र करना,और प्रिय और उत्तम चीज़ खर्च करना ताकि अल्लाह तआला प्रसन्न हो जाये,अल्लाह तआला फरमाता हैः {ईमान वाले तो वह हैं जो अल्लाह पर और उस के रसूल पर (मज़बूत) ईमान लायें,फिर शंका-संदेह न करें और अपने माल से और अपनी जान से अल्लाह के रास्ते में धर्मयुद्व (जिहाद) करते रहें,यही लोग सच्चे हैं"।}[अल हुज्रात:15].

और लज्जा महानतम स्वभाव में से है,मोमिन अपने भाइयों के संग अपने स्वभाव को अच्छा करता है ताकि सांसारिक जीवन के आनंद में कोई समस्या कोई विभेद और कोई झगड़ा न हो...यह सारी बातें इस लिये क्योंकि यह मोमिन है और यह विशेषतायें मोमिन के लिये खास हैं.

8- सच्चा सुख और मनोवैज्ञानिक आराम यह ऐसी चीज़ है जिस के कारण वह महसूस करता है कि उसे दुनियावी जन्नत में प्रसन्नता (खुशी) और मनोशांति मिल रही है, क्योंकि उस का रब एक है और वह सर्वशक्तिमान अल्लाह है,उस के नबी एक हैं और वह मुहम्मद ﷺ बिन अब्दुल्लाह हैं,उस का मन्हज एक है और वह है अल्लाह की प्रसन्नता की प्राप्ति और उस का लक्ष्य (हदफ) एक है और वह स्वर्ग है जिस की चैड़ाई आकाशों और पृथ्वी के समान है.

और जब आप दायें और बायें देखें और आप को दिखे कि मनोरोग क्लीनिक रोगियों से भरा पड़ा है, और आप को शिकायतें,चिंतायें संकट,अनिद्रा,नींद की कमी,चिंतन,डर और बुरे सपने सुनाई दें तो आप अच्छी तरह जान लें कि यह सब सर्वशक्तिमान अल्लाह पर ईमान से दूरी और दुनिया से अधिक रिश्ता

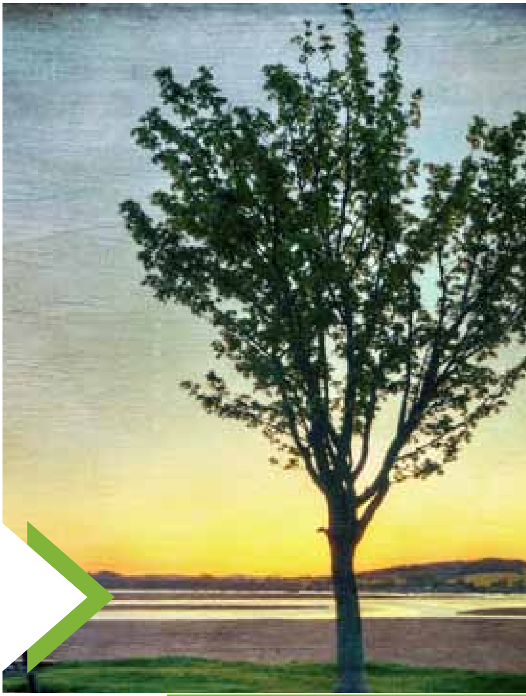

नाता जोड़ने के कारण है,भौतिकवाद रूहानी पहलू पर भारी पड़ रहा है, और रूहानी पहलू को संतुष्ट करने के लिये मानव को अधिक अवश्यक्ता है, और यह चीज़ बिना सर्वशक्तिमान अल्लाह पर ईमान,उस के संग तअल्लुक़ जोड़ने, सदा उस का ज़िक्र करने,फरिश्तों,(आसमानी) किताबों,संदेश्वाहकों,प्रलोक और अच्छी,बुरी,मीठी कड़वी तक़्दीर पर ईमान लाने के बिना प्राप्त नहीं हो सक्ता।

महत्वपूर्ण यह है कि अधिकतर लोग दिल की दवा,और दिली सुकून से ग़ाफिल हैं,वे दुनिया की जन्नत से ग़ाफिल हो कर खतम होने वाली दुनिया के मलबे के पीछे पडे हुये हैं,न तो यह लोग वह कर सकते हैं जिसे चाहते हैं और न ही पहले रास्ते पर चल कर इन्हें आराम मिल पा रहा है.

और रूहानी सुकून ईमान के बिना नहीं मिल सकता, क्योंकि आत्मा अल्लाह की ओर से है और शरीर को अल्लाह तआला ने मिट्टी से बनाया है,पस जब जब रूहानी पहलू को संतुष्टि प्राप्त होगी तो आप का नफ्स ऊँचाई की ओर बढ़ेगा,परवान चढ़ेगा,उसे शान्ति मिलेगी और वह तुच्छ चीज़ों की परवाह नहीं करेगा,और जब जब रूहानी पहलू में कमी होगी आप का नफ्स कामज हैवानी फित्रत की और लुढ़क जायेगा और उस की तंगी अथवा परेशानी बढ़ जायेगी, और स्वयं उस की निगाह में दुनिया अंधेरी हो जायेगी।

अल्लाह का परिचय कराने वाले रसूलों पर ईमानः

अल्लाह तआला ने अपने बंदों को बेकार नहीं पैदा किया और न उन्हें व्यर्थ छोड़ा,इसी कारण उन के पास ऐसे संदेष्टा भेजे जिन्होंने अल्लाह तआला की शक्तियों,उस की पूर्णता और उस की शरीअत का परिचय करवाया,और अल्लाह तआला ने सर्वोत्तम इंसानों को भेजा,जिन में से अधिक रसूल भेजे जैसे नूह,इब्राहीम,मूसा,ईसा अलैहिमुस्सलाम,और ईशदौत्य(रिसालत)को सर्वश्रेष्ठ संदेष्टा मुहम्मद ﷺ के ज़रिये पूरा किया,और संदेशवाहकों को वह सब निशानियाँ (मोजज़ात) दीं जो उन की सच्चाई को प्रमाणित करती हैं,उन्होंने अमानत की तब्लीग़ की,ईशदौत्य (अल्लाह के पैग़ाम) को पहुँचाया और लोगों को उन के रब और पैदा करने वाले से परिचय करवाया,इस लिये जिस ने इन की ईशदौत्य और उन की सत्यता को नहीं स्वीकारा उस ने अल्लाह को भी नहीं स्वीकारा,अल्लाह तआला ने फरमायाः {रसूल उस चीज़ पर ईमान लाये जो उस की तरफ अल्लाह (तआला) की ओर से उतारी गयी और मुसलमान भी ईमान लाये,यह सब अल्लाह (तआला) और उस के फरिश्तों पर और उस की किताबों पर और उस के रसूलों पर ईमान लाये"।}[अल बक़रा:285].

तो सब के सब नबी और रसूल अल्लाह की ओर से भेजे गये, हम उन सब पर ईमान लाते हैं,अल्लाह तआला ने फरमायाः {उस के रसूलों में से किसी के बीच हम फर्क़ नहीं करते।}[अल बक़रा:285].

और अल्लाह तआला ने रसूलों पर किताबें उतारीं ताकी वह मानव के लिये रोशनी बनें अर्थात उन की मार्गदर्शक कर सकें,इब्राहीम को सहीफे दिये गये,दाऊद को ज़बूर,मूसा को तौरात,ईसा का इंजील अलैहिमुस्सलाम, और मुहम्मद ﷺ को मोजज़ाती किताब क़ुरआन दिया, अल्लाह तआला ने फरमायाः

{यह एक ऐसी किताब है कि इस की आयतें मज़बूत की गयी हैं फिर मुफस्सल बयान की गई हैं एक हिक्मत वाले पूर्णज्ञान वाले की ओर से"।}[हूद:1].

और अल्लाह तआला ने इसे मार्गदर्शन,प्रकाश,अधिकता(बरकत वाला)और प्रमाण बनाया,अल्लाह तआला ने फरमायाः {और यह (पाक क़ुरआन) एक मुबारक किताब है जिसे हम ने उतारा,इस लिये कि तुम इस की इत्तेबा करो और अल्लाह से डरो ताकि तुम पर दया की जाये"।}[अल अनआम:155].

एवं अल्लाह तआला ने फरमायाः {ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की तरफ से दलील आ चुकी है और हम ने तुम्हारी तरफ वाज़ेह और साफ नूर (पाक क़ुरआन) उतार दिया है"।[अल निसा:174].

और अल्लाह तआला ने अंतिम नबी व रसूल और इंसानों में सब से सर्वश्रेष्ठ मुहम्मद ﷺ और उन की रिसालत पर ईमान को कलमये शहादत (أَشْـهَدُ أَن لَّا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَأَشْـهَدُ أَنَّ مُحَـمَّدًا رَسُـولُ اللهِ) में सर्वशक्तिमान अल्लाह पर ईमान लाने के संग जोड़ दिया है,अल्लाह तआला ने आप को दयालू

बना कर भेजा,आप ने लोगों को अंधेरों से रोशनी,जेहालत से ज्ञान और गुमराही से हिदायत की ओर बुलाया,आप ने न्यास (अमानत) को पहुँचाया,उम्मत की शुभचिन्ता की और आप ﷺ को अपनी उम्मत की अधिक चिन्ता रहती थी,

अल्लाह तआला ने फरमायाः {तुम्हारे पास एक ऐसे पैग़म्बर आये हैं जो तुम्हारी ही जाति से हैं जिन को तुम्हारे नुक़्सान की बातें बहुत भारी लगती हैं,जो तुम्हारे फायदे के बड़े इच्छुक रहते हैं,ईमान वालों के लिये बहुत ही शफीक़ दयालू हैं"।}[अत्तौबाः128].

और अल्लाह तआला ने अपने नबी और रसूल ﷺ को उन के योग्य अनुसार अधिकार दिये आप इंसानों में सब से सर्वश्रेष्ठ और उन के सरदार थे,आप ﷺ ने फरमायाः «मैं आदम की अवलाद का सरदार हूँ और इस में कोई गर्व की बात नहीं» (इब्ने माजा)

और नबी ﷺ के अधिकार (हुकूक) में सेः

1- इस बात पर ईमान लाना है कि आप अल्लाह के बंदे और उस के रसूल हैं और अल्लाह तआला ने आप को संसार वालों के लिये दया (रहमत) बना कर भेजा है आप ने न्यास (अमानत) को पहुँचाया, ईशदौत्य की तब्लीग़ की अल्लाह तआला ने फरमायाः {तो तुम अल्लाह पर और उस के रसूल पर और उस ज्योति (नूर) पर जिसे हम ने उतारा है ईमान लाओ"।}[अत्तग़ाबुनः8].

और नबी ﷺ ने फरमायाः «उस ज़ात की क़सम जिस के हाथ में मुहम्मद की जान है,मेरे विषय में कोई भी इस उम्मत का आदमी चाहे वह यहूदी हो या ईसाई सुने फिर वह मर जाये और मेरी लायी हुई चीज़ पर ईमान न लाये तो वह नरक में जायेगा।» (मुस्लिम).

2- जो चीज़ें आप को अल्लाह की ओर से मिली हैं उस का अनुसमर्थन(तस्दीक़) और क़बूल करना और इस बात का विश्वास रखना कि यही सत्य है निःसंदेह आप ने इसे अल्लाह तआला की ओर से पहुँचाया है,अल्लाह तआला ने फरमायाः {ईमान वाले तो वे हैं जो अल्लाह पर और उस के रसूल पर ईमान लायें फिर शंका- संदेह न करें"।}[अलहुज्रातः15].

और अल्लाह तआला ने फरमायाः {तो क़सम है तेरे रब की यह ईमान वाले नहीं हो सकते जब तक के सभी आपस के इख़्तिलाफ में आप को फैसला करने वाला न कुबूल करलें,फिर जो फैसला आप करदें उन से अपने दिलों में ज़रा भी तंगी और नाखुशी न पायें और फरमाँबरदार की तरह कुबूल करलें"।}[अन्निसाः65].

3- नबी ﷺ से प्रेम करना,अल्लाह तआला ने फरमायाः {कह दीजिये कि अगर तुम्हारे बाप तुम्हारे बेटे और तुम्हारे भाई और तुम्हारी बीवियाँ और तुम्हारे वंश और कमाया हुवा धन और यह तिजारत जिस की कमी से तुम डरते हो,और वे घर जिन्हें तुम प्यारा रखते हो (अगर) यह तुम्हें अल्लाह और उस के रसूल और अल्लाह की राह में जिहाद से अधिक प्यारे हैं तो तुम इन्तेज़ार करो कि अल्लाह तआला अपना अज़ाब ले आये,अल्लाह तआला फासिक़ो को रास्ता नहीं दिखाता है"।}[अत्तोबाः24].

और नबी ﷺ ने फरमायाः «तुम में का कोई व्यक्ति उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उस के निकट उस के पिता उस की संतान,और संपूर्ण लोगों से अधिक प्रिय न हो जाऊँ।» (बुखारी).

4- आप की आदर व सम्मान एवं प्रतिष्ठा करना,अल्लाह तआला ने फरमायाः {ताकि तुम अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान लाओ और उस की सहायता एवं सम्मान करो"।}[अल फत्हः9].

और अल्लाह तआला ने फरमायाः {जो लोग इस नबी पर ईमान लाये और उन की ताईद की,उन की सहायता की,और उस नूर की इत्तैबा की जो उन के साथ भेजा गया है,ऐसे लोग पूरी कामयाबी हासिल करने वाले हैं"।}[अल आराफः157].

5- नबी ﷺ के वह घर वाले जो इस्लाम लाये,आप की सुन्नत को अपनाया उन से प्रेम करना, उन से लगाव रखना और उन की इज़्ज़त करना, और हमारे नबी मुहम्मद ﷺ की वसिय्यत को समझना,जब कि आप ने फरमायाः «मैं अपने घर वालों के बारे में तुम्हें अल्लाह का खौफ याद दिलाता हूँ, मैं अपने घर वालों के बारे में तुम्हें अल्लाह का खौफ याद दिलाता हूँ, मैं अपने घर वालों के बारे में तुम्हें अल्लाह का खौफ याद दिलाता हूँ» (मुस्लिम)

और आले बैते रसूल अर्थात नबी ﷺ के घर वाले लोगों में सब से श्रेष्ठ हैं जैसे आप की बीवियाँ,आप की अवलाद और आप के वह रिश्तेदार जिन पर सदक़ा का माल हराम है,इन की तौहीन करना,इन्हें बुरा भला कहना जायज़ नहीं है जैसा कि उन्हें गुनाहों से मासूम समझना या अल्लाह को छोड़ कर उन को पुकारना नाजायज़ है।

6- आप ﷺ के वह सहाबा जो आप पर ईमान लाये और आप की तस्दीक़ की उन से प्रेम करना,और उन के अन्दर कमी न ढूँडना क्योंकि अल्लाह तआला ने उन की तारीफ की है।

7- आप ﷺ के वह सहाबा जिन्हों ने आप की तस्दीक़ की,आप पर ईमान लाये उन के जीवन चरिन्न में बुराई न ढूँडना क्योंकि यह उन लोगों में से हैं जिन की अल्लाह तआला ने तारीफ की है,फरमायाः {मोहम्मद अल्लाह के रसूल हैं और जो लोग उन के साथ हैं काफिरों पर कठोर हैं आपस में रहम दिल हैं तू उन्हें देखेगा कि रूकू और सज्दे कर रहे हैं,अल्लाह की कृपा और खुशी की कामना में हैं,उन का निशान उन के मुँह पर सज्दों के असर से है।}[अल फत्हः29].

और नबी ﷺ ने उन के बारे में कहाः «मेरे सहाबा को गाली मत दो, मेरे सहाबा को गाली मत दो,उस ज़ात की क़सम जिस के हाथ में मेरी जान है अगर तुम में से कोई उहुद पहाड़ के बराबर सोना भी अल्लाह की राह में खर्च करे तो भी वह उन के मुद (सेर भर, एक मापने का पैमाना) या आधे सेर के बराबर नहीं पहुँच सकता» (मुस्लिम)

और सहाबा में सब से श्रेष्ठ खुलफाये राशदीनः अर्थात अबूकर رضي الله عنه फिर उमर رضي الله عنه फिर उसमान رضي الله عنه और अली رضي الله عنه हैं अल्लाह तआला उन से और संपूर्ण सहाबा से प्रसन्न हो,अल्लाह तआला ने फरमायाः

{और जो मुहाजिर(मक्का से मदीना आये हुये लोग) और अंसार (मदीना के मूल निवासी) पहले हैं अर्थात पहले ईमान लाये हैं और जितने लोग बिना किसी गर्ज़ से उन के पैरोकार हैं अल्लाह उन सभी से खुश हुआ और वे सब अल्लाह से खुश हुये और (अल्लाह ने) उन के लिये ऐसे बाग़ का इन्तेज़ाम कर रखा है जिन के नीचे नहरें बहती हैं,जिन में वे हमेशा रहेंगे,यह बड़ी कामयाबी है"।}[अत्तोबाः100].

इन सभों ने नबी ﷺ की ओर से तब्लीग़ की यहाँ तक कि दीन और ज्ञान हम तक पहुँचा।

अल्लाह से मुलाक़ात पर ईमान

संपूर्ण सृष्टि को अल्लाह की ओर लौटना है और वही उन के लौटन की जगह और उन का अंजाम है, और यह अल्लाह पर ईमान लाने का महत्वपूर्ण रुक्न है, बल्कि यह ईमान के अर्कान में से है,और ईमान के अर्कान में से प्रलोक पर ईमान लाना है,यह बात प्रमाणित है कि जब हमारे नबी (मुहम्मद) ﷺ से जिब्रील अमीन ने आप के सहाबा के सामने उन्हें अर्काने ईमान सिखाने की निय्यत से पूछा तो आप ﷺ ने उन से फरमायाः «तुम अल्लाह पर ईमान लाओ और उस के फरिश्तों पर ईमान लाओ और उस की किताबों पर और उस के रसूलों पर और प्रलोक पर और तक़्दीर की अच्छाई और उस की बुराई पर ईमान लाओ।» (मुस्लिम)-

और इसे अल योमिल आखिर (अंतिम दिन) इस लिये कहा जाता है क्योंकि इस के बाद कोई दिन नहीं होगा वह इस प्रकार कि जन्नती जन्नत में और जहन्नमी जहन्नम में चले जायेंगे,और क़ुरआन में इस दिन के अनेक नाम बताये गये हैं जो इस दिन की स्थिति उस की महानता और उस में पेश आने वाले घटनाओं पर प्रमाण (दलालत करते) हैं,जैसे योमुल वाक़ेआ(वाक़े होने वाली) क्योंकि इस का आना यक़ीनी है,और इसे अल खाफिज़ा (पस्त करने वाली) और अर्राफेआ (उठाने वाली) कहा जाता है क्योंकि उस दिन एक क़ौम के दरजे को ऊँचा करके उन्हें जन्नत में रखा जायेगा और दूसरी क़ौम के दरजे को कम करके उन्हें जहन्नम में डाला जायेगा,और इस दिन को हिसाब और अदले बदले का दिन भी कहा गया है और इसे अलहाक्क़ा (सिद्व होने वाली) भी कहा गया है क्योंकि उस दिन अल्लाह तआला की खबरें सत्य साबित होंगी और इसे अत्तामा कहा गया है जिस का अर्थ ग़ालिब होने के हैं क्योंकि यह दिन सब पर ग़ालिब होगा और इस दिन को अस्साख़्ख़ा (कान बहरे करने वाली) भी कहा गया है क्योंकि सूर फूँकने के कारण लोग बहरे हो जायेंगे, और इसे योमुल वईद (वादे का दिन) कहा गया है क्योंकि उस दिन काफिरों से किया हुआ अल्लाह के अज़ाब का वादा पूरा होगा,और इस दिन को योमुल हस्रह (अफ्सोस व शर्मिन्दगी का दिन) भी कहा गया है क्योंकि इस दिन लोग हस्रत और अफ्सोस करेंगे,और इस दिन को योमुत्तलाक़ (मिलने का दिन) कहा गया है,क्योंकि सब एक जगह पर मिलेंगे,और इस दिन को योमुल आज़िफा (क़रीब आने वाली) भी कहा गया है क्योंकि यह अधिक क़रीब है और इस दिन को योमुत्तनाद (हाँक पुकार का दिन) भी कहा गया है क्योंकि उस दिन एक दूसरे को पुकारेंगे, जन्नती जहन्नमियों को और जहन्नमी जन्नतियों को पुकारेंगे, और उस दिन को योमुन अक़ीम (बाँझ दिन) भी कहा गया है, क्योंकि वह अंतिम दिन होगा उस के बाद कोई दिन नहीं आयेगा,और इस दिन को अद्दारुल आखिरा(आखिरत का घर) भी कहा गया है,और इस दिन को दारुल क़रार (मुस्तक़िल घर) भी कहा गया है, और इस दिन को अलग़ाशिया (ढाँप लेने वाली) भी कहा गया है क्योंकि यह लोगों को ढाँप लेगी... इस के अतिरिक्त भी अनेक नाम हैं।

प्रलोक पर ईमान निम्न लिखित प्रकार हैः

पहली बातः मरने के बाद पेश आने वाली चीज़ों पर ईमान लानाजैसे क़ब्र की परिक्षा (आज़माइश)ः

इस का अर्थ मुरदे से उस के रब,उस के दीन और उस के नबी के विषय में प्रश्न है, ईमान वालों को अल्लाह (तआला) पक्की बात के साथ क़ायम रखता है,तो वह कहता हैः मेरा रब अल्लाह है और मेरा दीन इस्लाम है और मेरे नबी मुहम्मद ﷺ हैं,और अल्लाह तआला ज़ालिमों को भटका देता है,काफिर कहेगा (हाय ...हाय मैं नहीं जानता) और कपटाचारी या शक करने वाला कहेगाः (मैं नहीं जानता मैं ने लोगों को यह कहते हुये सुना तो मैं ने भी वैसा कह दिया).

क़ब्र का अज़ाब और उस की नेमतेंः

क़ब्र का अज़ाब ज़ालिमों,कपटाचारियों और काफिरों और कुछ गुनहगार मुसलमानों के लिये है,अल्लाह तआला ने फरमायाः {अगर आप ज़ालिमों को मौत के सख्त अज़ाब में देखेंगे जब कि फरिश्ते अपने हाथ लपकाये होते हैं, कि अपनी जान निकालो,आज तुम्हें अल्लाह पर नाहक़ इल्ज़ाम लगाने और घमंड से उस की आयतों का इन्कार करने के कारण अपमानकारी(रुस्वाकुन) बदला दिया जायेगा“।}[अल अन्आमः93].

{अल अन्आमः93}. {आग है जिस के सामने यह हर सुबह और शाम को लाये जाते हैं और जिस दिन क़यामत आयेगी(हुक्म होगा कि) फिरऔन के पैरोकारों को अधिक सख्त अज़ाब में डालो।}[ग़ाफिरः46].

और जैद बिन साबित ﷺकी हदीस में है जिसे वे नबी ﷺ से रिवायत करते हैं,आप ने फरमायाः «अगर मुझे डर न होता कि तुम दफन करना छोड़ दोगे तो ज़रूर मैं अल्लाह से दुआ करता कि वह तुम्हें क़ब्र का अज़ाब सुनाये जो मैं सुनता हूँ,फिर आप ﷺहमारी ओर मुतवज्जेह हुये,फरमायाः क़ब्र के अज़ाब से अल्लाह की पनाह माँगो,तो हम सब ने कहाः हम क़ब्र के अज़ाब से अल्लाह की पनाह माँगते हैं,फिर आप ﷺ ने कहाः क़ब्र के अज़ाब से अल्लाह की पनाह माँगो, तो हम सब ने कहाः हम क़ब्र के अज़ाब से अल्लाह की पनाह माँगते हैं,फिर आप ﷺ ने कहाः तुम ज़ाहिरी और बातिनी (पोशीदा) फित्नों से अल्लाह तआला की पनाह माँगो,हम सब ने कहा हम ज़ाहिरी व बातिनी फित्नों से अल्लाह की पनाह माँगते हैं,फिर आप ﷺ ने फरमायाः तुम दज्जाल के फित्ने से अल्लाह की पनाह माँगो।» (मुस्लिम).

उसमान ﷺ जब किसी क़ब्र के पास खड़े होते तो इस क़दर रोते कि आप की दाढ़ी भीग जाती,कहा गया कि जन्नत और जहन्नम के बारे में बयान किया जाता है तो आप नहीं रोते हैं और इस से अर्थात क़ब्र देख कर रो रहे हैं? यह सुन कर आप ने कहाः निःसंदेह अल्लाह के संदेष्टा ने फरमायाः बेशक आखिरत की मन्ज़िलों में क़ब्र पहली मन्ज़िल है अगर आदमी इस से बच गया तो उस के बाद का मामला इस से सरल है और यदि इस से न बच सका तो इस के बाद का मामला इस से अधिक कष्ट है उसमानﷺ कहते हैं रसूलुल्लाह फरमाते हैंः मैं ने क़ब्र से अधिक भयानक दृश्य (मन्ज़र) नहीं देखा। (अहमद).

और रही बात क़ब्र की नेमतों की तो यह सच्चे मोमिनों के लिये है,अल्लाह तआला ने फरमायाः {हक़ीक़त में जिन लोगों ने कहा कि हमारा रब अल्लाह है फिर उसी पर जमे रहे,उन के पास फरिश्ते आते हैं कि तुम कुछ भी भयभीत और दुखी न हो बल्कि उस जन्नत की खुशखबरी सुन लो जिस का तुम से वादा किया गया है"।} [फ़ुस्सिलतः30].

और अल्लाह तआला ने कहाः {तो जब कि (जान) गले तक पहुँ जाये और तुम उस समय देखते रहो, और हम उस इंसान से तुम्हारे मुक़ाबले अधिक क़रीब होते हैं,लेकिन तुम नहीं देख सकते,तो अगर तुम किसी की आज्ञा (इताअत) के अधीन नहीं और उस कथन में सच्चे हो तो तनिक उस प्राण को तो लौटाओ,तो जो कोई भी क़रीब होगा उसे तो सुख है और खाना है और सुखदायी जन्नत है,और जो इंसान दाहिने हाथ वालों में से है तो सलाम है तेरे लिये कि तू दाहिने वालों में से है,लेकिन अगर कोई झुटलाने वाले पथ भ्रष्टों में से है तो खौलते हुये पानी से मेहमानी है और नरक में जाना है,यह सरासर हक़ और बिल्कुल निश्चित है,तो तू अपने रब के नाम की पविन्नता बयान कर"।} [अल वाक़ेआः83-96].

और नबी ﷺ ने उस मोमिन के विषय में जो अपनी क़ब्र में दो फरिश्तों के प्रश्नों का उत्तर देदेगा फरमायाः «आकाश से एक पुकार लगाने वाला पुकार लगायेगा कि मेरे बंदे ने सच कहा,इस के लिये जन्नत का बिस्तर लगा दो और इसे जन्नत के कपड़े पहनाओ और इस के लिये जन्नत का द्वार खोल दो,कहते हैं कि फिर उस के पास जन्नत की हवा और उस की खुशबू आयेगी और जहाँ तक उस की निगाह जायेगी उस की क़ब्र को कुशादा कर दिया जायेगा।» इस हदीस को इमाम अहमद और अबूदावूद ने एक लम्बी हदीस में रिवायत की है।

दूसरी बातः मरने के बाद जी उठने पर ईमान

अर्थात जब दोबारा सूर में फूँका जायेगा तो लोग संपूर्ण संसार के रब के सामने खड़े होजायेंगे,वे नंगे पैर,नंगे बदन और बिना खतना किये हुये उठेंगे,अल्लाह तआला ने फरमायाः "जैसे हम ने पहली बार पैदा किया था उसी प्रकार दोबारा करेंगे,यह हमारा मज़बूत वादा है और यह हम अवश्य करके ही रहेंगे"। [अल अंबियाः104].

और मरने के बाद दोबारा उठाया जाना हक़ और प्रमाणित है,जिस पर कुरआन, हदीस और मुसलमानों का इज्मा (सम्मति) है.अल्लाह तआला ने फरमायाः और मरने के बाद दोबारा उठाया जाना हक़ और प्रमाणित है,जिस पर कुरआन, हदीस और मुसलमानों का इज्मा (सम्मति) है.अल्लाह तआला ने फरमायाः[अल मोमिनूनः15-16].

और नबी ﷺ ने फरमायाः «क़यामत के दिन लोगों को नंगे पैर और बिना खतना किये हुये उठाया जायेगा।» (बुखारी,मुस्लिम),

और इस के सबूत पर मुसलमानों का इज्मा है,और हिक्मत का तक़ाज़ा भी यही है, वह इस प्रकार कि अल्लाह तआला अपनी सृष्टि को दोबारा पैदा करे ताकि उन्हें उन कार्यों का बदला दे जिन कार्यों के करने का अपने रसूल की ज़ुबानी मुकल्लफ किया था,अल्लाह तआला ने फरमायाः {क्या तुम यह समझ बैठे हो कि हम ने तुम्हें बेकार ही पैदा किया है,और यह कि तुम हमारी ओर लौटाये ही नहीं जाओगे"?} [अल मोमिनूनः115].

और अल्लाह तआला ने अपने नबी ﷺ से फरमायाः {जिस (अल्लाह) ने आप पर क़ुर्आन उतारा है वह आप को दोबारा पहली जगह पर लाने वाला है"।}[अल क़ससः85].

तीसरी बातः क़यामत और क़यामत की निशानियों के विषय में जो आया है उस पर ईमान लानाः

यह निशानियाँ क़यामत से पहले ज़ाहिर हूँगी और क़यामत के क़रीब होने का प्रमाण होंगी,और निशानियों को दो हिस्से छोटी और बड़ी निशानियों में बाँटा गया है.

छोटी निशानियाँः

इस से मुराद वह निशानियाँ हैं जो आम तौर पर क़यामत से अधिक पहले ज़ाहिर हूँगी,और उन में से कुछ निशानियाँ ऐसी हैं जो ज़ाहिर होकर समाप्त हो गई हैं,और ये दोबारा भी ज़ाहिर हो सकती हैं,और उन में से कुछ ऐसी हैं जो ज़ाहिर हो रही हैं और अभी भी बार बार ज़ाहिर हो रही हैं और उन में से कुछ ऐसी हैं जो अभी तक ज़ाहिर नहीं हुयी हैं लेकिन यह ज़ाहिर होंगी जैसा कि हमारे सच्चे नबी ﷺ ने इस की खबर दी है,उदाहरण के तौर परः मुहम्मद ﷺ का नबी बनाया जाना,आप की मौत,और बैतुल मक्दिस का फतह होना,फित्नों का ज़ाहिर होना,अमानतदारी का खतम हो जाना,ज्ञान का उठ जाना,जहालत का आम होना, ज़िना (व्यभिचार),सूद,गाना बजाना और शराब नोशी का बढ़ जाना और बकरियाँ चराने वालों का बड़ी बड़ी बिल्डिगें खड़ी करना,अवलाद का अपनी माँओं की नाफरमानी करना यहाँ तक कि अपनी माँओं से दासियों जैसा मामला करना,क़त्ल का बढ़ जाना,भूकंप का अधिक आना,धरती का धंस जाना,मस्ख(विकृत)और दोषारोपण का जाहिर होना बारीक कपड़ों का पहनना(जिस से बदन जाहिर हो),अधिकतर झूटी गवाही देना,सत्य गवाही का छुपाना आदि उन चीज़ों का आम हो जाना जिन का बयान क़ुरआन और हदीस में आया है.

बड़ी निशानियाँः

और यह महान बातें हैं जिन का ज़ाहिर होना इस बात की दलील होगी कि क़यामत क़रीब है और इस महान दिन के आने में बहुत कम समय रह गया है,और यह दस निशानियाँ हैंः दज्जाल का आना,ईसा बिन मरयम का उतरना,याजूज माजूज का ज़ाहिर होना,और तीन खस्फ (ज़मीन का धंसना) होगा एक खस्फ पूरब में और एक पश्चिम में और एक खस्फ अरब के जज़ीरे में,और धुआँ का उठना,और सूरज का पश्चिम से निकलना,एक जानवर का निकलना, और उस आग का ज़ाहिर होना जो लोगों को एकत्न होने के स्थान पर हाँक कर ले जायेगी,और निशानियाँ एक के बाद एक प्रकट होंगी,जब इन निशानियों में से पहली निशानी ज़ाहिर हो जायेगी तो दूसरी उस के बाद ही ज़ाहिर हो जायेगी.

चैथी बातः क़यामत की हौलनाकी और उस की घटनाओं के विषय में बताई गई बातों पर ईमान जैसेः

1- बड़े बड़े पहाड़ों को कूट कर मिट्टी बना दिया जायेगा और उसे ज़मीन के बराबर कर दिया जायेगा,अल्लाह तआला ने फरमायाः {और आप पहाड़ों को अपनी जगह पर जमा हुआ समझते हैं लेकिन वे भी बादल की तरह उड़ते फिरेंगे“।} [अन्नमलः88].

और अल्लाह तआला ने फरमायाः {और पहाण बिल्कुल कण-कण कर दिये जायेंगे,फिर वह बिखरी धूल समान हो जायेंगे“।}[अल वाकैआः5-6].

और अल्लाह तआला ने फरमायाः {और पहाड़ रंगीन ऊन की तरह हो जायेंगे“।} [अल मआरिजः9].

और अल्लाह तआला ने फरमायाः {वे आप से पहाड़ों के बारे में सवाल करते है तो कह दें उन्हें मेरा रब कण-कण करके उड़ा देगा,और (धरती) को समतल चटियल मैदान करके छोड़ेगा,जिस में न तो कहीं मोड़ देखेगा न ऊँच नीच“।}[ताहाः105-107].

2- समुद्रों का फट पड़ना और उस का भड़काया जाना,यह समुद्र हमारी धरती के अधिकतर हिस्से को घेरे हुये हैं उस दिन बह चलेंगे,अल्लाह तआला ने फरमायाः {और जब समुद्र बह चलेंगे“।}[अल इन्फितारः 3].

{और जब समुद्र भड़काये जायेंगे“।}[अत्तक्वीरः 6].

3- वह धरती जिस से लोग परिचत हैं बदल दिया जायेगा,इसी प्रकार आकाशों को भी बदल दिया जायेगा,इन्हें ऐसी धरती पर उठाया जायेगा जिस का न तो इन्हें ज्ञान होगा और न प्रभाव, अल्लाह तआला ने फरमायाः {जिस दिन धरती इस धरती के इलावा दूसरी बदल दी जायेगी और आकाशों को भी और सभी के सभी एक अल्लाह ज़बरदस्त के सामने होंगे“।}[इब्राहीमः 48].

नबी ﷺ ने फरमायाः «क़यामत के दिन उजले गेहूँ की रोटी जैसी साफ और सुर्खी मायल उजली धरती पर लोगों का हश्र होगा,जिस में किसी प्रकार का कोई निशान नहीं होगा» (बुखारी,मुस्लिम)

धरती सफेद हो जायेगी अर्थात उस पर कोई चिन्ह और निशान नहीं होगा।

4ः वहाँ पर नई नई चीज़ें देखेंगे,वे सूरज और चाँद को एक साथ देखेंगे जिस

से उन की परेशानी और डर बढ़ जायेगा,अल्लाह तआला ने फरमायाः {तो जिस समय आँखें पथरा जायेंगी और चाँद प्रकाशहीन(बेनूर) हो जायेगा और सूरज और चाँद इकठ्ठा कर दिये जायेंगे,उस दिन इंसान कहेगा कि आज भागने की जगह कहाँ है"?}[अल क़ियामहः 7-10].

5- जिस दिन सूर फूँका जायेगा वह दुनियावी ज़िन्दगी का अंतिम दिन होगा,और जब वह दिन आयेगा तो सूर में फूँक दिया जायेगा,फिर यह फूँक आसमान और जमीन के बीच में रहने वालों के जीवन को समाप्त करदेगी। {और सूर फूँक दिया जायेगा तो आकाशों और धरती वाले सभी बेहोश होकर गिर पड़ेंगे लेकिन जिसे अल्लाह चाहे"।}[अज़्ज़ुमरः 68].

और यह एक ख़तरनाक और विनाशकारी फूँक होगी जिसे सुनने के बाद कोई व्यक्ति किसी चीज़ का आदेश देने की सकत नहीं रख सकेगस और न ही अपने घर वालों और न ही दोस्तों के पास लौट सकेगा। {उन्हें केवल एक ज़ोरदार चीख का इंतेज़ार है जो उन्हें आ पकड़ेगी,और ये आपसी लड़ाई झगड़े में ही होंगे,उस समय ये न तो वसीयत कर सकेंगे और न अपने परिवार की ओर लौट सकेंगे"।}[यासीनः 49-50].

और नबी ﷺने फरमायाः «फिर सूर में फूँक दिया जायेगा जो भी इसे सुनेगा वह एक तरफ से अपनी गरदन झुका देगा और दूसरी तरफ से उठा लेगा अर्थात अचेत होकर गिर पडेगा,फरमायाः सब से पहले सूर की आवाज़ सुनने वाला वह व्यक्ति होगा जो अपने ऊंट के हौज़ पर कलावा कर रहा होगा,फिर वह अचेत हो जायेगा और दूसरे लोग भी अचेत हो जायेंगे» (मुस्लिम)

6- महशर की ज़मीन पर सब के सब इकठ्ठा होंगे चाहे वे पहले पैदा हुये हों या सब से बाद में अर्थात उस धरती पर अव्लो आखिर,जिन्नात,इंसान,बल्कि उन के जानवर भी इकठ्ठा होंगे, अल्लाह तआला ने फरमायाः {बेशक इस में उन लोगों के लिये नसीहत है जो क़यामत के अज़ाब से डरते हैं,वह दिन जिस में सब लोग जमा किये जायेंगे और ये वो दिन है जिस में सब हाज़िर किये जायेंगे।}[हूदः 103].

और अल्लाह तआला ने फरमायाः {कह दीजिये कि बेशक सब अगले और पिछले ज़रूर जमा किये जायेंगे,एक निर्धाति दिन के समय"।}[अल वाक़ेआः 49-50].

7- लोग उसी प्रकार नंगे उठाये जायेंगे जैसा कि अल्लाह तआला ने उन्हें नंगे पैदा किया था,और इस भयानक स्थिति की गंभीरता को देखते हुये वे इस की ओर मुतवज्जेह ही नहीं होंगे,और माई आयशा रज़िअल्लाहु अन्हा ने भी इस पर आश्चर्य ज़ाहिर किया था जैसा कि आयशा रज़िअल्लाहु अन्हा से रिवायत है,कहती हैंः «रसूलुल्लाह ने फरमायाः लोग नंगे पैर नंगे जिस्म और बिना खतना किये हुये उठाये जायेंगे,आयशा कहती हैं कि मैं ने कहाः ऐ अल्लाह के रसूल! मर्द औरत सब नंगे उठाये जायेंगे ऐसी सूरत में तो एक दूसरे को देखेंगे,आप ने फरमायाः वह इस विषय में सोचें इस से कहीं भयानक स्तिथि होगी» (बुखारी)

8: मज़्लूम को ज़ालिम से बदला दिलाया जायेगा,यहाँ तक कि चैपायों को भी (बदला दिलाया जायेगा) नबी ﷺ ने फरमाया: «अल्लाह तआला ने फरमाया: «तुम ज़रूर क़यामत के दिन हक़ वालों के हुक़ूक लौटाओगे,यहाँ तक कि बिना सींग वाली को सींग वाली बकरी से बदला दिलाया जायेगा» (मुस्लिम),

और नबी ﷺ ने फरमाया: «जिस व्यक्ति ने अपने किसी भाई पर उस की इज़्ज़त व आबरू या किसी और चीज़ में ज़ुल्म किया हो तो वह आज ही उस को माफ करवाले,इस से पहले कि वह दिन आ जाये जिस दिन न दीनार होगा न दिरहम,अगर उस के पास नेकी होगी तो उस के ज़ुल्म के बराबर ये नेकी उस से ले ली जायेगी,और अगर उस के पास नेकी नहीं होगी तो उस के साथी अर्थात मज़्लूम की बराइयाँ लेकर उस पर लाद दी जायेंगी» (बुखारी)

9- सूरज का लोगों के अधिक निकट होना यहाँ तक कि लोग अपने आमाल अनुसार पसीने में डूबे हुये होंगे,नबी ने फरमाया: «क़यामत के दिन सूरज लोगों के अधिक निकट होगा यहाँ तक कि कुछ लोगों से एक मील के फासिले पर ही होगा,सुलैम बिन आमिर कहते हैं: अल्लाह की क़सम मुझे पता नहीं कि अल्लाह के रसूल ने मील से क्या मुराद लिया है,मील से मुराद एक मील की दूरी है या उस से सुरमे की सलाई मुराद है,आप ने फरमाया: लोग अपने आमाल के हिसाब से पसीने में डूबे हुये होंगे,कोई अपने टखनों तक तो काई अपने घुटनों तक डूबा होगा,और कोई अपनी कमर तक और किसी को पसीने की लगाम लगाई जायेगी अर्थात वह मुंह तक पसीने में डूबा होगा,रावी कहते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने हाथ से अपने मुँह की ओर इशारा किया» (मुस्लिम)

10- कुछ लोग अपने नामये आमाल दायें हाथ में लिये हुये होंगे तो कुछ लोग बायें हाथ में और लोग आश्चर्य,डर और भयभीत होंगे यहाँ तक कि हर व्यक्ति का नामये आमाल उस के हाथ में आ जायेगा,जब नामये आमाल उन के दायें हाथ में दिया जायेगा तो इस से मोमिन खुश होंगे, उन्हें समझ आजायेगा कि मुक्ति उन के निकट है,जब के काफिरों और मुनाफिक़ों के दुख बढ़ जायेंगे जब उन के नामये आमाल उन के बाँये हाथ में आ जायेगें, यह पूरा पूरा बदला होगा,अल्लाह तआला ने फरमाया: {तो जिस का कर्मपन्न(आमाल नामा) उस के दाहिने हाथ में दिया जायेगा तो वह कहने लगेगा कि लो मेरा कर्मपन्न पढ़ लो,मुझे तो पूरा विश्वास था कि मैं अपना हिसाब पानेवाला हूँ, तो वह एक सुखद जीवन में होगा,ऊँचे जन्नत में,जिस के फल झुके पड़े होंगे,(उन से कहा जायेगा कि) मज़े से खाओ पियो,अपने उन कर्मों के बदले जो तुम ने पिछल ज़माने में किये,लेकिन जिसे उस का कर्मपन्न बाँये हाथ में दिया जायेगा,वह तो कहेगा कि हाय मुझे मेरा कर्मपन्न दिया ही न जाता,और मैं जानता ही नहीं कि हिसाब क्या है? काश!मौत (मेरा) काम ही खत्म कर देती,मेरे धन ने भी मुझे कोई लाभ न दिया,मेरा राज्य भी मुझ से जाता रहा"।}[अलहाक़्क़ा: 19-29].

11- अल्लाह तआला ने फरमाया: अधिक डर और भय के कारण आदमी किसी के विषय में कोई प्रश्न नहीं करेगा उसे केवल अपनी जान के लाले पड़े होंगे,अल्लाह तआला ने फरमाया: {उस दिन न माल काम आयेगा और न ही बेटे"।} [अश्शोरा: 88].

और अल्लाह तआला ने फरमाया: {तो आदमी उस दिन भागेगा अपने भाई से,अपनी माँ और अपने बाप से,अपनी पत्नी और संतान से,उन में से हर एक को उस दिन एक ऐसी फिक्र होगी जो उसे(मशगूल रखने को) काफी होगी"।} [अबस: 34-37].

पाँचवीं बातः हिसाब और बदले पर ईमानः

आदमी के कर्मों का हिसाब होगा और उस का बदला दिया जायेगा, अल्लाह तआला ने फरमायाः {बेशक हमारी ओर उन को लौटना है,फिर बेशक उन से हिसाब लेना है"।} [अलग़ाशियाः 25-26].

और अल्लाह तआला ने फरमायाः {जो इंसान अच्छा काम करेगा उसे उस के दस गुना मिलेंगे,और जो बुरे काम करेगा उसे उस के बराबर सज़ा मिलेगी और उन लोगों पर जुल्म न होगा"।}[अलअन्आमः 160].

और अल्लाह तआला ने फरमायाः {और हम क़यामत के दिन उन के बीच ठीक-ठीक तौल की तराज़ू ला रखेंगे,फिर किसी पर किसी प्रकार का जुल्म न किया जायेगा,और अगर एक सरसों के दाने के बराबर भी (अमल) होगा उसे हम सामने लायेंगे,और हम हिसाब करने के लिये काफी हैं"।}[अलअंबियाः 47].और इब्ने उमर रज़िअल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि नबी ﷺ ने फरमायाः «बेशक अल्लाह तआला मोमिन बंदे को अपने क़रीब करेगा,और उस पर अपना परदा डाल कर उसे छिपाता है,और कहता हैः क्या तुम इस इस गुनाह को जानते हो,वह कहेगा हाँ ऐ मेरे पालनहार यहाँ तक कि वह अपने सारे गुनाहों का इक़रार कर लेगा और यह समझेगा कि वह हलाक होगया, तो अल्लाह तआला उस से कहेगा,मैं ने दुनिया में तेरे गुनाहों को छिपाया और आज मैं तेरे गुनाहों को क्षमा कर रहा हूँ,नबी ﷺ ने फरमायाः फिर उसे उस की नेकियों की पंजिका दी जायेगी,रही बात काफिरों और कपटाचारियों की तो उन्हें सारी मखलूक़ के सामने बुलाया जायेगा।» {ये वह लोग हैं जिन्होंने अपने रब पर झूट बाँधा,सावधान अल्लाह की लानत है ज़ालिमों पर"।}[हूदः 18]. (बुखारी,मुस्लिम),

और नबी ﷺ से हदीसे क़ुदसी में साबित है अर्थात नबी ﷺ अल्लाह तआला से रिवायत करते हैं कि अल्लाह तआला ने फरमायाः «अल्लाह तआला ने नेकियों और बुराइयों को लिख दिया है फिर उसे बयान किया है,जिस ने नेकी का इरादा किया परन्तु नेकी न कर सका तो अल्लाह तआला उस के लिये पूरी एक नेकी लिख देता है और अगर इरादा करने के बाद नेकी कर लेता है तो उस समय उस के लिये दस नेकियों से लेकर सात सौ गुना तक बल्कि उस से भी अधिकतर नेकियाँ लिख देता है और अगर बुराई का इरादा करके उसे न करे तो अल्लाह तआला उस के लिये पूरी एक नेकी लिखता है और अगर इरादा करके उस बुराई को कर लेता है तो अल्लाहत तआला उस के लिये केवल एक गुनाह लिखता है।» (बुखारी,मुस्लिम),

हसन बसरी से कहा गयाः हम ने देखा कि ताबईन इबादत में सहाबा से बढ़े हुये हैं तो सहाबा उन से किस चीज़ में आगे थे? हसन ने कहा यह लोग इबादत करते हैं इस हाल में कि दुनिया इन के दिलों में है जब कि सहाबा ने अल्लाह की इबादत की इस हाल में कि उन के दिलों में आखिरत थी।

और हिसाबो किताब और बदले के प्रमाण पर मुसलमानों का इज्मा है,और हिक्मत का तक़ाज़ा भी यही है क्योंकि अल्लाह तआला ने किताबें उतारीं,रसूलों को भेजा और बंदों के लिये अपने ऊपर ईमान और अपनी इताअत को अनिवार्य किया और जो न उस की इताअत करे और न उस के रसूल की इताअत करे और न उस पर ईमान लाये उसे सख्त दर्दनाक अज़ाब की धमकी दी है,अगर हिसाबो किताब और बदले का मामला न होता तो यह बे मक़्सद होता जिस से अल्लाह तआला पाक है,और अल्लाह तआला ने

अपने इस कथन से इस की ओर इशारा किया हैः {फिर हम उन से ज़रूर पूछ करेंगे जिन के पास पैग़ाम भेजा गया और पैग़म्बरों से ज़रूर पूछ करेंग,फिर हम उन के सामने इल्म के साथ बयान कर देंगे और हम बेखबर नहीं थे"।} [अल आराफः 6-7].

छटवीं बातः जन्नत और जहन्नम पर ईमानः

और यह सृष्टि का अंतिम हमेशगी वाला ठिकाना है,जन्नत तो यह नेमतों वाला घर है जिसे अल्लाह तआला ने उन परहेज़गार मोमिनों के लिये तय्यार किया है जो उन चीज़ो पर ईमान लाये जिन पर ईमान लाने को अल्लाह तआला ने ज़रूरी कर दिया है, और उन्हों ने अल्लाह और उस के रसूल की पैरवी की वह अल्लाह के लिये मुख्लिस हैं और उस के पैग़म्बर की इताअत करने वाले हैं.जन्नत में ऐसी नेमतें होंगी जिन्हें न तो किसी आँख ने देखी होंगीं और न ही किसी कान ने सुनी होंगी और न ही किसी इंसान के दिल में खयाल आया होगा,अल्लाह तआला ने फरमायाः {बेशक जो लोग ईमान लाये और नेकी के काम किये,यह लोग बेहतरीन मखूलूक़ हैं,उन का बदला उन के रब के पास हमेशा रहने वाले स्वर्ग हैं जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, जिन में वह हमेशा रहेंगे,अल्लाह उन से खुश हुआ और ये उस से,यह उस के लिये है जो अपने रब से डरे"।}[अल बय्यिनाः 7-8].

और अल्लाह तआला ने फरमायाः {कोई पराणी नहीं जानता जो कुछ हम नें उन की आँखों की ठंडक उन के लिये छिपा रखी है,जो कुछ करते थे यह उस का बदला है"।}[अस्सज्दाः 17].

और उन नेमतों में श्रेष्ठ नेमत स्वर्ग में अल्लाह तआला का दीदार है,अल्लाह तआला ने फरमायाः{उस दिन बहुत से मुँह ताज़ा होंगे अपने रब की ओर देखते होंगे"।}[अल क़ियामाः 22-23].

अल्लाह तआला ने फरमायाः {जिन लोगों ने नेक काम किया है उन के लिये भलाई है,और कुछ ज़्यादा भी"।}[सूनुसः 26].

हुस्ना अर्थात स्वर्ग है और ज़्यादा अर्थात अल्लाह तआला का दीदार है,जैसा कि नबी ﷺ ने फरमायाः «जब जन्नती जन्नत में प्रवेश कर जायेंगे कहा कि अल्लाह तआला कहेगाः तुम्हें किसी और चीज़ की इच्छा है? वह कहेंगे क्या तू ने हमारे चेहरों को रोशन नहीं किया,क्या तू ने हमें जन्नत में दाखिल नहीं किया और तू ने हमें जहन्नम से छुटकारा नहीं दिया?कहा कि फिर अल्लाह तआला परदा हटा देगा,तो लोगों को रब के दीदार से अधिक उत्तम चीज़ दी ही नहीं गई, फिर पैग़म्बर ने यह आयत पढ़ी»: {जिन लोगों ने नेक काम किया है उन के लिये भलाई है,और कुछ ज़्यादा भी"।} [यूनुसः 26] (मुस्लिम).

और जहन्नम तो वह अज़ाब का घर है जिसे अल्लाह तआला ने उन ज़ालिम काफिरों के लिये तय्यार किया है जिन्हों ने अल्लाह का इन्कार किया और उस के पैग़म्बर की नाफरमानी की,उस में अज़ाब और ऐसे अनेक प्रकार के दुख दिये जायेंगे जिस के बारे में आदमी सोच भी नहीं सकता.

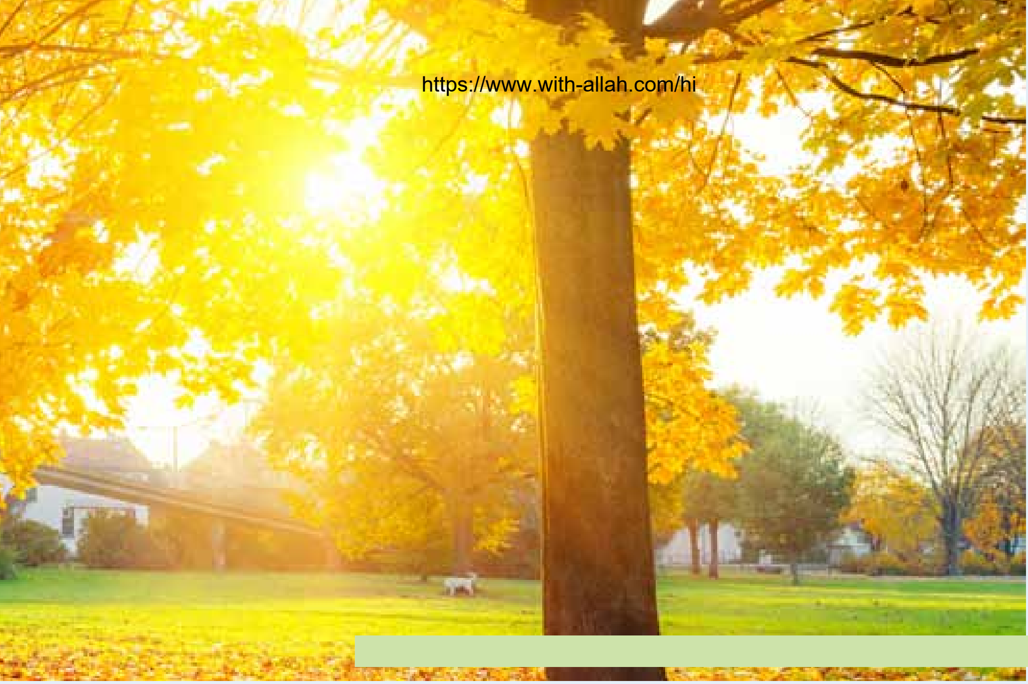

अल्लाह तआला ने फरमायाः {और उस आग से डरो जो काफिरों के लिये तय्यार की गई है"।}[आले इमरानः 131].

और अल्लाह तआला ने फरमायाः {बेशक हम ने ज़ालिमों के लिये वह आग तय्यार कर रखी है जिस की परिधि (क़नातें) उन्हें घेर लेंगी,और अगर वह फरयाद करेंगें तो उन की मदद उस पानी से की जायेगी जो तलछट जैसा होगा वह चेहरे भून देगा,बड़ा ही बुरा पानी है और बड़ा बुरा आरामगाह (नरक) है"।}[अल कहफः 29].

और अल्लाह तआला ने फरमायाः {अल्लाह ने काफिरों पर धिक्कार भेजी है और उन के लिये भड़कती हुयी आग तय्यार कर रखी है,जिस में वे हमेशा रहेंगे,वे कोई पक्षधर(वली) और मदद करने वाला न पायेंगे,उस दिन उन के मुँह आग में उलटे पलटें जायेंगे कहेंगे कि काश हम अल्लाह(तआला) और रसूल के हुक्म की इताअत करते"।}[अल अहज़ाबः 64-66].

सब से हलका अज़ाब जिस व्यक्ति को दिया जायेगा -अल्लाह की पनाह-जिस के बारे में नबीﷺने ज़िक्र किया,आप ने फरमायाः «जहन्नमियों में से जिसे सब से हलका अज़ाब दिया जायेगा वह ऐसा व्यक्ति होगा जिस के दोनों पैरों के नीचे आग रख दी जायेगी जिस से उस का दिमाग उबाल खायेगा।» (बुखारी)

प्रलोक पर ईमान लाने के फलः

1- ईमान के एक रुक्न का वजूद,अल्लाह पर ईमान उस वक्त तक साबित न होगा जब तक कि प्रलोक पर ईमान न हो,क्योंकि यह ईमान का एक रुक्न है इस लिये अल्लाह तआला ने हमारे ऊपर गैर मोमिनों से जंग को अनिवार्य किया है, अल्लाह तआला ने फरमायाः {उन लोगों से लड़ाई करो जो अल्लाह और प्रलोक पर ईमान नहीं रखते"।}[अत्तोबाः 29].

2- दुनिया और आखिरत में शान्ति और बड़े सवाब का वादा, अल्लाह तआला ने फरमायाः {याद रखो कि अल्लाह के मिन्नों पर न कोई डर है न वे दुखी होते हैं“।}[यूनुसः 62].

3- बड़े पुण्य का वचन,अल्लाह तआला ने फरमायाः {बेशक जो मुसलमान हो यहूदी हो,नसारा (ईसाई) हो या साबी हो,जो कोई भी अल्लाह तआला और क़यामत के दिन के दिन पर ईमान लायेगा और अच्छे काम करेगा उस का बदला उस के रब के पास है,और उन को न कोई डर है और न कोई ग़म होगा“।}[अल बक़राः 62].

4-भलाई के काम पर उभारना, अल्लाह तआला ने फरमायाः {ऐ ईमान वालो! अल्लाह के हुक्म की पैरवी करो और रसूल की और अपने में से हाकिमों के हुक्म को मानो,फिर अगर किसी बात में एख्तिलाफ करो तो उसे लौटाओ अल्लाह और उस के रसूल की ओर अगर तुम्हें अल्लाह और क़यामत के दिन पर ईमान है,यह सब से अच्छा है और नतीज़ा के एतबार से अधिक उत्तम है“।}[अन्निसाः 59].

और अल्लाह तआला ने फरमायाः {अल्लाह की मस्जिदों को तो वह आबाद करते हैं जो अल्लाह पर और आखिरत के दिन पर ईमान रखते हों“।}[अत्तोबाः 18].

और अल्लाह तआला ने फरमायाः {यक़ीनन तुम्हारे लिये रसूलुल्लाह में अच्छा नमूना है हर उस इन्सान के लिये जो अल्लाह और क़यामत के दिन की उम्मीद रखता है और अधिकतर अल्लाह को याद करता है“।}[अल अहज़ाबः 21].

और अल्लाह तआला ने फरमायाः {बेशक तुम्हारे लिये उन में अच्छे आदर्श (उसवा) हैं हर उस इन्सान के लिये जो अल्लाह और क़यामत के दिन की मुलाक़ात पर यक़ीन रखता हो“।}[अल मुम्तहिनाः 6].

और अल्लाह तआला ने फरमायाः {और अल्लाह की खुशी के लिये ठीक ठाक गवाही दो यही है वह जिस की शिक्षा (नसीहत) उन्हें दी जाती है जो अल्लाह पर और क़यामत के दिन पर ईमान रखते हों“।}[अत्तलाक़ः 2].

5- बुराइयों से दूरी,अल्लाह तआला ने फरमायाः {उन के लिये जायज़ नहीं की अल्लाह ने उन के रिहम में जो पैदा किया हो उसे छिपायें अगर उन्हें अल्लाह (तआला) पर और क़यामत के दिन पर ईमान हो“।}[अल बक़राः 228].

मोमिनों की माँ आयशा रज़िअल्लाहु अन्हा ने एक महिला से कहाः मौत को अधिक याद करो इस से तुम्हारा दिल नरम होगा.

और अल्लाह तआला ने फरमायाः {और जब तुम अपनी औरतों का तलाक़ दो और वह अपनी इद्दत पूरी करलें तो उन्हें उन के पतियों से शादी करने से न रोको जब कि वह आपस में भलाई के एतबार से राज़ी हों,यह तालीम उन्हें दी जाती है जिन्हें तुम में से अल्लाह (तआला) पर और क़यामत के दिन पर यक़ीन और ईमान हो“।}[अल बक़राः 232].

और अल्लाह तआला ने फरमायाः {अल्लाह पर और क़यामत (प्रलय) के दिन पर ईमान और यक़ीन रखने वाले तो अपने माल से और जान से जिहाद करने से रुके रहने की कभी भी तुझ से इजाज़त नहीं माँगेंगे और अल्लाह तआला परहेज़गारों को अच्छी तरह जानता है,यह इजाज़त तो तुझ से वही माँगते हैं जिन्हें न अल्लाह पर ईमान है न आखिरत के दिन पर यक़ीन है जिन के दिल शक में पडे हुये हैं और यह अपने शक ही में भटक रहे हैं“।}[अत्तोबाः 44-45].

इसी लिये जो इस दिन पर ईमान नहीं लाता वह हराम में पड़ने से नहीं बचता है और न ही उस पर शर्म करता है {क्या तू ने (उसे भी) देखा जो बदले के दिन को झुटलाता है, यही वह है जो अनाथ (यतीम) को धक्के देता है,और ग़रीब को खाना खिलाने की प्रेरणा (तरग़ीब) नहीं देता“।}[अलमाऊनः1-3].

> हसन रहिमहुल्लाह ने कहाः जिस ने मौत को पहचान लिया उस पर दुनिया की परेशानियाँ सरल हो जाती हैं
> दिल में सुधार नहीं हो सकता,

6-मोमिन चूँकि आखिरत की नेमतों और सवाब की उम्मीद रखता है इस लिये दुनिया की चीज़ों के न मिलने पर भी उसे तसल्ली रहती है,जन्नत का मिलना बड़ी कामयाबी है और दुनियावी ज़िन्दगी केवल धोके का सामान है,अल्लाह तआला ने फरमायाः {हर जानदार को मौत का मज़ा चखना ही है, और क़यामत के दिन तुम अपने बदले पूरे पूरे दिये जाओगे लेकिन जो इन्सान आग से हटा दिया जाये और जन्नत में दाखिल करा दिया जाये बेशक वह सफल हो गया और दुनिया की ज़िन्दगी केवल धोके का सामान है“।}[आले इमरानः 185].

और अल्लाह तआला ने फरमायाः {आप कह दीजिये कि मैं अगर अपने रब का कहना न मानूँ तो मैं एक बडे दिन के अज़ाब से डराता हूँ,जिस से उस दिन सज़ा खत्म कर दी जायेगी उस पर अल्लाह ने बहुत रहमत की,और यह वाज़ेह कामयाबी है“।}[अल अनआमः 15-16].

और अल्लाह तआला ने फरमायाः {और प्रलोक (आखिरत) बहुत बेहतर और स्थाई (दायमी) है“।}[अल आलाः 17].

और न वह कामयाब हो सकता है, और न ही उसे प्रसन्नता प्राप्त हो सकती है,और न ही आनंद,और न उसे अच्छा लग सकता है और न ही सुकून मिलता है, और न ही उसे शान्ति मिल सकती है मगर अपने रब की इबादत करके, उस से प्रेम करके, और उस की ओर लौट करके.

ौखुल इस्लाम इब्ने तैमियाश्

समीक्षा

1- शांति और सुकून से दीन और ईमान का क्या सम्बंध है व्याख्या करो।

2- ईमान की परिचय करो और समुदायों पर इस का क्या प्रभाव है?

3- अल्लाह तआला पर ईमान लाने के तक़ाजे और उस के उपकरण क्या हैं?

4-अल्लाह तआला के निकट सब से श्रेष्ठ और पाकीज़ा कार्य क्या है?

5- आप को आप के परिवार और आप के समुदाय को अल्लाह तआला पर ईमान लाने का जो फल मिला उस की संख्या बताइये.

6-रसूलों पर ईमान लाने के क्या तक़ाजे हैं ?

7- क्यों सहाबा से प्ेरम को रसूल पर ईमान लाने का भाग माना गया है ?

8- क़यामत के दृश्यों,उस की भयावहतों जिसे आप जानते हैं उसे तसलसुल (अनुकर्म) के साथ बयान करें, क़यामत की छोटी निशानियों से शुरू करके जन्नतियों के जन्नत में और जहन्नमियों के जहन्नम में प्रवेश करने तक.

9- वह मुख्य कार्य कौन कौन से हैं जो बंदे को जन्नत में ले जायेंगे और उसे जहन्नम से छुटकारा देंगे ?

10- प्रलोक पर ईमान का अल्लाह की इबादत उस से डर और उस की मुहब्बत पर क्या प्रभाव हुआ और उस का क्या फल आप को मिला, इस की व्याख्या कीजिये ?

11- जन्नत की सब से महान नेमत और सब से हलका अज़ाब क्या है ?

प्रजापति पैदा करने वाले अल्लाह को पहचानिये

अल्लाह... शब्द के एतबार से प्यारा और अर्थ के एतबार से मीठा है, जिस में लगाव मुहब्त, प्रेम,एकता, इबादत,और इख्लास के अर्थ पाये जाते हैं,क्या ही महान नाम है!

प्रजापति पैदा करने वाले अल्लाह को पहचानिये

अल्लाह... शब्द के एतबार से प्यारा और अर्थ के एतबार से मीठा है, जिस में लगाव मुहब्त, प्रेम,एकता, इबादत,और इख्लास के अर्थ पाये जाते हैं,क्या ही महान नाम है!\

वही अल्लाह है जो पैदा करने वाला,बनाने वाला,रूप देने वाला है जिस ने सब परिसंŸियों को बनाया,उसे पैदा किया और उसे अपनी हिक्मत से तरतीब दिया और उसे अपनी तारीफ और हिक्मत से रूप दिया,और वह हमेशा इस महान विवरण पर क़ायम है।

अल्लाह जो रब है: अर्थात वह अपने सब बंदों के लिये उपाय करता है और उन्हें अनेक प्रकार की नेमतें देता है,और इस से विशेष ये है कि वह अपने अच्छे बंदों की प्रशिक्षण (तरबियत) उन के दिलों,रूहों और उन की नैतिकता को सुधार करके करता है इस लिये लोग अधिकतर इस महान नाम (रब) के ज़रिए दुआ करते हैं क्योंकि वह अल्लाह से यह विशेष प्रशिक्षण के इच्छुक होते हैं.

पहली बात.मेरा रब अल्लाह है:

”वही अल्लाह है पैदा करने वाला,बनाने वाला,रूप देने वाला“। [अल हश्र: 24].

1- रब का अर्थ:

रब: अर्थात ऐसा आक़ा जिस की कोई मिसाल नहीं,और ऐसा सुधारक जिस ने अपनी मखलूक़ को आदेश दिया क्योंकि उन्हें अनेक प्रकार की नेमतें दी हैं,और ऐसा मालिक जो पैदा करता और हुक्म देता है, और मखलूक को रब नहीं कहा जा सकता मगर किसी की ओर निस्बत करने की सूरत में,जैसे घर का रब, माल का रब अर्थात मालिक, और बिना किसी चीज़ की ओर निस्बत किये केवल रब अल्लाह ही के लिये खास है.

और जब लोगों को इस बात का ज्ञान है कि उन्हें अपने रब की आवश्यक्ता है, और वे उस के मुहताज हैं,इस बात के जानने से पहले कि उन्हें उस माबूदे हक़ीक़ी की आवश्यक्ता है और वे उस के मुहताज हैं, और वे अपनी बाद में आने वाली आवश्यक्ता से पहले फौरी आवश्यक्ता के लिये उस का इरादा करते हैं, तो यह अनिवार्य हुआ कि वे अल्लाह की उलूहियत,उस की प्रार्थना करने,

उसकी सहायता माँमगने, और उस पर भरोसा करने अर्थात अधिकतर उस की इबादत करने और उस की ओर लौटने से पहले अल्लाह की रुबूबियत का इक़रार करें।

और रब और रुबीबियत महान अर्थों को समेटे हुये हैं जैसे तसर्रुफ,जीविका,स्वास्थ,तौफीक़ मार्गदर्शिका,अल्लाह तआला फरमाता हैः {वही है जो मुझे खिलाता पिलाता है,तथा जब मैं रोगी हो जाऊँ तो मुझे निरोग (शिफा) अता करता है,और वही मुझे मार डालेगा,फिर ज़िन्दा करदेगा“।} [अश्शोराः 79-81].

2- रब के वजूद पर प्रमाणः

पूरा संसार अल्लाह तआला के वजूद का इक़्रार करता है,तस्दीक़ करता है,स्वीकारता है,ईमान लाता है और कहता है,अल्लाह तआला ने फरमायाः {उन के रसूलों ने उन से कहा कि क्या अल्लाह (जो सच है) उस के बारे में शक है जो आकाशों और धरती का पैदा करने वाला है वह तो तुम्हें इस लिये बुला रहा है ताकि वह तुम्हारे सारे गुनाह माफ करदे और एक मुक़र्रर वक्त तक तुम्हें मौक़ा अता करे,उन्हों ने कहा कि तुम तो हम जैसे ही इन्सान हो तुम चाहते हो कि हम को उन देवताओं की पूजा से रोक दो जिन की पूजा हमारे बुज़र्ग करते रहे,अच्छा तो हमारे सामने कोई वाज़ेह दलील पेश करो“।}[इब्राहीमः 10].

मोमिनः वह है जो इस बात पर यक़ीन करे कि अल्लाह तआला ही रब है जो हर चीज़ की शक्ति रखता है अर्थात इस पर विश्वास रखता है कि वही अकेला उपासक है।

आप अल्लाह तआला की प्रशंसा कदापि नहीं कर सकते मगर उस के कृपादया और उस के इनाम से, और दोनों हालतों में आप अल्लाह तआला के मुहताज हैं.

और उस पर किस प्रकार प्रमाण माँगा जाये जो अल्लाह तआला स्वयं हर चीज़ की दलील है.

और अगर हम इस ओर तवज्जोह न दें,और रब के मौजूद होने के प्रमाण ढूँडें तो निम्न लिखित प्रमाण हमें मिलते हैं:

प्रकृति (फित्रत) की दलील

पैदा करने वाले के ऊपर ईमान, इसी पर सृष्टि की रचना हुयी है,तो इस फित्रत से कोई हट नहीं सकता मगर जिस के दिल और दिमाग़ से अल्लाह तआला इसे मिटा दे. और इस बात का सब से महान प्रमाण की फित्रत अल्लाह के वजूद पर दलालत करती है नबी ﷺ का यह फरमान है: «हर बच्चा फित्रत अर्थात फित्रते इस्लाम पर पैदा होता है,परन्तु उस के माँ बाप उसे यहूदी,इसाई,और मजूसी बना देते हैं,जैसे जानवर ठीक ठाक जानवर को जन्म देता है क्या तुम उस में कुछ कान या नाक कटा देखते हो?» (बुखारी).

और हर एक मखलूक अपनी फित्रत के कारण तौहीद को स्वीकारती है, अल्लाह तआला ने फरमाया: {तो आप एकग्र(एकसू) हो कर अपना मुँह दीन की ओर केन्द्रित कर दें,अल्लाह तआला की वह फित्रत जिस पर उस ने लोगों को पैदा किया है,अल्लाह तआला के बनाये को बदलना नहीं,यही सच्चा दीन है,लेकिन अधिकतर लोग नहीं समझते"।}[अर्रूमः 30].

तो अल्लाह तआला के वजूद पर यह फित्रत की दलील है.

और अल्लाह तआला के वजूद पर फित्रत की दलील सब से महान दलील है उस व्यक्ति के लिये जिसे शैतान ने नहीं भटकाया,इसी लिये अल्लाह तआला ने फरमाया: {अल्लाह तआला की वह फित्रत जिस पर उस ने लोगों को पैदा किया है"।}[अर्रूमः 30].

अपने इस फरमान के बाद {तो आप एकग्र(एकसू) हो कर अपना मुँह दीन की ओर केन्द्रित कर दें"।}[अर्रूमः 30].

सही फित्रत अल्लाह के वजूद की गवाही देती है,और जिसे शैतान घुमा फिरा कर गुमराह करदे हो सकता है उसे यह दलील रोक दे और उसे रब की ज़रूरत महसूस हो,और जब बंदा बड़ी मुसीबत में पड़ जाता है तो उस के दोनों हाथ,उस की दोनों आँखें और उस का दिल आकाश की ओर मुतवज्जेह होता है और वह अपनी फित्रत और अपनी ठीक ठाक पैदाइश के कारण तुरंत अपने रब से मदद और सहायता माँगता है.

अल्लाह ...यह ऐसा नाम है जो फित्रत में रचा बसा है इस लिये किसी स्पष्ट दलील की कोई आवश्यक्ता नहीं.

अक़्ली दलीलः

अल्लाह तआला के वजूद पर सब से महान और स्पष्ट दलीलें अक़्ली दलीलें हैं जिस का इन्कार हटधर्म के अतिरिक्त कोई नहीं करेगा और वह दलीलें यह हैः

1- हर मखलूक़ का कोई खालिक़ (पैदा करने वाला) है क्योंकि इस में कुछ लोग ऐसे हैं जौ पहले आये और कुछ ऐसे हैं जो बाद में,(जिस से पता चला कि)ज़रूर इन का कोई न कोई पैदा करने वाला है जिस ने इन्हें अदम से वजूद बखशा,क्योंकि कोई चीज़ खुद नहीं आ सकती और न ही अचानक प्रकट हो सकती है,इस लिये कि कोई चीज़ अपने आप को वजूद नहीं दे सकती क्योंकि कोई चीज़ अपने आप को पैदा ही नहीं कर सकती इस लिये कि वह अपने वजूद से पहले अदम अर्थात न है तो वह पैदा करने वाला कैसे हो सकता है?!क्योंकि हर आने वाली चीज़ को कोई लाने वाला होना चाहिये,इस लिये कि इस का वजूद इस ईजाद करने वाले के नेज़ाम,सामांजस्य स्थिरता पर अथवा कारण और कारण बनाने वाले एवं संसार के बीच जुड़ा हुआ लिंक है जिस से पता चलता है कि इन का एक दूसरे से लगाव है,जिस से यह स्पष्ट हो जाता है कि यह अचानक वजूद में नहीं आये हैं,हर मखलूक़ का एक खालिक़ है,और जब यह बात स्पष्ट हो गई कि यह मखलूक़ात न अपना वजूद बना सकती हैं और न ही यह अचानक वजूद में आ सकती हैं तो यह मुतय्यन हो गया कि इन का कोई पैदा करने वाला है और वह अल्लाह तआला ही है जो सारे जहानों का रब है,और अल्लाह तआला ने इस मानसिक और स्पष्ट सबूत को बयान किया है,फरमायाः {क्या ये बिना किसी पैदा करने वाले के खुद ही पैदा हो गये हैं या ये खुद पैदा करने वाले हैं“।}[अत्तूरः 35].

अर्थात वह बिना पैदा करने वाले के पैदा नहीं किये गये और न ही उन्होंने अपने आप को पैदा किया तो मुतय्यन हो गया कि उन का पैदा करने वाला अल्लाह तआला ही है,इसी लिये जब जुबेर बिन मुत्इम ने रसूलुल्लाह ﷺ को सूरे तूर पढ़ते हुये सुना और इस आयत पर पहुँचेः {क्या ये बिना किसी पैदा करने वाले के खुद ही पैदा हो गये हैं,या ये खुद पैदा करने वाले हैं,क्या उन्होंने ही आसमानों और ज़मीनों को पैदा किया है? बल्कि यह यक़ीन न करने वाले लोग हैं,या इन के पास तेरे रब के खज़ाने हैं?या(उन खज़ानों के) ये रक्षक हैं“।}[अत्तूरः 35-37].

और जुबेर उस समय मुश्रिक थे,उन्होंने कहाः «क़रीब था कि मेरा दिल उड़ने लगे।» (बुखारी).

2- अल्लाह तआला की ज़ाहिरी निशानियाँ उस के संसार और उस की मखलूक़ में, अल्लाह तआला ने फरमायाः: {आप कह दीजिये कि तुम खयाल करो कि क्या-क्या चीज़ें आकाशों और धरती में हैं"।}[यूनुसः 101].

इस लिये कि आकाशों और धरती में विचार करना इस बात को बयान करता है कि अल्लाह तआला ही पैदा करने वाला है, अथवा यह स्पष्ट होता है कि अल्लाह तआला ही रब है.एक दिहात के रहने वाले दिहाती से पूछा गयाः तुम ने किस प्रकार अपने रब को पहचाना? उस ने कहाः प्रभाव मार्च का और मेंगनी ऊँट के वजूद का प्रमाण है,और बुर्जों वाले आकाश,और गलियों वाली धरती और ठाठें मारता समुद्र क्या सुनने वाले और देखने वाले (अल्लाह) के वजूद पर प्रमाण नहीं हैं ?

पूरी इंसानियत गैब के परदों के सामने आजिज़ और अपूर्ण है अगरचे उन का अवर विज्ञान,ज़मीनी और भौतिकवादी ज्ञान कितना अधिक ही क्यों न हो जाये,और केवल अल्लाह तआला पर ईमान इस विवश को समाप्त करने के लिये काफी है

3-दुनियावी मामलों का इन्तेज़ाम और उस की मज़बूती,यह इस बात का प्रमाण है कि इसे चलाने वाला एक उपासक,एक बादशाह,और एक रब है,उस के अतिरिक्त सृष्टि का कोई रब नहीं है,और न ही उस के सिवा कोई उन का रब है,और जिस प्रकार दो पैदा करने वाले रब का वजूद जो दुनिया के लिये एक समान हो असम्भव है, इसी प्रकार दो माबूदों और दो उपासकों का पाया जाना असम्भव है,तो इस बात का ज्ञान कि संसार में दो एक जैसे बनाने वालों का पाया जाना असम्भव है, और यह फित्रत में रचा बसा हुआ है,और मानसिक तौर पर भी इस का व्यर्थ होना वाज़ेह है,तो इसी प्रकार दो उपासकों का पाया जाना भी असम्भव है।

शास्त्रानुसार प्रमाण (शरई दलील)

संपूर्ण शरीअतें पैदा करने वाले के वजूद और उस के ज्ञान की पूर्णता और उस की हिक्मत और दया पर प्रमाण हैं,क्योंकि ज़रूरी है कि इन शरीअतों का कोई बनाने वाला हो, और शरीअत बनाने वाला अल्लाह तआला ही है,अल्लाह तआला ने फरमायाः {हे लोगो! अपने उस पालनहार की इबादत करो जिस ने तुम को और तुम से पहले के लोगों को पैदा किया ताकि तुम परहेज़गार हो जाओ,जिस ने तुम्हारे लिये धरती को बिछौना और आकाश को छत बनाया, और आकाश से वर्षा की और उस से फल पैदा करके तुम्हें जीविका दी,अतः ये जानते हुये किसी को अल्लाह का शरीक न बनाओ"।}[अल बक़राः 20-21].

और संपूर्ण आसमानी किताबें इस की गवाही दे रही हैं.

हिस्सी दलीलः

अल्लाह तआला के वजूद पर वाज़ेह और स्पष्ट दलीलों में से अनुभवशक्ति (हिस्स) की दलील है जो ज़ाहिर है,और जिस का एहसास हर एक देखने वाला और ज्ञानचछु(बसीरत)वाला व्यक्ति कर सकता है,और उन में सेः

1- दुआओं का क़बूल करना हैः इन्सान अल्लाह तआला से दुआ करते हुये कहता हैः हे रब! और किसी चीज़ को मागँता है फिर उस की दुआ क़बूल की जाती है,और रब के वजूद पर यह हिस्सी दलील है,उस ने अल्लाह को पुकारा और अल्लाह तआला ने उस की दुआ क़बूल की,और उस ने यह चीज़ अपनी आँखों से देखी,इसी प्रकार हमारे सामने पहले और आज भी अधिक नमूने है जिस के बारे में हम सुनते हैं कि अल्लाह तआला ने उन की पुकार सुन ली,और यह वास्तविकता है जो पैदा करने वाले के वजूद पर हिस्सी प्रमाण है और इस प्रकार की अनेक मिसालें क़ुरआन में मौजूद हैं,उस में से यह है अर्थात अय्यूब अलैहिस्सलाम की मिसालः {और अय्यूब (की उस हालत को याद करो) जब कि उस ने अपने रब को पुकारा कि मुझे यह रोग लग गया है,और तू सब रहम करने वालों से अधिक रहम करने वाला है तो हम ने उस की (गुहार) सुन ली"।}[अलअंबियाः 83-84].

और इस के अतिरिक्त अधिकतर आयतें हैं.

2- मखलूक़ का मार्गदर्शन उन चीज़ों की ओर जिन में उन के जीवन का राज़ है,कौन है वह ज़ात जिस ने बच्चे को पैदाइश के समय उस की माँ की छाती से दूध पीने की रहनुमाई की? और किस ने ज़मीन के नीचे हुदहुद चिड़िया को ज़मीन के भीतर पानी पाये जाने की जगहें दिखाईं जब कि उस के सिवा कोई और न देख सका?! निःसंदेह वह अल्लाह है जिस ने कहा किः {हमारा रब वह है जिस ने हर एक को उस का खास रूप अता किया,फिर हिदायत भी दिया"।}[ताहाः 50].

इल्हाद(नास्तिकता) मानसिक रोग और विचार का दोष है.

3- वह निशानियाँ जो अंबिया और रसूलों को दे कर भेजी गईः अर्थाता वह मोजज़ात जिन के ज़रिये अल्लाह तआला ने अपने नबियों और रसूलों की मदद की और उन्हें दूसरे मनुष्यों के बीच चुना,हर नबी को अल्लाह तआला ने उस की क़ौम की ओर ऐसा मोजज़ा दिया जो इस बात को साबित करती थी कि जिन चीज़ों को देकर नबी भेजे गये एक उपासक, एक पैदा करने वाले की ओर से भेजे गये हैं जिस के अतिरिक्त कोई पालनहार नहीं और न ही उस के सिवा कोई सत्य उपासक.

3- एकेश्वरवादी व्यक्ति पर तौहीदे रुबूबियत का प्रभावः

1- हैरानी और शक से मुक्तिः वह व्यक्ति कैसे हैरानो परेशान और शक में पड़ सकता है जो यह जानता हो कि उस का एक पालनहार है, और वही सभों का पालनहार है, उसी ने उस को पैदा किया,उसे सुधारा,उसे सम्मान और प्रतिष्ठा दी, और उसे ज़मीन का खलीफा बनाया,आसमान और ज़मीन की सब चीज़ों को उस के वश में किया और उसे अपनी सब ज़ाहिरी और छिपी नेमतें दीं,अपने रब से वह संतुष्ट (मुतमइन) हुआ और उस की पनाह में आया,और यह समझ गया कि जीवन छोटा है जिस में अच्छाई बुराई के साथ,न्याय ज़ुल्म के साथ और स्वाद दर्द के साथ मिश्रित है.

और वह लोग जो अल्लाह तआला को रब नहीं मानते उस की मुलाक़ात को लेकर शक में पड़े हुये है उन का जीवन व्यर्थ है जिस में कोई आनंद नहीं,सारा जीवन परेशानी,हैरानी और लगातार ऐसे सवालों में घिरा हुआ है जिस का कोई जवाब नहीं,उन का कोई सहारा नहीं जिस की ओर वह पनाह ढूँढें,उन की बुद्विमŸा कितनी अधिक क्यों न हो फिर भी उन की बुद्वियाँ हैरानी,संदेह,परेशानी और चिंता में हैं,और यही दुनियावी अज़ाब और जहन्नम है जो सुबह शाम उन के दिलों को झुलसा रहे हैं।

2- मानसिक शांतिः शांति का केवल एक स्थान है और वह अल्लाह और प्रलोक पर ईमान लाना है... ऐसा सच्चा ईमान जिसे संदेह और नेफाक़ (कपटाचारी) खराब और बरबाद न कर सकें,यही वास्तविकता है और तारीख भी इस की गवाह है, अथवा हर देखने वाला और अपने अथवा दूसरों के साथ न्याय करने वाला व्यक्ति इसे महसूस करता है, हमें इस बात का ज्ञान हो गया कि अधिकतर चिंतित,परेशान और तंग अथवा बेवक़ूफी और बरबादी के एहसास में मुब्तला लोग ही ईमान और यक़ीन की निधि (नेमत) से महरूम हैं उन के जीवन में न तो कोई आनंद है और न ही कोई मज़ा अगरचे उन का जीवन लज़्ज़तों और आराम देने वाली चीज़ों से भरा पड़ा है क्योंकि वह इस के अर्थ को न जान सकते हैं और न ही उस के मक्सद को पहचान सकते हैं, और न ही जीवन के भेद को जान सकते हैं,जब बात यह है तो किस प्रकार उन के नफ्स को शांति और उन के सीने को सुकून मिल सकता है?! निःसंदेह यह शांति ईमान का फल है और तौहीद एक पविन्त्र पेड़ है जिस का फल अल्लाह की आज्ञा से हर समय खाया जाता है,यह आसमानी

इल्हाद(नास्तिकता) मानसिक रोग,विचार का दोष, दिल का अन्धकार (तारीकी) और जीवन की बरबादी है.

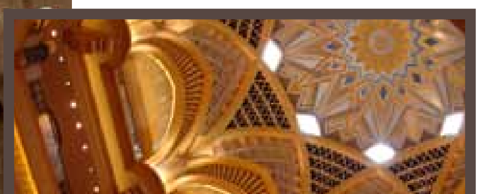

ठंडी हवा है जिसे अल्लाह तआला मोंमिनों के दिलों पर भेजता है ताकि जब लोगों के क़दम डगमगाने लगें तो वह जम जायें और जब लोग नाराज़ हों तो ये प्रसन्न रहें और जब लोग संदेह में पडे हों तो इन्हें यक़ीन हो और जब लोग वावेला करें तो यह धैर्य रखें और जब लोग गुमराह होने लगें तो ये सब्र के साथ जमे रहें.

यही वह शांति है जिस ने हिज्रत के दिन नबी ﷺके दिल को ढारस दी थी, जिस की वजह से न तो आप चिंतित हुये और न ही दुखी,न तो आप डरे और न ही भयभीत हुये,न आप के सीने में संदेह आया और न ही चिंता, अल्लाह तआला ने फरमायाः {अगर तुम उस (रसूल मुहम्मद) की मदद न करो तो अल्लाह ही ने उस की मदद की उस समय जब काफिरों ने उसे (देश से) निकाल दिया था,दो में से दूसरा जब कि वह दोनों गुफा में थे,जब ये अपने साथी से कह रहे थे कि फिक्र न करो अल्लाह हमारे साथ है"।}[अत्तोबाः 40].

आप के मिन्न अबूबक्र सिद्दीक़ ؓ पर ग़म और डर के बादल छागये लेकिन यह डर अपनी ज़ात के लिये नहीं था बल्कि नबी ﷺ और तौहीद की दावत के लिये था,यहाँ तक कि सिद्दीक़ ने जब दुश्मनों को देखा कि वह गार को घेरे हुये हैं तो कहाः «ऐ अल्लाह के रसूल! अगर इन में से किसी ने भी अपना पाँव देखा अर्थात सर झुकाया तो वे हमें अपने क़दमों के नीचे देख लेगा,तो आप ﷺ ने उन के दिल को सुकून पहुँचाने के लिये फरमायाः ऐ अबू बक्र तुम्हारा उन दो के बारे में क्या खयाल है जिन का तीसरा अल्लाह हो?!» (मुस्लिम),

और यह शांति अल्लाह की रूह है और ऐसा नूर है जिस की ओर आने से डरने वाले को आराम चिंतित को सुकून, दुखी को तसल्ली,थके हारे को विश्राम,कमज़ोर को शक्ति और असमंजस को हिदायत मिलती है.यह जन्नत की खिड़की है जिसे अल्लाह तआला अपने मोमिन बंदों पर खोलता है,उस से उस के लिये ठंडी ठंडी हवायें आती हैं और उस की चमक उन पर पड़ती है, और उस से महक और इत्र की खुशबू फूटती है,ताकि जो अच्छाई उन्होंने पहले भेजी है उस के बदले उन्हें कुछ आनंद चखाये,और जिन नेमतों का वह इन्तेज़ार कर रहे हैं उस का छोटा सा नमूना दिखाये,तो यह रूहें सुख, अनेक प्रकार के खाने अथवा सुरक्षा और शांति के मज़े लेंगे।

ईमान जीवन रक्षक नौका ह

जो अल्लाह को काफी समझे लोग खुद उस की ओर झुक जायेंगे

जब जब आप का लगाव अल्लाह तआला से कमज़ोर होगा तब तब आप खींच तान और वसवसों का शिकार बनेंगे.

3- अल्लाह पर भरोसा करनाः हर एक चीज़ अल्लाह के हाथ में है,और उसी में सेः लाभ और हानि भी है,अल्लाह तआला ही पैदा करने

वाला है,वही जीविका देने वाला,मालिक और इंतेज़ाम संभालने वाला है, आकाशों ओर धरती की कुंजियों का मालिक वही है, इस लिये कि जब मोमिन को इस बात का ज्ञान होगा कि उसे कोई भलाई,बुराई लाभ और हानि नहीं पहुँच सकती मगर जितना कि अल्लाह तआला ने उस के भाग में लिख दिया है,और जो कुछ अल्लाह ने लिख दिया है पूरी सृष्टि यदि उस के खेलाफ हो जाये तो कुछ नहीं कर सकती,उस समय मोमिन को विश्वास हो जायेगा कि केवल अल्लाह तआला ही अकेला लाभ और हानि का मालिक है,वही देने वाला भी है और रोकने वाला भी,और यह चीज़ हमें अधिक अल्लाह तआला पर भरोसा करने और तौहीद की महानता को स्वीकारने को अनिवार्य करती है,यही कारण है कि अल्लाह तआला उस बंदे की बुराई बयान करता है जो ऐसी चीज़ों की इबातदत करता है कि वे न तो उसे लाभ पहुँचा सकती हैं और न ही हानि और नही इबादत करने वाले के किसी काम आ सकती हैं,बरकत वाली है वह हस्ती जिस ने यह कहाः {आकाशों ओर धरती की कुंजियों का मालिक वही है,और जिन जिन लोगों ने अल्लाह की आयतों का इन्कार किया है वही नुक़सान उठाने वाले हैं"।}[अज़्ज़ुमरः 63].

4- अल्लाह की ताज़ीम करनाः और यह प्रभाव उस व्यक्ति के जीवन में ज़ाहिर है जो अल्लाह तआला पर ईमान लाता है, केवल उसी की इबादत और इरादा करता है, उसी के समीप अपनी भावनाओं को रखता है,और उसी से माँगता है,और जब मोमिन इस बात में विचार करता है कि आसमानों और ज़मीन की बादशाहत उसी के लिये है तो वह यह कहे बिना नहीं रह सकेगाः {मेरा रब हर चीज़ को अपने इल्म के दायरे में घेरे हुये है"।}[अल अन्आमः 80].

और कहेगाः {हे हमारे रब! तू ने यह सब बिना फायदे के नहीं बनाया"।}[आले इमरानः 191].

यह सारी चीज़ें इस बात का प्रमाण हैं कि दिल पैदा करने वाले पालनहार से जुड़ा हुआ है,और वह अल्लाह की प्रसन्ता के लिये मेहनत करता है, और इस बात की कोशिश में रहता है कि अल्लाह के क़ानून और उस के आदेश को सम्मान दे,और उन चीज़ों को अल्लाह का साझी न बनाये जो अपने लिये और दूसरों के लिये आसमान एवं ज़मीन में एक कण के भी मालिक नहीं हैं, और यह सब अल्लाह तआला के सम्मान के लिये है, और यह मोमिन के ऊपर तौहीदे रुबूबियत के प्रभाव का नतीजा है।

दिल की परेशानी अल्लाह तआला की ओर मुतवज्जेह होने से दूर होगी,और उस की घबराहट अकेले में उस के संग तअल्लुक़ जोड़ने से खत्म होगी, और उस का दुख रब को अच्छी तरह से जानने और उस के संग सच्चा सम्बंध जोड़ने से दूर होगा।

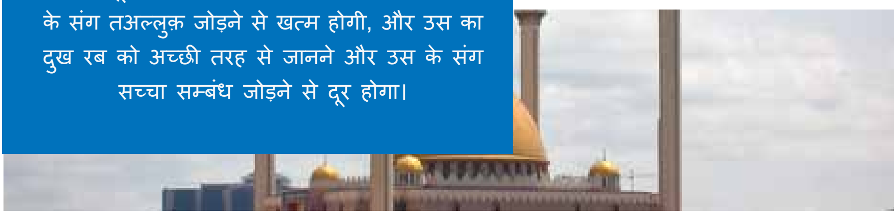

https://www.with-allah.com/hi

4- नास्तिकता (इल्हाद) और उस की खतरनाकी

पैदा करने वाले के वजूद का इन्कार करना नास्तिकता (इल्हाद) कहलाता है,चाहे वह बीमार सोच,बीमार निगाह की वजह से हो, या विमुखता,हठ और केवल ज़िद की वजह से हो,यह मानसिक रोग या गलत सोच और दिल के अंधकार का नतीजा है,यह नास्तिक को कमज़ोर निगाह और अन्धकारपूर्ण दिल बनाता है, जिस की वजह से वह केवल महसूस होने वाली साम्रगियों को देख और पहचान सकता है,फिर वह नास्तिकता वाली सोच और विश्वास को लोगों पर थोपता है,जिस की वजह से वह खुद बदबखत और भटक जाता है और यह विश्वास रखने लगता है कि इन्सान केवल एक तत्व(माद्दा) है जिस पर प्राकृतिक तत्व के क़ानून लागू किये जायेंगे,

और मानव के लिये यह खतरा है, इस प्रकार कि(नास्तिकता) उसे केवल एक तत्व और ऐसा सूखा समझदार बना देती है जिस में सुख,चैन और खुशी नाम की कोई चीज़ नहीं रह जाती है,नास्तिक का ईमान रब के वजूद पर नहीं होता, इस लिये वह बिना रब और उस के अज़ाब से डरे जब जो चाहे जैसा चाहे करता है, जो मानव की हलाकत और उस की बरबादी तक ले जाती है,जब कि ऐसा करना अल्लाह तआला का इन्कार और उस का हक़ दूसरों को देने जैसा है,यही कारण है कि नास्तिक विचारकों,ज्ञानियों और नास्कित कवियों ने अधिकतर आत्महत्यायें की हैं, इतिहास इस की गवाह है और तारीख में यह चीज़ें भरी पड़ी हैं अर्थात अध्ययनों से भी यह चीज़ साबित है,और

https://www.with-allah.com/hi

विश्व स्वास्थ्य संगठन (वॅ्भ) के दो विषेशज्ञों डाक्टर जोस मैनुएल और शोधकर्ता अलइसेंद्रा फिलिश्मान के अध्ययन में यह बात आई है कि आत्महत्या और धर्म के बीच गहरा सम्बंध है, उन्हों ने कहा कि अधिक आत्महत्या करने वाले नास्तिक ही हैं और इस की व्याख्या इस प्रकार की गई है:

धर्म अनुसार आत्महत्या की दर हर(100,000) पर इस प्रकार है

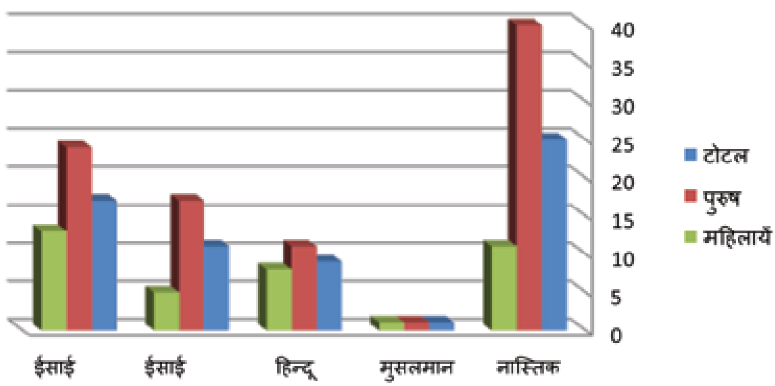

समीक्षा

1-जब अल्लाह के वजूद पर स्पष्ट प्रमाण हैं जिस की बुद्वि,प्रकृति,और शरीअत गवाह है फिर भी नास्तिक पाये जाते हैं,ऐसा क्यों?!

2- तौहीदे उलूहियत से पहले तौहीदे रुबीबियत को क्यों लोग महसूस करते हैं?

3- अल्लाह तआला के वजूद और उस के रब होने की कुछ उन दलीलों को गिनाइये जिसे रोज़ाना आप देखते हैं.

4- अल्लाह तआला की रुबीबियत के कुछ अर्थ बयान किजिये.

5- नास्तिकता और आत्महत्या के बीच क्या सम्बंध है और क्यों नास्तिकता आदमी को आत्महत्या के कगार पर लेजाती है?

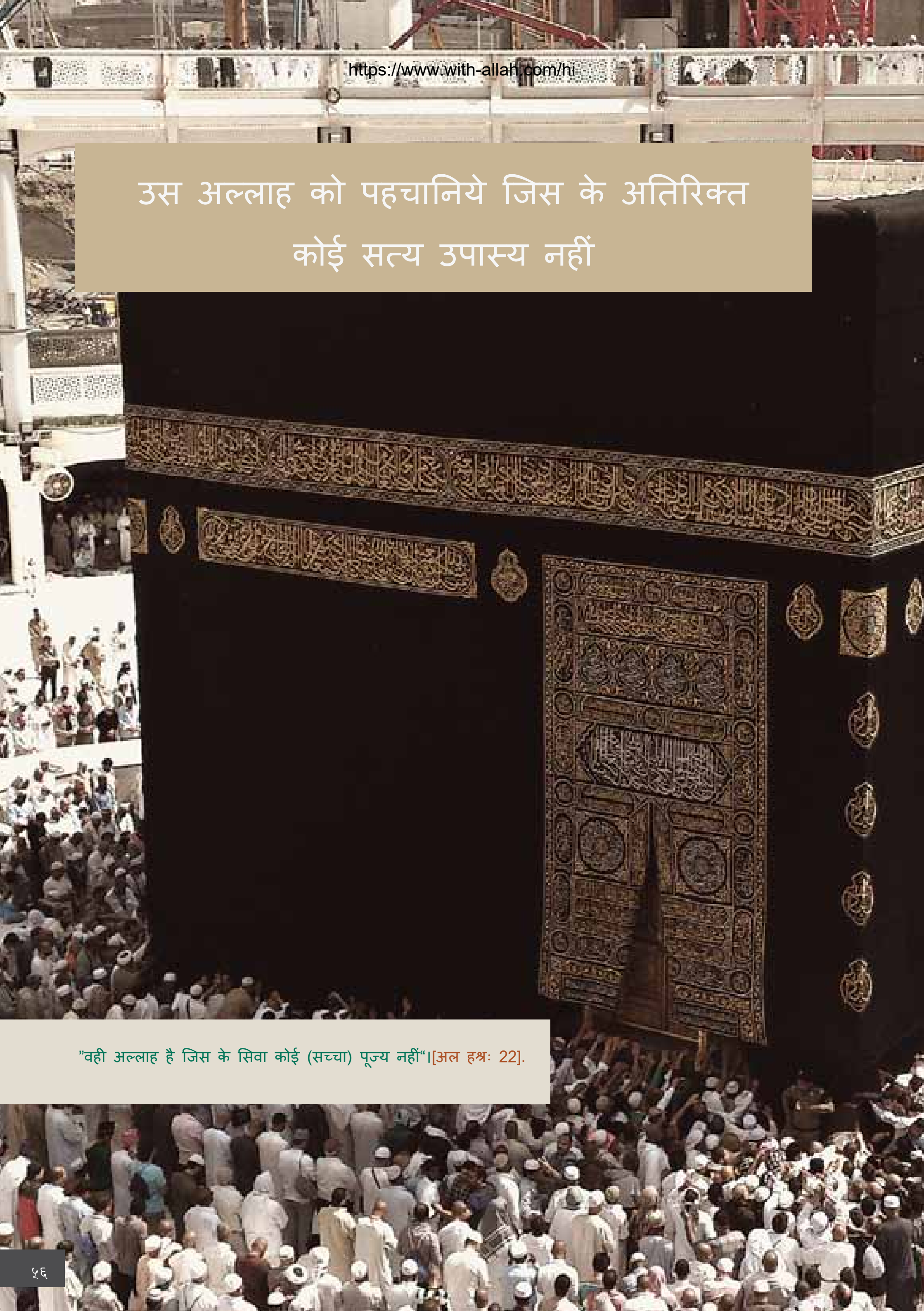

उस अल्लाह को पहचानिये जिस के अतिरिक्त कोई सत्य उपास्य नहीं

"वही अल्लाह है जिस के सिवा कोई (सच्चा) पूज्य नहीं"।[अल हश्रः 22].

https://www.with-allah.com/hi

उस अल्लाह को पहचानिये जिस के अतिरिक्त कोई सत्य उपास्य नहीं

"वही अल्लाह है जिस के सिवा कोई (सच्चा) पूज्य नहीं"। [अल हश्रः 22].

अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य उपास्य नहींः

यही तौहीद का शुद्व कलिमा है,यही सब से बड़ा कर्तव्य (फरीज़ा) है जिसे अल्ला तआला ने अपने बंदे पर फजऱ् किया है,और इस का स्थान दीन में ऐसे ही है जैसे शरीर में सिर का स्थान.

इलाह का अर्थ

इलाह

वह ऐसा उपास्य है जिस की बात मानी जाये,जो इबादत के योग्य है {और अल्लाह की इबादत करो,उस के साथ किसी को साझी न बनाओ"।} [अन्निसाः 36].

लाइलाहा इल्लल्लाह का अर्थः

अर्थात अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य उपास्य नहीं।

इस के दो बुनियदी रुक्न हैं

पहलाः अल्लाह के अतिरिक्त से सत्य उलूहियत की नफी

दूसराः केवल अल्लाह तआला के लिये सत्य उलूहियत का सबूत

https://www.with-allah.com/hi

”लइलाहा इल्लल्लाह“ की प्रतिष्ठा:

रसूलुल्लाह ﷺने फरमायाः «इस्लाम की बुनियाद पाँच चीज़ों पर हैः इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य उपास्य नहीं और मुहम्मद ﷺ अल्लाह के पैग़म्बर हैं,और नमाज़ क़ायम करना और ज़कात देना,और हज्ज करना और रमज़ान के रोजे रखना» (बुखारी).

और नबी ﷺ ने फरमायाः «सब से बेहतर बात जो मैंने और मुझ से पहले नबियों ने कही है वह यह है कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य उपास्य नहीं,वह अकेला है उस का कोई साझी नहीं,उसी के लिये बादशाहत है और उसी के लिये प्रशंसा है,और वह हर चीज़ पर शक्तिमान है» (त्रिमिज़ी).

और नबी ﷺ ने फरमायाः «निःसंदेह अल्लाह के नबी नूह न जब मौत की हालत में थे तो अपने बेटे से कहा,मैं तुझे लाइलाहा इल्लल्लाह कहने का आदेश देता हूँ,क्योंकि सातों आकाश और सातों ज़मीन को यदि एक पलड़े में रख दिया जाये और लाइलाहा इल्लल्लाह को एक पलड़े में रख दिया जाये तो लाइलाहा इल्लल्लाह का पलड़ा भारी पड़ जायेगा,और अगर सातों आकाश और सातों ज़मीन ऐस छल्ले की तरह हों जिन के द्वार या किनारों का पता न चले तो लाइलाह इल्लल्लाह इसे तोड़ देगा»(इमाम बुखारी ने अलअदबूल मुफ़्रद में रिवायत किया है).

लइलाहा इल्लल्लाह के कारण अल्लाह तआला ने स्वर्ग को सजाया है,और जहन्नम को भड़काया है,और अच्छाइयों अथवा बुराइयों का बाज़ार क़ायम किया है.

लाइलाहा इल्लल्लाह की शर्तें:

1- लाइलाहा इल्लल्लाह के अर्थ का ज्ञानः

और वह इस प्रकार कि इस शब्द (कलिमा) को पढ़ने वाला इस के अर्थ और जो उस में अल्लाह के अतिरिक्त से उलूहियत की नफी और अल्लाह तआला के लिये उलूहियत का सबूत है उसे जान ले, अल्लाह तआला ने फरमायाः {तो (हे नबी) आप यक़ीन कर लें कि अल्लाह के सिवा कोई (सच्चा) उपास्य नहीं“।}[मुहम्मदः 19].

2- यक़ीनः

अर्थात इस कलिमा के कहने वाले के दिल में इस कलिमा और जिस अर्थ को यह शामिल है उस विषय में संदेह न हो,अल्लाह तआला के इस फरमान के कारणःsa {ईमान वाले तो वे हैं जो अल्लाह पर और उस के रसूल पर ईमान लायें,फिर शंका संदेह न करें और अपने माल से और अपनी जान से अल्लाह के रास्ते में धर्मयुद्व करते रहें,यही सच्चे हैं“।}[अल हुज़ातः 15].

और नबी ﷺ ने फरमायाः «मैं इस बात की गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य उपास्य नहीं,और मैं अल्लाह का रसूल हूँ,जब बंदा अल्लाह से इस हाल में मिले कि इन दोनों कलिमों में इसे संदेह न हो तो वह स्वर्ग में प्रवेश करेगा» (मुस्लिम).

3- जिन चीज़ों का यह कलिमा तक़ाज़ा करे उसे दिल और ज़ुबान से स्वीकारनाः

और यहाँ पर स्वीकारने का अर्थ नकारने

https://www.with-allah.com/hi

और अहंकार का विपरित है, अल्लाह तआला ने फरमायाः {हम पापियों के साथ इसी तरह किया करते हैं,ये वह हैं कि जब उन से कहा जाता है कि अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं तो यह घमंड करते थे“।}[अस्साफ्फातः 34-35].

4- जिस पर यह कलिमा दलालत करे उस की पैरवी करनाः

अर्थात बंदा अल्लाह के आदेश का पालन करे और जिन चीज़ों से रोका है रुक जाये,अल्लाह तआला ने कहाः {और जो इन्सान अपने चेहरे को अल्लाह के ताबे कर दे और वह है भी परहेज़गार,तो बेशक उस ने मज़बूत कड़ा थाम लिया,सभी अमल का नतीजा अल्लाह की तरफ है“।}[लुक़्मानः 22].

निःसंदेह वास्तव में गुलामी दिल की गुलामी और उस की बंदगी है तो जिस ने दिल को अपना गुलाम बना लिया तो दिल उस का गुलाम होगा।

5- सच्चाईः

इस का अर्थ यह है जो इस कलिमा का इक़रार करे वह दिल से उस की पुष्टि(तस्दीक़) करे अर्थात जो जुबान पर है वही दिल में भी हो, अल्लाह तआला ने फरमायाः {और लोगों में से कुछ कहते हैं,हम अल्लाह पर और आखिरी दिन पर ईमान लाये हैं,लेकिन हक़ीक़त में वे ईमान वाले नहीं हैं,वह अल्लाह को और ईमान लाने वालों को धोका दे रहे हैं,और उन को समझ नहीं है“।}[अल बक़राः 8-9].

6- इख्लास

अर्थात इस कलिमा से अल्लाह के चेहरे का इरादा करे, अल्लाह तआला ने फरमायाः {उन्हें इस के सिवाय कोई हुक्म नहीं दिया गया कि केवल अल्लाह की इबादत करें उसी के लिये धर्म को शुद्व कर रखें एकेश्वरवादी के धर्म पर, और नमाज़ को क़ायम रखें और ज़कात देते रहें,और यही धर्म सीधी मिल्लत का है“।}[अल बय्यिनाः 5].

7- इस कलिमा, और इस कलिमा पर अमल करने वाले, और इस की शर्तों की पाबंदी करने वालों से प्रेम करना और जो इस कलिमा को तोड़ने (इन्कार करने) वाले हैं उन से नफरत करना, अल्लाह तआला ने फरमायाः {और कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अल्लाह के साझीदार दूसरों को ठहराकर उन से ऐसा प्रेम रखते हैं जैसा प्रेम अल्लाह से होना चाहिये और ईमान वाले अल्लाह से प्रेम में सख्त होते हैं“}[अल बक़राः 165].

जब जब दिल में अल्लाह तआला की मुहब्बत अधिक होगी उस की उबूदियत बढेगी और वह अल्लाह के अतिरिक्त से अधिक आज़ाद हो जायेगा।

यह ”लाइलाहा इल्लल्लाह“ का अर्थ है और वे (ऊपर) उस की वह शर्तें है जो अल्लाह के निकट बंदे की मुक्ति का कारण हैं.हसन बसरी से कहा गयाः कुछ लोग कहते हैंः जिस ने लाइलाहा इल्लल्लाह कहा वह जन्नत में दाखिल होगा,फरमायाः जिस ने लाइलाहा इल्लल्लाह कहा और उस के हक़ और फर्ज़ को निभाया वह जन्नत में दाखिल होगा।

लाइलाहा इल्लल्लाह का इक़रार उस व्यक्ति को लाभ नहीं पहुँचा सकता जो उस पर अमल न करे और न उस की शरतों का पालन करे,जिस ने इस कलिमा का ज़ुबान से इक़रार किया पर उस की दलालतों पर अमल न किया तो ज़ुबान से लाइलाहा इल्लल्लाह कहना उसे लाभ नहीं पहुँचा सकता यहाँ तक कि कथन के साथ अमल को मिलाये।

"लाइलाहा इल्लल्लाह" के नवाक़िज

1- शिर्क,और यहाँ शिर्क से मुरादः

बड़ा शिर्क है जो इस्लाम से बाहर कर देता है,और अगर उसी हालत पर मर गया तो उसे अल्लाह तआला क्षमा नहीं करेगा,और शिर्क कहते हैं अल्लाह तआला की उलूहियत,रुबीबियत और उस के अस्मा व सिफात में किसी को साझी मानना, अल्लाह तआला ने फरमायाः {बेशक अल्लाह अपने साथ शिर्क किये जाने को कभी भी माफ नहीं करेगा और इस के सिवाय को जिस के लिये चाहे माफ कर देगा और जिस ने अल्लाह के साथ शिर्क किया वह बहुत दूर बहक गया "।} [अन्निसाः 116].

किसी व्यक्ति के लिय यह जायज़ नहीं कि वह अल्लाह के अतिरिक्त किसी और को पुकारे और जिस दुआ की इजाज़त दी गई है उस का आदेश भी दिया गया है,और इस का अर्थ अल्लाह तआला के इस कथन से लिया गयाः "और अच्छे नाम अल्लाह के लिये ही हैं,इस लिये इन नामों से अल्लाह ही को पुकारो,और ऐसे लोगों से संबंध भी न रखो जो उस के नामों में टेढ़ापन करते हैं,उन लोगों को उन के किये की सज़ा ज़रूर मिलेगी"। [अल आराफः 180].

इमाम अबू हनीफा

और अल्लाह तआला ने फरमायाः {और बेशक तेरी तरफ भी और तुझ से पहले की तरफ भी वह्य की गई है कि अगर तू ने शिर्क किया तो बेशक तेरा अमल बर्बाद हो जायेगा और निश्चित रूप से तू नुक़सान उठाने वालों में से हो जायेगा,बल्कि तू अल्लाह ही की इबादत कर और शुक्रिया अदा करने वालों में से हो जा"।} [अज़्ज़ुमरः 65-66].

2- जो व्यक्ति अपने और अल्लाह के बीच किसी को वास्ता बना कर उन से दुआ करे और उन से शफाअत तलब करे,उन पर भरोसा करे और इबादत के ज़रिये उन की निकटता ढूँडे तो उस ने इस के ज़रिये लाइलाह इल्लल्लाह का खण्डन कर दिया.

3-: जिस ने मुश्रिकों को काफिर नहीं कहा अथवा उन के कुफ्र में संदेह किया,या उन के धर्म को सत्य माना,उस ने कुफ्र किया क्योंकि जिस इस्लाम को उस ने स्वीकारा है उस में वह संदेह करने वाला हुआ जब कि अल्लाह तआला इस्लाम के अतिरिक्त किसी अन्य धर्म से प्रसन्न नहीं हो सकता,तो जिस व्यक्ति ने उस आदमी के कुफ्र में संदेह किया जिस ने अल्लाह के अतिरिक्त की इबादत की,या इबादत की मामूली चीज़ भी उन की ओर फेरी,या यहूदो नसारा और मूर्ति की पूजा करने वालों के विषय में या उन के जहन्नमी होने के विषय में संदेह किया,या मुश्रिकीन के धर्मों और उन के उन कार्यों को सही माना जिन के कुफ्र की स्पष्ट दलील पाई जाती है तो उस ने कुफ्र किया।

4- जिस का यह विश्वास (एतक़ाद) हो कि नबी ﷺ के अतिरिक्त का तरीक़ा नबी के तरीक़े से अध्ािक अच्छा है,और उन के अतिरिक्त का हुक्म नबी के हुक्म से अति उत्तम है,तो उस ने कुफ्र किया जैसे वह व्यक्ति जो अपने क़ानूनों और क़बायली नियमों को शरीअते इस्लामिया के हुक्म से बेहतर समझता है,या यह विश्वास रखता है कि इस के ज़रिये भी फैसला करना जायज़ है या ये भी इस्लामी शरीअत के समान है तो यह सब अल्लाह तआला के इनकार समान है,अल्लाह तआला के कथन के कारणः {और जो अल्लाह की उतारी हुयी वह्य की बिना पर फैसला न करें वे पूरा और मुकम्मल काफिर हैं"।}[अलमायदाः 44].

और अल्लाह तआला का यह फरमानः {तो क़सम है तेरे रब की यह ईमान वाले नहीं हो सकते जब तक कि सभी आपस के इख्तिलाफ में आप को फैसला करने वाला न क़बूल कर लें,फिर जो फैसला आप कर दें उन से अपने दिलों में ज़रा भी तंगी और नाखुशी न पायें और फरमांबरदार की तरह क़बूल कर लें"।}[अन्निसाः 65].

5- जिस ने रसूल की लायी हुयी किसी भी चीज़ को नापसंद किया अगरचे वह उस पर अमल कर रहा है फिर भी उस ने कुफ्र किया,अगर किसी ने नमाज़ को नापसंद किया तो उस ने कुफ्र किया अगरचे वह नमाज़ पढ़ता हो,क्योंकि उस ने अल्लाह के आदेश से प्रेम नहीं किया,और "लाइलाहा इल्लल्लाह की शर्तों में से" अल्लाह तआला की ओर से आयी हुयी हर चीज़ से प्रेम करना है,और जिस ने रसूल ﷺ की लायी हुयी किसी भी चीज़ को नापसंद किया उस ने मुहम्मदुन रसूलुल्लाह (मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं) इस का हक़ अदा नहीं किया, क्योंकि इस का तक़ाज़ा है कि जिन चीज़ों को रसूल लाये हैं उसे खुशी खुशी मान लिया जाये।

6- जिस ने अल्लाह के दीन से सम्बंधित किसी भी चीज़ का या उस के बदले और दंड का मज़ाक़ उड़ाया,उस ने कुफ्र किया,क्योंकि उस ने इस दीन का और इसे लाने वाले का सम्मान नहीं किया,और इस लिये भी कि अल्लाह तआला ने उन मोमिनों को काफिर माना है जिन्हों ने रसूल और आप के सहाबा का मज़ाक उड़ाया और उन्हों ने (सहाबा के बारे में कहा): हमने अपने इन क़ारियों जैसा नहीं देखा जो पेटू,झूटे और दुश्मनों के सामने बुज़दिल हैं,तो अल्लाह तआला ने उन के विषय में यह उताराः {अगर आप उन से पूछें तो साफ कह देंगे कि हम तो यूँ ही आपस में हंस बोल रहे थे,कह दीजिये कि अल्लाह,उस की आयतें और उस का रसूल ही तुम्हारी हंसी मज़ाक के लिये बाक़ी रह गये हैं,तुम बहाने न बनाओ,बेशक तुम अपने ईमान लाने के बाद काफिर हो गये"।}[अत्तोबाः 65-66].

अल्लाह तआला ने इन्हें काफिर कहा जब कि वे इस से पहले मुस्लिम थे और इस पर अल्लाह तआला का यह कथन प्रमाण हैः {तुम अपने ईमान लाने के बाद काफिर हो गये"।}[अत्तोबाः 66].

उन के इस कथनी से पहले उन्हें मोमिन कहा, और उन्हें काफिर क़रार दिया जब कि उन्हों ने जो कहा था उसे खेल और हंसी मज़ाक के तौर पर कहा था, इस से इन का उद्देश्य (मक़सद) यह था कि यह रास्ते की कठिनाइयों से मुक्ति पा जायें।

7- जादूः

मंत्र,(खास प्रकार का) झाड़ फूँक और गाँठ लगाने का नाम है जो शरीरों अथवा दिलों पर प्रभाव डालता है,इस से क़त्ल,और पति एवं पत्नी के बीच अलगाव हो जाता है,यह

कार्य कुफ्र है,अल्लाह तआला ने कहाः {और वह निश्चित रूप से जानते हैं कि इस के लेने वाले का आखिरत में कोई हिस्सा नहीं है“।} [अल बक़राः 102].

अर्थात नसीब,और उस से पहले कहाः {वह दोनों किसी व्यक्ति को उस वक़्त तक न सिखाते थे जब तक कि वे यह न कह दें कि हम तो एक परिक्षा हैं,तू कुफ्र न कर“।}[अल बक़राः 102].

और नबी ﷺ ने फरमायाः «सात हलाक करने वाली चीज़ों से बचो, लोगों ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल! वे क्या हैं? आप ने फरमायाः अल्लाह के साथ साझी बनाना,जादू,किसी ऐसे व्यक्ति को नाहक़ क़त्ल करना जिस का क़त्ल अल्लाह तआला ने हराम किया है,सूद खाना,यतीम का माल खाना,(काफिरों से) लड़ाई के दिन पीठ फेरना और भोली भाली पाकदामन औरम पर तुहमत लगाना।» (बुखारी),

और नबी ﷺ ने फरमायाः «जिस ने किसी प्रकार की गाँठ लगाई, फिर उस में फूँक मारा तो उस ने जादू किया,और जिस ने जादू किया उस ने शिर्क किया,और जिस ने कोई चीज़ लटकाई उसे उस के हवाले कर दिया गया।» (नसाई).

और ज्योतिष और आकाशों से ज़मीनी घटनाओं का अनुमान लगाना भी जादू है,अबू दाऊद की रिवायत के कारण,इब्ने अब्बास रज़िअल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है,नबी ﷺ ने फरमायाः «जिस ने ज्योतिषी से ज्ञान प्राप्त किया उस ने जादू की एक शाखा सीखी,तो जितनी अधिक ज्योतिष सीखी उतना ही अधिक जादू सीखा।» (बैहक़ी),

और अल्लाह तआला ने फरमायाः {और जादूगर कहीं से भी आये कामयाब नहीं होता“।}[ताहाः 69].

और फेरना और झुकाना भी जादू है,अर्थात दो प्रेम करने वालों को एक दूसरे से फेर देना और दोनों को किसी और की तरफ झुका देना।

लाभदायक ज्ञान वह है जो बंदे को अल्लाह की तौहीद,और इन्सान की सेवा,अथवा उन के साथ भलाई करने पर उभारे.और हानिकार्क ज्ञान वह है जो बंदे को अल्लाह के साथ शिर्क करने और मानव को दुख देने और उन के साथ बुराई करने पर उभारे।

8- मुसलमानों के खेलाफ मुश्रिकों की सहायता और उन की मदद करना,और ये वही दोस्ती है जिस का बयान अल्लाह तआला के इस कथन में हैः {तुम में से जो कोई भी इन से दोस्ती करे तो वह उन में से है“}[अलमायदाः 51].

और वली (दोस्त बनना) और मुवालात(सहायता एवं मदद और मुहब्बत करने में) फक्र् है, मुवालात अर्थात सहायता एवं मदद करने से मुराद यहाँ पर झुकाव,साथी बनाना और मुहब्बत करना है,और यह बडे गुनाहों में से तो है लेकिन कुफ्र नहीं है लेकिन वली और ज़िम्मेदार बनने से मुराद मुसलमानों के खेलाफ दूसरों की सहायता करना और मुसलमानों के खेलाफ गैरों के साथ मिल कर मुनाफिक़ों की तरह धोका दही करना है,इस लिये दुनियावी मामलों में मुश्रिकों के वली बनने वाले व्यक्ति का मामला अधिक खतरनाक है।

9-जो व्यक्ति यह खयाल करे कि मुहम्मदﷺकी शरीअत हमारे ऊपर लागू नहीं है,हम उस से निकल सकते हैं,क्योंकि इस्लामी शरीअत जिसे देकर मुहम्मद ﷺ को भेजा गया यह सब शरीअतों पर ग़ालिब और उसे खतम करने वाली है,और अल्लाह तआला इस्लाम के अतिरिक्त किसी चीज़ को नहीं स्वीकारता,अल्लाह तआला ने फरमायाः {बेशक अल्लाह के पास दीन इस्लाम ही है“।}[आले इमरानः 19].

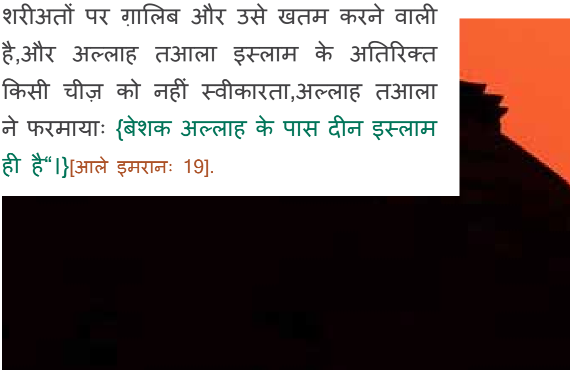

और अल्लाह तआला ने फरमायाः {और जो इस्लाम के सिवाय किसी दूसरे दीन की खोज करे उस का दीन क़बूल नहीं होगा और वह आखिरत में घाटा उठाने वालों में होगा"।}[आले इमरानः 85].

और अल्लाह तआला ने फरमायाः {कह दीजिये! अगर तुम अल्लाह से मुहब्बत करते हो तो मेरी इŸाबा करो,खुद अल्ला तुम से मुहब्बत करेगा और तुम्हारे गुनाह माफ कर देगा और अल्लाह अधिक क्षमा करने वाला और दयावान है,कह दीजिये कि अल्लाह और रसूल के हुक्म की पैरवी करो,अगर वह मुंह फेर लें तो बेशक अल्लाह काफिरों को दोस्त नहीं रखता"।}[आले इमरानः 31-32].

और नबी ﷺ ने फरमायाः «क़सम है उस ज़ात की जिस के हाथ में मुहम्मद की जान है इस उम्मत का कोई भी यहूदी और इसाई ऐसा नहीं जो मेरे विषय में सुने फिर वह बिना उन चीज़ों पर ईमान लाये मरजाये जिसे मैं देकर भेजा गया हूँ मगर वह जहन्नमी होगा» (मुस्लिम),

और इस की मिसालः कुछ जाहिलों का यह गुमान करना कि अवलिया को मुहम्मद की शरीअत से बाहर जाने की इजाज़त है तो यह वास्तविक कुफ्र अथवा इस्लाम से निकलना है।

अगर दिल अल्लाह की ओर मतवज्जेह और यकसू नहीं है और न उस के अतिरिक्त से विमुखता (एराज़) किये हुये है तो वह मुश्रिक होगा।

10- जिस ने अल्लाह के दीन से संक्षेप(इज्माली तौर) पर एराज़ किया और उस पर अमल नहीं किया तो उस ने कुफ्र किया,और जिस ने पूर्ण तरह से उस से एराज़ किया और जो उस के पास कुफ्र है उस को काफी समझा,और जब उसे इस्लाम या उस की तालीमात की ओर बुलाया जाये तो वह एराज़ करे और इनकार करे,या जान ले फिर उस पर अमल करने और उसे क़बूल करने से एराज़ करे तो उस ने कुफ्र किया।

यह तौहीद को तोड़ने वाली चीज़ें हैं,इस में इस बात से कोई फर्क़ नहीं पड़ता कि कहने वाला वास्तव में कह रहा है या मज़ाक़ अथवा डर से कह रहा है,जब कि वे इस में ज्ञान और जान बूझ कर पड़ें, सिवाय उस व्यक्ति के जो मजबूरे महज़ हो तो वह केवल उन्हें अपनी ज़ुबान से जवाब दे (दिल से नहीं) अल्लाह तआला के इस फर्मान के कारणः {मगर जिसे मजबूर किया जाये और उस का दिल ईमान पर क़ायम हो,लेकिन जो लोग खुले दिल से कुफ्र करें"}[अन्नहलः 106].

जिसे कुफ्र पर मजबूर किया गया फिर उस ने उस पर अपनी प्रसन्नता से अमल किया तो उस ने कुफ्र किया, और जिस ने अपनी मौत से बचने के लिये कुफ्र किया जब कि ईमान पर उस का दिल संतुष्ट है तो वह बच गया,और उस पर कुछ गुनाह नहीं है, अल्लाह तआला के इस फर्मान के कारणः {लेकिन यह कि उन के (डर से) किसी प्रकार की हिफाज़त का इरादा हो"}[आले इमरानः 28].

ज्ञान ऐसा पेड़ है जो अच्छे स्वभाव,नेक अमल, प्रशंसा,और अच्छी विशेषता का फल देता है,और जेहालत ऐसा पेड़ है जो हर प्रकार के बुरे स्वभाव और बुरी विशेषता का फल देता है।

समीक्षा

1- कलमये तौहीद " लाइलाह इल्लल्लाह" का अर्थ उस के अर्कान और उस की शर्तें क्या हैं?

2- कुछ ऐसे करतूत बताइये जो "लाइलाह इल्लल्लाह" के विपरित हैं और शायद तुम्हारे जीवन और तुम्हारे समुदाय में वे मौजूद भी हैं।

एकेश्वरवादी पर लाइलाइलाहा इल्लल्लाह की गवाही का प्रभावः

लाइलाइलाहा इल्लल्लाह की गवाही एकेश्वरवादी व्यक्ति को लाभ पहुँचाती है,और बंदे को पाको साफ करती है,उस के दिल में दिलों के आमालः जैसे प्रेम,डर,उम्मीद,भरोसा आदि की उपज करती है और उस के कार्यों और व्यवहार पर भी अच्छा प्रभाव डालती है,चाहे वे खास हों या आम,तो लाइलाइलाहा इल्लल्लाह की गवाही बंदे के तरीक़े,उस की सोच,उस के व्यवहार,और उस के दिल को बदल देती है, ताकि वह अल्लाह ही का हो कर रह जाये, इस से अल्लाह की इबादत का अर्थ भी साबित हो जायेगा,इबादत ऐसा जामे नाम है जो तमाम उन चीज़ों को शामिल है जिसे अल्लाह तआला पसंद करे चाहे वे कथनी हों या करनी, वाज़ेह तौर से हों या छिपे तौर से, अर्थात आमल और करतूत के एतबार से ज़ाहिर हों,और दिली एतबार से छिपे हुये हों,और इन प्रभाव की स्पष्टता निम्न लिखित हैः

प्रथम खंड दिलों पर भक्ति प्रभावः

और दिलों की इबादत का अर्थ अथवा उस की प्रतिष्ठा के विषय में हम उन दिली इबादतों की कुछ झलकियाँ दिखायेंगे जो लाइलाहा इल्लल्लाह की गवाही के प्रभाव में से हैंः

जो अल्लाह को पहचान लेगा उस से प्रेम भी करेगा।

1) प्रेमः

अल्लाह से प्रेम करने का अर्थः

अल्लाह से प्रेमः

अर्थात दिल का अल्लाह तआला से मानूस होना और उस की ओर झुकना और जो अल्लाह चाहे उस पर तुरंत हामी भरना,और दिल पर अल्लाह की याद का ग़ालिब होना।

अल्लाह से प्रेम करने की हक़ीक़त

अल्लाह की मुहब्बत का अर्थ उस की इबादत,विनम्रता,और उस के सम्मान से मुहब्बत करना,अर्थात मुहब्बत करने वाले के दिल में महबूब अल्लाह की महानता और उस का सम्मान हो,जो इस बात का तक़ाज़ा करे कि बंदा उस के आदेश का पालन करे और जिन चीज़ों से उस ने रोका है रुक जाये,और यही मुहब्बत ईमान और तौहीद की असल है,और इस की इतनी प्रतिष्ठायें हैं जिसे गिना नहीं जा सकता, और अल्लाह की मुहब्बत में से यह भी है कि उन जगहों,ज़मानों(समय) और लोगों अथवा कार्यों और कथनों आदि उन चीज़ों से प्रेम किया जाये जिन से अल्लाह तआला प्रेम करता है।

जैसा कि यह अनिवार्य है कि अल्लाह से प्रेम खालिस(शुद्व) अकेले अल्लाह के लिये हो,और यह फितरी मुहब्बत के विपरित नहीं है,जैसे बच्चे का अपने बाप से और बाप का अपने बच्चे से,

और शिक्षक का अध्यापक से और अध्यापक का शिक्षक से प्रेम करना,या जैसे खाने, पीने, शादी, पनहाव और दोस्तों इत्यादि से प्रेम करना ।

हाँ हराम मुहब्बत अल्लाह की मुहब्बत में शिर्क करना है,जैसे मुश्रिकों का अपने बुतों और अपने वलियों से मुहब्बत करना,या जिन चीज़ों को नफ्स महबूब रखे उसे उन चीज़ो पर मुक़द्दम रखना जिन्हे अल्लाह महबूब रखता है,या उन ज़मानों (समय) जगहों,और लोगों अथवा कार्यों और कथनों आदि उन चीज़ों से प्रेम करना जिन से अल्लाह तआला प्रेम नहीं करता है,और यह बर्बादी है,अल्लाह तआला ने फर्माया: {और कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अल्लाह के साझीदार दूसरों को ठहरा कर उन से ऐसा प्रेम रखते हैं जैसा प्रेम अल्लाह से होना चाहिये,और ईमान वाले अल्लाह से प्रेम में सख्त होते हैं"।}[अल बक़रा: 165].

अल्लाह तआला से मुहब्बत की प्रतिष्ठा:

1- यही असल तौहीद है,और तौहीद की रूह यह है कि अकेले अल्लाह तआला के लिये मुहब्बत को खालिस किया जाये,बल्कि यही वास्तविक इबादत है,और तौहीद उस समय तक पूरा नहीं होगा जब तक कि बंदे की मुहब्बत अपने रब के लिये पूरी न हो जाये और सब मुहब्बत की जाने वाली चीज़ों से आगे और उन पर ग़ालिब न आ जाये,और उन पर इस का हुक्म न चले,वह इस प्रकार कि जिन चीज़ों को बंदा महबूब रखता है उन्हें इस मुहब्बत के अधीन करे जिस में बंदे की खुशी और उस की कामयाबी छुपी हुयी है।

2- दुखों के समय मुहब्बत करने वाले को तसल्ली मिलती है,मुहब्बत करने वाला मुहब्बत की लज़्ज़त के कारण अपने ऊपर आने वाले दुखों को भूल जाता है,और उस के लिये परेशानियों का झेलना सरल हो जाता है।

मुहब्बत,भय,और आशा जैसी की जाने वाली अल्लाह की कोई इबादत नहीं है।

अल्लाह से मिलने का शौक़ ऐसी हवा है जो दिल पर चल कर दुनिया की चमक को समाप्त कर देती है।

3- पूर्ण नेमतें और अधिकतर प्रसन्नता: यह अल्लाह तआला की मुहब्बत के बिना प्राप्त नहीं हो सकती,तो दिल बेनियाज़ नहीं हो सकता, और उस की दोस्ती पूरी नहीं हो सकती और न वह आसूदा हो सकता है मगर अल्लाह की मुहब्बत से और उस की ओर मुतवज्जेह हो कर,अगर उसे मज़ा करने की सारी चीजें मिल जायें तो वह न तो मानूस होगा और न ही वह मुतमइन होगा मगर अल्लाह तआला की मुहब्बत से,अल्लाह तआला की मुहब्बत नफ्सों के सुकून का कारण है,और साफ सुथरे दिलों,पविन्न रूहों, पाकीज़ा अक़्लों के निकट अल्लाह तआला की मुहब्बत,उस की उनसियत और उस से मिलने के शौक से अधिक मीठी,लज़ीज़,पविन्न,खुश करने वाली और अधिक बेहतर कोई चीज़ नहीं है,और वह

मिठास जिसे मोमिन अपने दिल में महसूस करता है हर मीठी चीज़ से उत्तम है,और उसे जो मज़ा इस कारण हासिल होगा वह हर मज़े से अच्छा और हर एक लज़्ज़तों से बढ़ कर होगा। «तीन चीज़ें जिस के अन्दर पाई जायेंगी वह उन के ज़रिये ईमान की मिठास पालेगाः अल्लाह और उस के रसूल उस के निकट सब से अधिक प्रिय हों,आदमी किसी से मुहब्बत न करे मगहर अल्लाह तआला के लिये,और कुफ्र में लौटने को ऐसे ही नापसंद करे जब कि अल्लाह तआला ने उसे बचा लिया है जैसे वह आग में डाले जाने को नापसंद करता है।» (बुखारी,मुस्लिम,नसाई).

जिसे अल्लाह की मुहब्बत से सुकून और उनसियत न हो संसार में उस से अधिक कोई बदबख्त नहीं है.

अल्लाह की मुहब्बत प्राप्त करने वाले कारणः

हमारा रब जो सर्वशक्तिमान है वह उस से प्रेम करता है जो अल्लाह से प्रेम करता है और उस की निकटता ढूँडता है,और अल्लाह की मुहब्बत की प्राप्ति उस समय होगी जब बंदा अपने रब से हर एक चीज़ से अधिक प्रेम करे,अल्लाह की मुहब्बत हासिल करने के कारण विस्तार से इस प्रकार हैंः

1- क़ुरआने करीम की तिलावत गौरो फिक्र और उस के अर्थों और मतलब में विचार के साथ करना,जो व्यक्ति अल्लाह की किताब पर अमल करता है और उस की ओर ध्यान देता है तो उस के दिल में अल्लाह की मुहब्बत बैठ जाती है।

2- फर्ज़ नमाज़ों के बाद नफ्ल नमाज़ के ज़रिये अल्लाह की निकटता प्राप्त करना।

«मेरा बंदा नफ्लों के ज़रिये मेरी निकटता ढूँडता रहता है यहाँ तक कि मैं उस से मुहब्बत करने लगता हूँ और जब मैं उस से मुहब्बत करने लगता हूँ तो मैं उस का वह कान हो जाता हूँ जिस से वह सुनता है और उस की आँख हो जाता हूँ जिस से वह देखता है और उस का हाथ हो जाता हूँ जिस से वह पकड़ता है और उस का पैर बन जाता हूँ जिस से वह चलता है,और अगर वह मुझ से माँगे तो मैं अवश्य दूँगा,और अगर वह मेरी पनाह माँगे तो अवश्य मैं उसे पनाह दूँगा“।» (हदीसे कुदसी,बुखारी)

3- ज़ुबान,दिल और अमल से हर समय हर हाल में अल्लाह का ज़िक्र करना।

4- जिन चीज़ों को अल्लाह पसंद करता है उन्हें नफ्स की इच्छाओं और हवस पर तरजीह देना।

{अल्लाह उन से प्रेम करता है और वह अल्लाह से प्रेम करते हैं“।} [अल माइदाः 54].

5- दिल का अल्लाह तआला के नामों,उस की विशेषताओं का पढ़ना और मुताला करना अथवा उस के विषय में जानकारी प्राप्त करना।

6- अल्लाह तआला की भलाई,उस का एहसान, और उस की ज़ाहिरी और छिपी हुयी नेमतों को देखना।

7- पूर्ण प्रकार से दिल को अल्लाह के दानों हाथों के बीच विनय कर देना।

8- रात की अंतिम तिहाई में जब हमारा पालनहार निचले आसमान पर उतरता है उस समय अल्लाह तआला के साथ एकांत में होना,अल्लाह तआला के साथ तनहाई मे उस से गुप्तवार्ता (सरगोशी) करे,उस की किताब की तिलावत करे और अदब के साथ खड़े हो कर नमाज़ पढे फिर तोबा और क्षमा माँग कर उसे संपन्न करे।

9- (अल्लाह से) मुहब्बत करने वाले और सच्चों के संग बैठना,और उन की अच्छी बातों को ऐसे चुन लेना जैसे अच्छे फलों को चुन कर ले लिया जाता है,और उन के बीच चुप रहना,हाँ जब बोलने की आवश्यक्ता हो और यह स्पष्ट हो जाये कि यहाँ अधिक की गुन्जाइश और इस में लोगों के लिये लाभ है।

10- हर उन कारणों से दूर रहना जो दिल और अल्लाह के बीच आड़े आयें।

जब अल्लाह तआला बंदे से मुहब्बत करता है तो उस से बंदे को क्या लाभ मिलते हैः

जिस व्यक्ति से अल्लाह तआला मुहब्बत करता है उसे हिदायत देता है और उसे अपने क़रीब करता है,नबी ﷺ ने फरमायाः «अल्लाह तआला फरमाता हैः मैं अपने बंदे के साथ उस के गुमान अनुसार मामला करता हूँ,जब वह मुझे याद करता है तो मैं उस के साथ होता हूँ,अगर वह मुझे अपने दिल में याद करता है तो मैं भी उस को अपने दिल में याद करता हूँ,और अगर वह भरी जमात में याद करता है तो मैं उस से उत्तम जमात में याद करता हूँ,अगर वह मुझ से एक बालिश्त क़रीब होता है तो मैं उस से एक हाथ क़रीब होता हूँ और अगर वह मुझ से एक हाथ बराबर क़रीब होता है तो मैं उस से एक मीटर के बराबर क़रीब होता हूँ,और अगर वह मेरे पास चल कर आता है तो मैं उस के पास दौड़ते हुये चला आता हूँ» (बुखारी).

जब जब बंदा अपने रब से डरेगा अधिक हिदायत की ओर आगे बढ़ेगा,और जब जब अल्लाह तआला उस से प्रेम करेगा उस की हिदायत में बढ़ोतरी करेगा,और जब उसे हिदायत मिल जायेगी तो उस की परहेज़गारी भी बढ़ जायेगी।

जिस व्यक्ति से अल्लाह तआला प्रेम करता है धरती पर वह मक़बूल हो जाता हैः

अर्थात जिस बंदे से अल्लाह तआला मुहब्बत करता है वह लोगों में मक़बूल हो जाता है, लोग उस की ओर झुकते हैं,उस से प्रसन्न होते हैं, उस की प्रशंसा करते हैं,और काफिर के अतिरिक्त हर एक चीज़ उस से प्रेम करती है,क्योंकि वह अल्लाह ही से मुहब्बत नहीं करता तो वह अल्लाह के चहेतों से कैसे मुहब्बत करेगा?!रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमायाः «अल्लाह तआला जब किसी बंदे से प्रेम करता है तो जिब्रील को बुलाता है,और कहता हैः मैं फलाने से प्रेम करता हूँ तुम भी उस से प्रेम करो,फरमायाः कि जिब्रील उस से मुहब्बत करने लगते हैं फिर वह आसमान में पुकार के कहते हैः बेशक अल्लाह तआला फलाने से प्रेम करते हैं तुम भी उस से प्रेम करो,पस आसमान वाले उस से प्रेम करने लगते हैं,फरमायाः कि फिर धरती में उस के लिये मक़बूल (प्रिय) होना लिख दिया जाता है।» (मुस्लिम),

इसी प्रकार जब अल्लाह तआला किसी से प्रेम करता है तो उस की अच्छी तरह से देख भाल करता है,और हर चीज़ को अपनी पैरवी बना देता है,उस के लिये हर कठिनाई सरल कर देता है और दूर को क़रीब कर देता है,और उस पर दुनियावी मामलों को आसान बना देता है जिस की वजह से वह थकावट और परेशानी महसूस नहीं करता,अल्लाह तआला ने फरमायाः {बेशक जो ईमान लाये हैं और जिन्हों ने नेक अमल किया है उन के लिये अल्लाह रहमान मुहब्बत पैदा कर देगा"।}[मरयमः 96].

जिस से अल्लाह तआला प्रेम करता है अपनी संगति उस के साथ कर देता हैः जब अल्लाह तआला बंदे से मुहब्बत करता है तो वह उस के साथ होता है उस की हिफाज़त करता है और उस की देख रेख करता है और किसी ऐसे व्यक्ति को मुसल्लत नहीं करता जो उसे तकलीफ या उसे नुक्सान पहुँचायें,और हदीसे कुदसी में है,रसूलﷺने फरमायाः «बेशक अल्लाह तआला ने फरमायाः जो मेरे महबूब से दुश्मनी करे मैं उस के संग युद्ध छेड़ देता हूँ,फ्राइज़ के अतिरिक्त मेरी प्रिय चीज़ों में से «किसी एक चीज़ के ज़रिये जब बंदा मेरी निकटता प्राप्त करता है तो उस से अधिक प्रिय मेरे लिये कोई चीज़ नहीं है,मेरे बंदे नवाफिल के ज़रिये मेरी निकटता प्राप्त करने की कोशिश में लगा रहता है यहाँ तक कि मैं उस से मुहब्बत करने लगता हूँ,और जब मैं उस से मुहब्बत करने लगता हूँ तो मैं उस का वह कान बन जाता हूँ जिस से वह सुनता है,वह आँख बन जाता हूँ जिस से वह देखता है,वह हाथ बन जाता हूँ जिस से वह पकड़ता है और वह पैर बन जाता हूँ जिस से वह चलता है,अगर मुझ से माँगता है तो मैं उसे देता हूँ,और अगर मुझ से पनाह माँगता है तो मैं उस का अपनी पनाह में ले लेता हूँ,और मैं अपने फैसलों में से किसी भी चीज़ के करने उतना आगे पीछे नहीं होता जिस क़दर मोमिन बंदे की रूह निकालने में होता हूँ,क्योंकि वह मौत को अप्रिय रखता है,और मुझे उस को कष्ट पहुँचाना नापसंद है» (बुखारी)

सच्चे ईमान में खुशियों का जीवन और अधिक प्रसन्नतायें हैं,जैसे अल्लाह के साथ कुफ्र में रूहों की मौत है और दुख ही दुख है।

जिस से अल्लाह तआला मुहब्बत करता है उस की प्रार्थना स्वीकारता हैः अपने मोमिन बंदों से अल्लाह की मुहब्बत की दलीलों में से एक दलील यह है कि अल्लाह तआला उन की दलीलों को क़बूल करता है और जब वे आकाश की ओर हाथ उठा कर कहते हैंः हे हमारे रब तो उन पर अपनी नेमतों की वर्षा करता हैएअल्लाह तआला ने फरमायाः {और जब मेरे बंदे मेरे बारे में आप से सवाल करें तो कहदें कि मैं बहुत की क़रीब हूँ,हर पुकारने वाले की पुकार को जब कभी भी वह मुझे पुकारे मैं क़बूल करता हूँ,इस लिये लोगों को भी चाहिये कि वे मेरी बात मानें और मुझ पर ईमान रखें,यह उन की भलाई का कारण है"।} [अल बक़राः 186].

और सलमान फारसी ﷺ से रिवायत है,कहते हैंः रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमायाः «निःसंदेह अल्लाह तआला जीवित दाता है,जब बंदा उस की ओर अपने दोनों हाथ उठा कर माँगता है तो उन्हें खाली वापिस करने से वह लजाता है।» (त्रिमिज़ी).

जब अल्लाह तआला किसी बंदे से मुहब्बत करता है तो फरिश्तों को मुतय्यन कर देता है कि उस के लिये अल्लाह से क्षमा माँगें,फरिश्ते उस के लिये अल्लाह तआला से क्षमा माँगते हैं जिस से अल्लाह तआला मुहब्बत करता है और फरिश्ते उस के लिये अल्लाह तआला से दया माँगते हैं,अल्लाह तआला फरमाता हैः {अर्श के उठाने वाले और उस के आस पास के फरिश्ते अपने रब की तस्बीह तारीफ के साथ करते हैं और उस पर ईमान रखते हैं और ईमान वालों के लिये इस्तिगफार करते हैं,कि हमारे रब तू ने हर चीज़ को अपनी दया और ज्ञान से घेर रखा है तो तू उन्हें माफ कर दे जो माफी माँगे और तेरे रास्ते की पैरवी करे और तू उन्हें नरक के अज़ाब से भी सुरक्षित रख"।}[ग़ाफिरः 7].

जिस से अल्लाह तआला प्रेम करेगा उसे प्रलोक में अपनी जन्नत में रखेगा, जिस से अल्लाह तआला प्रेम करता है उस की उदारता उस पर इस प्रकार होगी जिस के विषय में कोई सोच भी नहीं सकता और न किसी के दिल में वह चीज़ आसकती है,अल्लाह तआला जिन से प्रेम करता है उन के लिये ऐसी जन्नत का वादा किया है जिस में वह सब होंगी जिस की लोग इच्छा करेंगे,जैसा कि हदीसे कुदसी में है,नबी ﷺ ने फरमायाः «अल्लाह तआला ने कहाः मैं ने अपने नेक बंदों के लिये ऐसी चीजें तय्यार की हैं जिन्हें न तो किसी आँख ने देखी होगी और न किसी कान ने सुना होगा और न ही किसी आदमी के दिल में खयाल आया होगा,अगर चाहो तो यह (कुर्‌आन की आयत) पढ़ लो» {कोई पराणी नहीं जानता जो कुछ हम ने उन की आँखों की ठंडक उन के लिये छिपा रखी है"।}(बुखारी).

दुनिया में मज़ा नहीं मिल सकता मगर अल्लाह तआला की मुहब्बत और उस की पैरवी कर के, और न ही जन्नत में मज़ा मिल सकता है मगर अल्लाह तआला के दीदार से और उसे देख कर के।

अल्लाह तआला का बंदे से मुहब्बत करने के फलों में से एक फल बंदे का अल्लाह तआला को (स्वर्ग में) देखना हैः

अल्लाह तआला अपने जिन बंदों से मुहब्बत करता है उन के सामने अपना नूर प्रकट करके ज़ाहिर होगा,तो लोगों ने उस से उत्तम कोई चीज़ देखी ही न होगी,जैसा कि रिवायत में है कि नबी ﷺ ने चैदहवीं की चाँद की ओर देख कर फरमायाः

और अल्लाह तआला फरमाता हैः {क़रीब है कि आकाश अपने ऊपर से फट पड़े और सारे फरिश्ते अपने रब की तस्बीह अपने रब की प्रशंसा के साथ बयान कर रहे हैं और धरती वालों के लिये क्षमा याचना कर रहे हैं,खूब समझ रखों कि अल्लाह ही माफ करने वाला और दया करने वाला है"।}[अश्शूराः 5].

जब अल्लाह तआला किसी बंदे से प्रेम करता है तो उसे नेक काम पर जमा देता हैः रसूलुल्लाहﷺ ने फरमायाः «जब अल्लाह तआला किसी बंदे के साथ भलाई का इरादा करता है तो उसे लोगों में प्रिय बना देता है, पूछा गया प्रिय बना देता है इस का क्या अर्थ ? फरमायाः अल्लाह तआला उस की मौत से पहले उस पर भलाई के कामों को सरल कर देता है, फिर उस पर उसे जमाये रखता है।» (अहमद).

जब अल्लाह तआला किसी बंदे से प्रेम करता है तो मरते समय उस की सुरक्षा करता हैः

जब अल्लाह तआला किसी बंदे से प्रेम करता है तो मरते समय उस की सुरक्षा करता है और मरते समय उसे शांति प्रदान करता है और उसे हक़ पर जमाये रखता है,अल्लाह तआला अपने फरिश्तों को उस के पास भेजता है जो उस की जान को सरलता से निकालते हैं और मौत के समय उसे (ईमान पर) जमाये रखते हैं और उसे जन्नत की खुशखबरी सुनाते हैं,अल्लाह तआला ने फरमायाः {बेशक जिन लोगों ने कहा कि हमारा रब अल्लाह है फिर उसी पर जमे रहे उन के पास फरिश्ते आते हैं कि तुम कुछ भी भयभीत और दुखी न हो उस जन्नत की खुशखबरी सुन लो जिस का तुम से वादा दिया गया है"।}[फुस्सिलतः 30].

जब अल्लाह तआला अपने बंदे से प्रेम करेगा तो उसे हमेशा जन्नत में रखेगाः

«निःसंदेह तुम अपने रब को उसी प्रकार देखोगे जैसे तुम इस चाँद को देख रहे हो,तुम्हें उस के देखने में कोई परेशानी नहीं होगी,अगर तुम इस की ताक़त रख सको कि सूरज निकलने और सूरज डूबने से पहले वाली नमाज़ों को फौत होने न दो तो अवश्य ऐसा करो अर्थात इन नमाज़ों को न छोड़ो,फिर आप ﷺ ने क़ुरआन की ये आयत पढ़ी»: {और अपने रब की पविन्नतागान तारीफ के साथ सूरज निकलने से पहले भी और डूबने से पहले भी करें"।}(बुखारी).

मुहब्बत के विषय में नियम और अलर्टः

1- अल्लाह तआला का किसी बंदे से प्रेम करने का यह अर्थ नहीं है कि उस पर मुसीबतें और आज़माइशें नहीं आयेंगीः रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमायाः «निःसंदेह बड़ा बदला बड़ी आज़माइश से मिलता है,और जब अल्लाह तआला किसी बंदे से मुहब्बत करता है तो उन्हें आज़माता है,तो जो प्रसन्न हुआ उस के लिये प्रसन्नता है और जो नाराज़ हुआ उस के लिये अप्रसन्नता है।» (त्रिमिज़ी)

अल्लाह तआला बंदे को अनेक प्रकार की आज़माइशों में डालता है ताकि उसे गुनाहों से पाक साफ कर दे और उस के दिल को दुनियावी कामों से खाली कर दे,अल्लाह तआला ने कहाः {"और बेशक हम तुम्हारी परिक्षा लेंगे ताकि तुम में से जिहाद करने वालों और सब्र करने वालों को देख लें,और तुम्हारी हालतों की भी जाँच कर लें"। [मुहम्मदः 31].

और अल्लाह तआला ने फरमायाः {और हम किसी न किसी तरह तुम्हारा इम्तेहान ज़रूर लेंगे,दुश्मन के डर से,भूक प्यास से,माल व जान,और फलों की कमी से,और सब्र करने वालों को खुशखबरी दे दीजिये,उन्हें जब कभी भी कोई कठिनाई आती है तो कहा करते हैं कि हम तो खुद अल्लाह के लिये हैं और हम उसी की ओर लौटने वाले हैं,यही हैं जिन पर उन के रब की रहमत और नवाज़िशें हैं और यही लोग सच्चे रास्ते पर हैं"।}[अल बक़राः 155-157].

2- बंदा जब अपने रब की नाफरमानी करता है तो मुहब्बत में कमी आ जाती है,और उस की पूर्णता खतम हो जाती है,ईमान की तरह मुहब्बत की असल और पूर्णता है,गुनाहों के एतबार से पूर्णता में कमी आती है,और जब बंदा संदेह और बड़े कपटाचार (नेफाक़) के दायरे में आ जाता है तो असल चली जाती है, बल्कि पूर्ण रूप से खतम हो जाती है,तो जिस के दिल में अल्लाह तआला की मुहब्बत नहीं होगी वह व्यक्ति काफिर,मुर्तद और पक्का मुनाफिक़ होगा,दीन में उस का कुछ हिस्सा बाक़ी नहीं रह जायेगा,अलबŸा गुनहगारों के विषय में यह नहीं कहा जायेगा कि उन के अन्दर अल्लाह की मुहब्बत नहीं है बल्कि यह कहा जायेगा कि इन के दिलों में अल्लाह की मुहब्बत अधूरी है,इसी को देखते हुये उन से मामला भी किया जायेगा,नबी ﷺ ने फरमायाः «यदि तुम गुनाह नहीं करोगे तो अल्लाह तआला ऐसी क़ौम को पैदा करेगा जो गुनाह करेंगे फिर अल्लाह तआला उन्हें क्षमा करेगा।» (मुस्नदे अहमद)

3- अल्लाह तआला की मुहब्बत उस प्राकृतिक मुहब्बत के विपरित नहीं है जिस की ओर नफ्स का झुकाव होता है जैसे खाना पीना,महिलायें अदि,नबी ﷺ ने फरमायाः «मेरे लिये दुनिया की दो चीज़ें महिलायें और खुशबू प्रिय बना दी गई हैं।» (अहमद),

"असली आज़ादी दिल की है जो शिर्क और इच्छाओं अथवा संदेह से आज़ाद हो,और असल बंदगी दिल की बंदगी है"

तो यहाँ दुनिया में कुछ चीज़ें ऐसी हैं जिन की मुहब्बत शिर्क नहीं है,क्योंकि नबी ﷺ ने उन से मुहब्बत की है,इस लिये इन्सान के लिये जायज़ है कि वह दुनियावी चीज़ों से मुहब्बत करे जब तक कि वे चीज़ें हराम न हों।

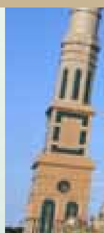

4- जिसने किसी से अल्लाह जैसी मुहब्बत की उस ने शिर्क किया,अल्लाह तआला फरमाता हैः {और कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अल्लाह के साझीदार दूसरों को ठहरा कर उन से ऐसे प्रेम रखते हैं जैसा प्रेम अल्लाह से होना चाहिये और ईमान वाले अल्लाह से प्रेम में सख्त होते हैं,काश कि मूर्तिपूजक जानते जब कि अल्लाह के अज़ाबों को देख कर सभी ताक़त अल्लाह ही को है और अल्लाह सख्त अज़ाब देने वाला है"।}[अल बक़राः 165].

नबी ﷺ ने फरमायाः «निःसंदेह अल्लाह के निकट सब से प्रिय कार्य अल्लाह के लिये मुहब्बत करना और अल्लाह के लिये नफरत करना है»(अहमद).

और आयत में उस व्यक्ति के लिये सखत धमकी है जिस का किसी से मुहब्बत करना इबादत और सम्मान के एतबार से अल्लाह की तरह हो,

अल्लाह तआला ने फरमायाः {कह दीजिये कि अगर तुम्हारे बाप,तुम्हारे बेटे और तुम्हारे भाई और तुम्हारी बीवियाँ और तुम्हारे वंश और कमाया धन और वह तिजारत जिस की कमी से तुम डरते हो और वे घर जिन्हें तुम प्यारा रखते हो यह तुम्हें अल्लाह और उस के रसूल और अल्लाह की राह में जिहाद से अधिक प्यारे हैं,तो तुम इन्तेज़ार करो कि अल्लाह तआला अपना अज़ाब ले आये"।}[अŸौबाः 24].

और आयत में उस व्यक्ति के लिये सखत धमकी है जिस के निकट ये आठ चीज़ें अल्लाह तआला से अधिक प्रिय हों,और अनस رضي الله عنه से रिवायत है रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमायाः «तुम में से से कोई उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक मैं उस के निकट उस की अवलाद,उस के बाप और सब लोगों से अधिक प्रिय न हो जाऊँ» (इब्ने माजा).

5- मोमिनों को छोड़ कर मुश्रिकों के प्रति वफादारी और प्यार जताना यह अल्लाह की मुहब्बत के विपरित हैः मुश्रिक के शिर्क और उस के (झूटे) दीन के कारण,अल्लाह के लिये मुहब्बत करना और अल्लाह के लिये नफरत करना ईमान का महान तथ्य (असल) है,अल्लाह तआला ने फरमायाः {मोमिनों को चाहिये कि ईमान वालों को छोड़ कर काफिरों को अपना दोस्त न बनायें,और जो ऐसा करेगा वह अल्लाह की किसी पक्ष में नहीं,लेकिन यह कि उन के किसी तरह की हिफाज़त का इरादा हो"।} [आले इमरानः 28].

अल्लाह तआला ने मोमिनों को काफिरों के संग सहकारिता (मुवालात) से मना किया है और यह स्पष्ट किया है कि जो ऐसा करेगा उसे अल्लाह तआला की मिन्नता से कुछ नहीं मिलेगा,मिन्न से सहकारिता और दुश्मन से भी सहकारिता दोनों एक दूसरे के विपरित हैंः {लेकिन यह कि उन के किसी तरह की हिफाज़त का इरादा हो"।} [आले इमरानः 28].

और अल्लाह तआला ने उन से सहकारिता की अनुमति दी है जब कि इस बात का डर हो कि बिना सहकारिता के वे मुसलमानों को ठीक से रहने नहीं देंगे,तो उस समय ज़ाहिरी तौर पर उन से घुल मिल जाना जायज़ है जब कि दिल ईमान और काफिरों

की घृणा से संतुष्ट हो,जैसा कि अल्लाह तआला ने फरमायाः {उस के सिवाय जिसे मजबूर किया जाये और उस का दिल ईमान पर क़ायम हो"।} [अन्नहलः 106].

प्यार की चमक

जब हमारे नबी को दुनियावी जीवन और अल्लाह तआला से मुलाक़ात के बीच चुनने को कहा गया तो आप ने फरमायाः «बल्कि मुझे तो ऊपर वाले रफीक़ (अल्लाह तआला) से मिलना है» (अहमद),

आप ने अल्लाह तआला की मुहब्बत और उस की मुलाक़ात को चुना और उसे प्रमुखता दी और दुनिया की हवस,आराम और उस की लज़्ज़तों की मुहब्बत पर मुक़द्दम किया।

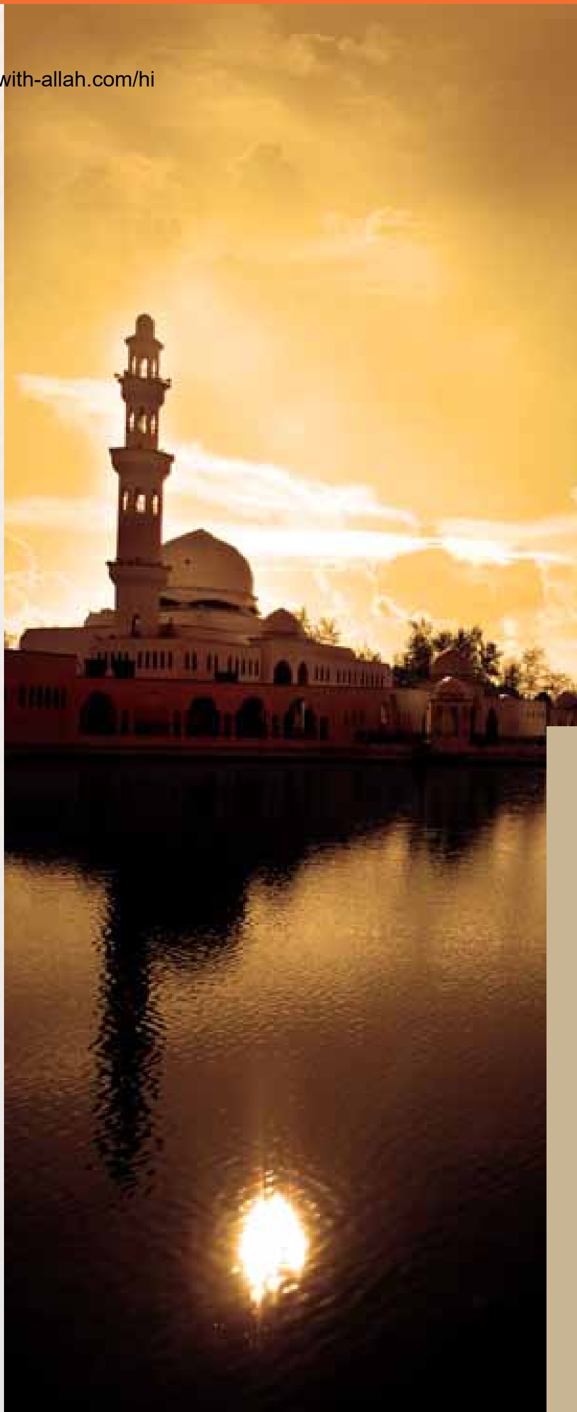

अल्लाह तआला की मुहब्बत की निशानियों में से उस का अधिकतर ज़िक्र करना और उस से मिलने की इच्छा करना,जो किसी से मुहब्बत करता है उसे अधिकतर याद करता है और उस से मिलने को पसंद करता है ।

अल रुबय्य बिन अनस

https://www.with-allah.com/hi

समीक्षाः

1- मुहब्बत किसे कहते हैं?

2- अल्लाह तआला से मुहब्ब्त का जो प्रभाव आप पर और आप के जीवन पर हुआ है उसे गिनाइये.

3- क्या यह संभव है कि बिना अल्लाह तआला से डर और आशा के केवल उस की इबादत उस से प्रेम कर के की जाये ? जो भी कहें उस पर पैग़म्बरों के अमल से दलील दें.

4- जब अल्लाह तआला बंदे से प्रेम करे तो क्या प्राप्त होगा?

5- अल्लाह तआला के नामों,उस की विशेषताओं और उस की मुहब्बत के बीच संबंधों के विषय में जो कुछ आप जानते हैं उस की व्याख्या कीजिये।

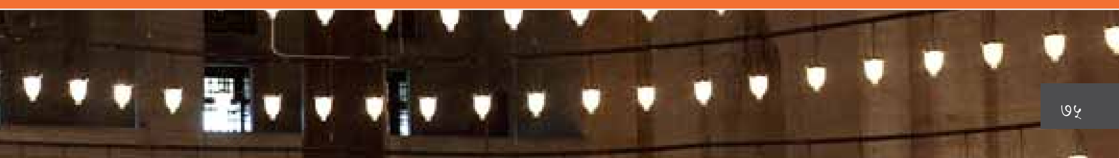

2-आशाः

नबी ने फरमायाः "सरलता पैदा करो कठिनाई में न डालो, खुशखबरी सुनाओ नफरत न फैलाओ" (बुखारी)

उस(आशा) का अर्थ

आशा अर्थातः

अल्लाह तआला के वजूद,उस की कृपा,उस की दया को महसूस करना,उस की उदारता और उस के एहसानात से खुश होना और उस पर भरोसा करना,वह उभारने वाला है दिलों को अल्लाह और उस की जन्नत की ओर उभारता है,अल्लाह तआला ने फरमायाः {और जो भी कोई बुराई करे या खुद अपने ऊपर ज़ुल्म करे,फिर अल्लाह से क्षमा माँगे तो अल्लाह को क्षमा करने वाला,दया करने वाला पायेगा"।} [अन्निसाः 110].

आशा की क़िस्में:

आशा तीन प्रकार के हैं,उन में दो अच्छे हैं और एक बुरा और धोका हैः

1- उस व्यक्ति की आशा जो अल्लाह की रोशनी में अल्लाह की पैरवी करे,वह अल्लाह के फल (सवाब) की आशा करे।

2- उस व्यक्ति की आशा जो गुनाह करके तोबा करले,वह अल्लाह तआला से क्षमा,गुनाहों के मिटाने,उसे दरगुज़र करने और उसे छुपाने की आशा करे।

3- उस व्यक्ति की आशा जो कोताही,बुराई और गुनाहों में हद से बढ़ जाये और बिना अमल के अपने रब की दया और क्षमा की आशा करे!! यह धोका,तमन्ना,और झूटी आशा है इसे कभी भी अच्छी उम्मीद नहीं कह सकते,और मोमिनों की उम्मीद केवल उम्मीद नहीं है बल्कि उस में अमल मिला हुआ है,अल्लाह तआला ने फरमायाः {बेशक जिन्होंने ईमान क़बूल किया और हिजरत की और अल्लाह की राह में जिहाद किया वही अल्लाह की रहमत की उम्मीद रखते हैं,और अल्लाह बड़ा बख्शने वाला और रहम करने वाला है"।}[अल बक़राः 218].

आशा के दरजेः

आशा के अनेक दरजे और मरतबे हैं जो एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति के लिये ऊँचे और बुलंद होते हैं और यह मरतबे इस प्रकार हैंः

1. ऐसी आशा जो इबादत में प्रयास करने पर उभारेएऔर इबादत करने वाले के दिल में आनंद पैदा करेएअगरचे वह इबादत कठिन और मुश्किल ही क्यों न हो जिस की वजह से वह गुनाहों और बुराइयों से बचे।

2. मेहनती लोगों की आशा उन चीज़ों के छोड़ने में जिन से उन के नफ्स मानूस हैंएऔर जो उन की

आदत में से हैं,और उन्हें उन चीज़ों से फेर दें जो उन के रब और उन के पैदा करने वाले को प्रिय हैं,और (उन चीज़ों को अपनायें) जो उन के दिलों को अल्लाह तआला के लिये एकजुट करदें।

3-दिलों के रब की आशा करनाः अर्थात पैदा करने वाले से मिलने की आशा,जो अल्लाह तआला से मिलने और केवल उसी से दिली लगाव रखने पर उभारे,यह आशा सब से बेहतर और सर्वोच्च प्रकार की आशा है,अल्लाह तआला ने फरमायाः {तो जिसे भी अपने रब से मिलने की उम्मीद हो उसे चाहिये कि नेकी के काम करे और अपने रब की इबादत में किसी को भी शरीक न करे"।}[अल कहफ़ः 110].

और अल्लाह तआला ने फरमायाः {जिसे अल्लाह से मिलने की उम्मीद हो तो अल्लाह का मुक़र्रर किया हुआ समय ज़रूर आने वाला है,और वह सुनने वाला सब कुछ जानने वाला है"।} [अल अनकबूतः 5].

जिसे किसी चीज़ की आशा होगी वह उसे माँगेगा।

आशा का तअल्लुक अल्लाह तआला,उस के नामों और उस की विशेषताओं से हैः

आशा करने वाला व्यक्ति (अल्लाह तआला) की आज्ञापालन पर पाबंदी करेगा,ईमान के तक़ाज़ों पर अमल करेगा,वह अल्लाह तआला से इस बात की उम्मीद रखेगा कि वह उसे न भटकाये, और उस के अमल को क़बूल करे, उसे रद्दी की टोकरी में न डाले,और उस के अज्रो सवाब को कई गुना बढ़ाये,तो बंदा उन ज़रियों को ढूँडता है जिन की वह शक्ति रखता है,वह अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं के ज्ञान की उम्मीद करता है,वह ये जानता है कि उस का मामला उस दया करने वाले के साथ है जो प्रेम करने वाला,आभारी,करम करने वाला,अधिक देने वाला,क्षमा करने वाला और नरमी करने वाला है,तो ये इस दुनिया में भयभीत है पर सर्वशक्तिमान रब से मुलाक़ात के समय सेफ्टी की आशा करता है।

आशा के फलः

1- आशा उम्मीद करने वाले के भीतर अच्छे कर्मों और नेक अमल के प्रयास को बढ़ाता है।

2- आशा करने वाला व्यक्ति नेकी के कामों पर पाबंदी करता है,हालात चाहे जिस प्रकार बदल जायें अथवा तंग हो जायें।

3- आशा करने वाला व्यक्ति अल्लाह की ओर मुतवज्जेह होता है,उस से सरगोशी करता है,और माँगने में नरमी दिखाता और गिड़गिड़ाता है।

4- आशा करने वाला व्यक्ति बंदगी,निर्धनता और अल्लाह तआला के समीप आवश्यक्ता को ज़ाहिर करता है,और वह अल्लाह तआला के फज़्ल और उस के एहसान से पलक झपकने के बराबर भी बेनियाज़ नहीं होता।

5- आशा करने वाले व्यक्ति को अल्लाह तआला के वजूद और उस की उदारता का यक़ीन होता है,अल्लाह तआला सब से अधिक दानी और अधिकतर देने वाला है,वह इस बात को पसंद करता है कि उस के बंदे उस से गिड़गिड़ा कर माँगें,और उस से आशा रखें।

6- आशा बंदे को अल्लाह तआला की मुहब्बत की चैखट पर डाल कर उसे मुहब्बत के कमाल (पूर्णता) तक पहुँचा देती है,जब जब उस की आशा बढ़ेगी और जिस की वह आशा रखता है उसे मिल जायेगी तो अपने रब के लिये उस की मुहब्बत,शुक्र और प्रसन्नता में बढ़ोतरी हो जायेगी,और ये बंदगी के तक़ाज़ों और उस के अर्कान में से है।

आशा करने वाला हमेशा अल्लाह तआला से उम्मीद करता है,उस से डरता है और अल्लाह तआला के साथ अच्छा गुमान करते हुये अपने रब की कृपा की उम्मीद रखता है।

मोमिन ने अपने रब के साथ अच्छा गुमान किया तो उस ने अच्छा अमल भी किया,और धर्मभ्रष्ट ने अपने रब के साथ बुरा गुमान किया तो उसने बुरा अमल भी किया।

आप की जानकारी के लिये,अल्लाह तआला के साथ अच्छा गुमान करने में से है कि अल्लाह तआला उसे बर्बाद नहीं होने देगा जो उस की ओर पनाह ढूँडेगा।

7- आशा बंदे को अल्लाह तआला का शुक्र अदा करने के लिये उभारती है,क्योंकि नेमतों के कारण शुक्र अदा करने का जो हक़ बनता है उस की ओर ये प्रेरित करती है और यही बंदगी का सारंश (खुलासा) है।

8- अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं का ज्ञान प्राप्त होता है,अल्लाह तआला दया करने वाला,करम करने वाला,दानशील,क़बूल करने वाला,सुन्दर और बेनियाज़ है,अल्लाह की ज़ात पविन्न और अधिकतर महान है!

9- आशा उस चीज़ की प्राप्ति का कारण है जिसे बंदा हासिल करना चाहता है,और मतलूब के प्राप्त होने से बंदे का हौसला बढ़ता है,अथवा उसे अधिक माँगने और अल्लाह की ओर मुतवज्जेह होने पर सहायता मिलती है,इस प्रकार हमेशा बंदे के ईमान में बढ़ोतरी होती रहती है और वह अल्लाह का क़रीबी बन जाता है।

10- क़यामत के दिन मोमिन उन चीज़ों के हासिल होने से खुश होंगे जिस की वे उम्मीद करते हैं जैसे अल्लाह की प्रसन्नता,स्वर्ग,और उस का दीदार,और यह सब बंदों की उम्मीद और अल्ललाह से डरने के बक़द्र होगा।

आशा के अहकाम और उस पर चेतावनियाँः

1- मोमिन के निकट डर आशा को और आशा डर को अनिवार्यकर्Ÿाा (मुस्तलज़म) है,इसी लिये ऐसी जगहों में आशा करना अच्छा समझा जाता है जहाँ पर डर का पाया जाना अच्छा समझा जाता हैः

{तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्ला की बरतरी पर यक़ीन नहीं करते“।}[नूहः 13].

और अल्लाह तआला ने फरमायाः ¿”ईमान वालों से कह दें कि वह उन लोगों को क्षमा कर दिया करें जो अल्लाह के दिनों की उम्मीद नहीं रखते“}[अल जासियाः 14].

अर्थाथ अपने ऊपर आने वाले अल्लाह के अज़ाब से नहीं डरते जैसा कि इन से पहली उम्मतों में अज़ाब आया और उन्हें हलाक और बर्बाद कर दिया गया।

2- आशा दवा है हम उस समय उस के मुहताज होते हैं जबः

- जब नफ्सों पर मायूसी छा जाये फिर इबादत को छोड़ दिया जाये।

- जब आदमी पर इस क़दर डर ग़ालिब हो जाये कि वह स्वयं को और अपने घर वालों को हानि पहुँचाने लगे,अर्थात उस का डर शरई हद को पार कर जाये,तो उस समय उसे बदलने की और एक ऐसी चीज़ की आवश्यक्ता है जो उसे संतुलित (मोतदिल) करे और वह आशा है जो मोमिन की सामान्य स्तिथि होती है।

3- आशा मायूसी की विपरित है,और मायूसी

कहते हैं अल्लाह की रहमत के छूट जाने को याद किया जाये,और फिर अल्लाह तआला से ये नेमत माँगने में दिली तौर से न तलब किया जाये, नाउम्मीदी गुमराही और कुफ्र का कारण होती है, अल्लाह तआला फरमाता हैः {और अल्लाह की रहमत से मायूस न हो,बेशक अल्लाह की रहमत से वही मायूस होते हैं जो काफिर होते हैं"।}[यूसुफः 87].

अगर तारजू लाया जाये और मोमिन के डर और आशा को तौला जाये तो दोनों बराबर होंगे।

eमैं इस बात को पसंद नहीं करता कि मेरा हिसाब मेरे पिता लें,मेरा रब मेरे पिता से बेहतर है

इमाम सुफ्यान सौरी

इबादत बिना डर और उम्मीद के पूरी नहीं हो सकती,डर के कारण मना की हुयी चीज़ों से रुकेगा और आशा के कारण अधिकतर अच्छा कर्म करेगा।

इमाम इब्ने कसीरः

समीक्षाः

1- क्या अल्लाह से उम्मीद करना अमल की ओर ले जाता है? इस विषय में अल्लाह तआला के इस कथन की रोशनी में बयान करें:

"तो जिसे भी अपने रब से मिलने की उम्मीद हो उसे चाहिये कि नेकी के काम करे और अपने रब की इबादत में किसी को भी शरीक न करे"।

{अल कहफः 110}.

2- क्या अल्लाह तआला से आशा करने का अर्थ उस से न डरना है?या उस से डरने से लाज़िम आता है कि उस से आशा न की जाये?

3- अल्लाह तआला के उन नामों और विशेषताओं को बयान कीजिये जो अल्लाह तआला से आशा करने को अनिवार्य करती हैं।

https://www.with-allah.com/hi

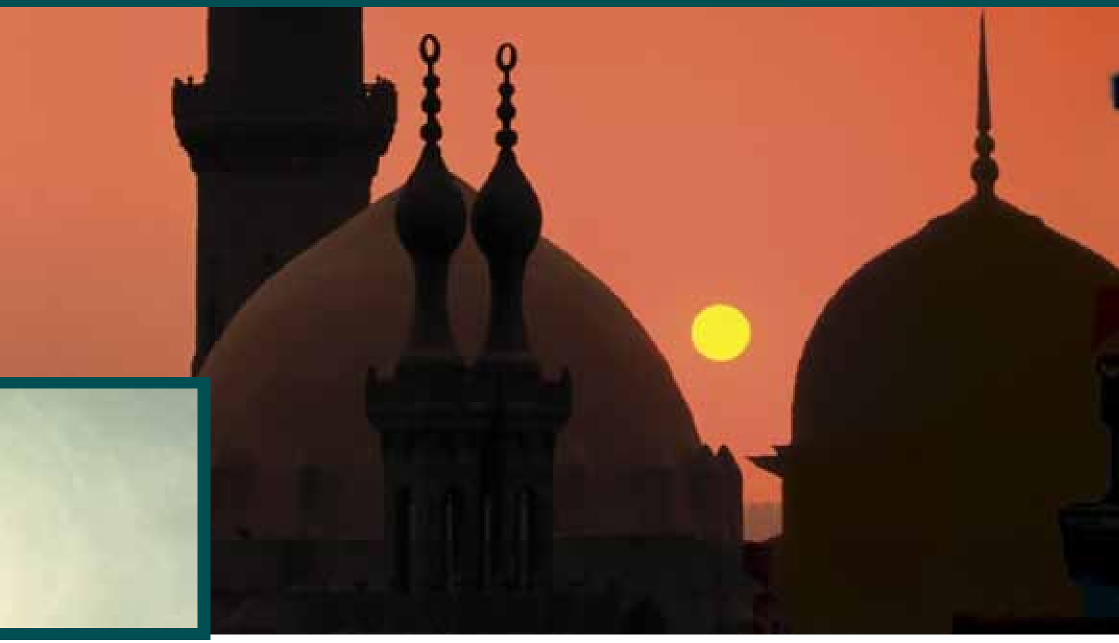

3) डरः

"और अल्लाह तआला अपने आप से डरा रहा है"। {आले इमरानः 30}.

इस का अर्थ

अल्लाह तआला से डरने का अर्थ महान दिली इबादतें हैं,अल्लाह तआला ने फरमायाः {यह शैतान ही है जो अपने दोस्तों से डराता है,इस लिये तुम उन से न डरो और मुझ से ही डरो अगर तुम ईमान वाले हो"।}[आले इमरानः 175].

और इस आयते करीमा में अकेले अल्लाह तआला से डरने की अनिवार्यता है, और इस बात की ताकीद है कि यह ईमान के लिये आवश्यक है,तो जिस क़दर बंदे का ईमान होगा उसी क़दर वह अल्लाह तआला से डरेगा।

और मोमिनों की माँ आयशा रज़िअल्लाहु अन्हा से रिवायत है,कहती हैंः «मैंने नबी ﷺ से इस आयत के विषय में पूछाः {और जो लोग देते हैं,जो कुछ देते हैं और उन के दिल काँपते हैं"।} [अल मूमिनूनः 18] क्या ये वह लोग हैं जो शराब पीते हैं और चोरी करते हैं?! फरमायाः नहीं ऐ सिद्दीक़ की बेटी,परन्तु ये वह लोग हैं जो रोज़ा रखते हैं, नमाज़ पढ़ते हैं,सदक़ा देते हैं और वह इस बात को लेकर भयभीत रहते हैं कि कहीं इन की ये इबातदतें क़बूल न की जायें।» (त्रिमिज़ी),

अल्लाह तआला से डरने के कारण (असबाब):

1- सर्वशक्तिमान अल्लाह की इज़्ज़त और उस का सम्मान करना,क्योंकि उन्हें अल्ला तआला,उस के नामों और उस की विशेषताओं का ज्ञान है। {अपने रब से जो उन के ऊपर है कपकपाते रहते हैं"।}[अन्नहलः 50].

2- इस बात से डरना कि कहीं उन का ठिकाना उस चीज़ की ओर न बने जिसे यह अप्रिय रखते हैं,जैसे नर्क का दुखदाई अज़ाब जो बुरा ठिकाना है।

3- उन वाजिबात को लेकर कोताही का एहसास करना जो उस के ऊपर हैं, इस बात को जानते हुये कि अल्लाह तआला सब कुछ जानता है,देखता है और उस पर शक्ति रखता है,गुनाह को इस निगाह से न देखें कि वह छोटा है बल्कि इस निगाह से देखें कि वह कितना महान है जिस की नाफरमानी की जारही है।

4- अल्लाह तआला के उस कलाम में विचार करना जो वईद और धमकी से भरा हुआ है उस व्यक्ति के लिये जो अल्लाह की नाफरमानी करे, और उस की शरीअत से मुँह मोड़े,और उस रोशनी को छोड़ दे जिसे उस की ओर भेजा गया ।

5- अल्लाह तआला और उस के रसूल ﷺ के कलाम में विचार करना और उस के रसूल की सीरत में ग़ौरो फिक्र करना।

6- अल्लाह तआला की महानता में विचार करना,क्योंकि जो उस में विचार करेगा उसे अल्लाह तआला की विशेषताओं और उस की बड़ाई का ज्ञान होगा,और जिस का दिल अल्लाह तआला की महानता की गवाही देगा उसे अल्लाह तआला से डरने का एहसास हो जायेगा और निःसंदेह वह अल्लाह तआला से भयभीत रहेगा, अल्लाह तआला ने फरमायाः {और अल्लाह तआला अपने आप से डरा रहा है"।} [आले इमरानः 28].

और अल्लाह तआला ने फरमायाः {और उन लोगों ने जैसा सम्मान अल्लाह का करना चाहिये था नहीं किया,सारी धरती क़यामत के दिन उस की मुठी में होगी और सारा आकाश उस के दायें हाथ में लपेटे हुये होंगे"।}[अज़्ज़ुमरः 67].

अल्लाह तआला से डरना उस के विषय में ज्ञान को अनिवार्य है,और उस के विषय में ज्ञान का होना उस से डरने को अनिवार्य (लाज़िम) है और उस से डरना उस की फरमाँबरदारी को लाज़िम है।

7- मौत और उस की सखती के विषय में विचार करना और इस बात का ज्ञान होना कि इस से किसी को छुटकारा नहीं हैः {कह दीजिये कि जिस मौत से तुम भाग रहे हो वह तो तुम तक ज़रूर पहुँचेगी"।}[अल जुमाः8].तो यह अल्लाह तआला से डर को वाजिब करता है,नबी ﷺ ने फरमायाः «लज़्ज़तों को चूर चूर करने वाली चीज़(मौत) को अधिकतर याद करो,क्योंकि किसी ने जीवन की तंगी में इसे याद नहीं किया मगर वह उस पर कुशादा हो गई,और जिस ने कुशादागी में याद किया उस पर तंग होगई» (तबरानी).

8- मरने के बाद,क़ब्र अथवा उस की हौलनाकी के विषय में विचार करना,नबी ﷺ ने फरमायाः «मैंने तुम्हें क़ब्रों की ज़्यारत से रोका था तुम उस की ज़्यारत करो क्योंकि ये तुम्हें दुनिया से बे रग़बत करती है और आखिरत की याद दिलाती है» (इब्ने माजा),

और हज़्रत बुरा رضي الله عنه से रिवायत है,कहते हैंः «हम रसूलुल्लाह ﷺ के साथ एक जनाज़े में थे,आप एक क़ब्र के किनारे बैठे,और आप रोने लगे यहाँ तक कि मिट्टी गीली हो गई,फिर फरमायाः ऐ मेरे भाइयो इस जैसी चीज़ के लिये तय्यारी कर लो» (इब्ने माजा),

और अल्लाह तआला ने फरमायाः {ऐ लोगो अपने रब का भय रखो और उस दिन का भय रखो जिस दिन पिता अपने पुत्र को कोई लाभ न पहुँचा सकेगा और न पुत्र अपने पिता को तनिक भी लाभ पहुँचाने वाला होगा,याद रखो अल्लाह का वादा सच्चा है,देखो तुम्हें साँसारिक जीवन धोके में न डाले और न धोकेबाज़ तुम्हें धोके में डाल दे"।}[लुक़मानः 33].

9- छोटे छोटे गुनाहों के अंजाम के विषय में विचार करना जिसे लोग हक़ीर समझते हैं,जब कि नबी ﷺ ने उस की मिसाल एक ऐसे क़ौम से दी है जिन्हों ने एक घाटी में पड़ाव डाला,उस के बाद एक व्यक्ति इस लकड़ी को ढूँड लाया और दूसरा दूसरी लकड़ी ले आया यहाँ तक कि उन के पास इतनी लकड़ी हो गई जिस से वे अपनी रोटी पका लें,और यहाँ पर लकड़ियों और आग जलाने और गुनाहों और उन चीज़ों के बीच सह-संबंध है जो गुनहगारों के चमड़ों के जलने का कारण बनेंगीः {जब उन की खालें (चर्म) पक जायेंगी"।} [अन्निसाः 56].

10- बंदे को यह जान लेना चाहिये कि उस के और उस की तोबा के बीच अचानक मौत आड़ बन सकती है,और उस समय अफसोस से कोई लाभ न होगा, अल्लाह तआला ने फरमायाः {यहाँ तक कि जब उन में से किसी की मौत आने लगती है तो कहता है कि हे मेरे रब मुझे वापस लौटा दे“।}[अल मूमिनूनः 99].

और अल्लाह तआला ने फरमायाः {और तू उन्हें इस दुख और मायूसी के दिन का डर सुना दे“।}[मरयमः 39].

11- बुरे अंत के बारे में विचार करना, अल्लाह तआला ने फरमायाः {फरिश्ते उन के मुंह और कमर पर मार मारते हैं।}[अल अनफालः 50].

12- ऐसे लोगों के साथ बैठो जो तुम्हारे अन्दर अल्लाह का डर और खौफ बिठा दें, अल्लाह तआला ने फरमायाः {और अपने आप को उन्हीं के साथ रखा करें जो अपने रब को सुबह और शाम पुकारते हैं और उसी के मुंह की चाहना करते हैं“।}[अल कहफः 28].

अल्लाह तआला से डरना ये दो चीज़ों से संबंधित हैः

क- उस के अज़ाब से डरनाः

अर्थात जिन्हें उस के साथ शिर्क करने,उस की नाफरमानी करने और उस से डरने और फरमाँबरदारी से दूर हो जाने पर अज़ाब की धमकी दी है।

ख- अल्लाह तआला से डरनाः

अर्थात ज्ञानियों और अल्लाह को पहचानने वालों का डरः {और अल्लाह तआला अपने आप से डरा रहा है“।}[आले इमरानः 28].

और जब जब अल्लाह तआला का ज्ञान बढ़ेगा,उस का डर भी अधिक होगा,अल्लाह तआला ने फरमायाः {अल्लाह से उस के वही बंदे डरते हैं जो जानकार हैं“।}[फातिरः 28].

क्योंकि जब वे अपने को और उस के नामों अथवा विशेषताओं को अच्छी तरह जान लेंगे तो वे डर को तरजीह देगें अर्थात प्रभाव दिल पर होगा फिर उस का प्रभाव अंगों पर भी ज़ाहिर होगा।

जब डर दिलों में बस जायेगा तो दिल से उस की इच्छाओं को जला देगा और उस से दुनिया को दूर कर देगा।

अल्लाह तआला से डरने के फलः

क- दुनिया में

1-यह धरती में सशक्तिकरण और ईमान अथवा आत्मविश्वास के कारणों में से है क्योंकि जब आप को वह चीज़ मिल जायेगी जिस का आप से वादा किया गया है तो भरोसा अधिक बढ़ जायेगा, अल्लाह तआला ने फरमायाः {और काफिरों ने अपने रसूलों से कहा कि हम तुम्हें देश से निकाल देंगे या तुम फिर से हमारे धर्म में लौट आओ,तो उन के रब ने उन की ओर वह्य भेजी कि हम उन ज़ालिमों का ही नाश कर देंगे,और उस के बाद हम खुद तुम्हें धरती पर बसायेंगे,यह है उन के लिये जो मेरे सामने खड़े होने से डर रखें और मेरी चेतावनी से डरते रहें“}[इब्राहीमः 13-14].

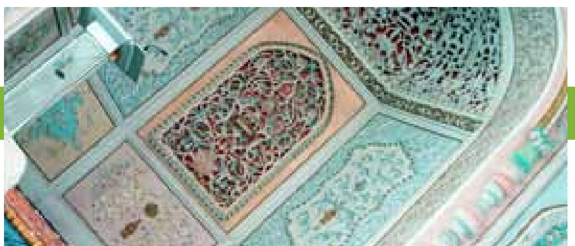

2- नेक अमल और उस में इखलास अथवा दुनिया में उस के बदले कुछ न लेने पर उभारेगा,जिस की वजह से प्रलोक में उस के सवाब में कुछ कमी न होगी,अल्लाह तआला ने फरमायाः {हम तो तुम्हें केवल अल्लाह की खुशी के लिये खिलाते हैं,तुम से न बदला चाहते हैं और न शुक्रिया,बेशक हम अपने रब से उस दिन का डर रखते हैं जो तंगी और कठोरता वाला होगा"।} [अल इन्सानः 9-10].

और अल्लाह तआला ने फरमायाः {उन घरों में जिन के ऊँचा करने का और वहाँ अपना नाम लिये जाने का अल्लाह ने हुक्म दिया है वहाँ सुबह और शाम अल्लाह की तस्बीह बयान करते हैं,ऐसे लोग जिन्हे तिजारत और खरीदो फरोख्त अल्लाह के ज़िक्र से और नमाज़ क़ायम करने और ज़कात अदा करने से ग़ाफिल नहीं करती,उस दिन से डरते हैं जिस दिन बहुत से दिल और बहुत सी आँखें उलट पलट हो जायेंगी"।} [अन्नूरः 36].

अर्थात वह परेशान होगा और उलटे पलटेगा,यही वह चीज़ है जो उसे अमल के लिये प्ररित करेगी,वे मुक्ति चाहते हैं,हलाक होने से घबराते हैं,और इस बात को लेकर डरे रहते हैं कि कहीं उन का कर्म पन्न (आमाल नामा) उन के बायें हाथ में न दे दिया जाये।

ख- प्रलोक मेंः

जो व्यक्ति अल्लाह तआला से डरेगा उसे अल्लाह का भय हर एक भलाई की ओर मार्ग दिखायेगा।

1- बंदा क़यामत के दिन अल्लाह तआला के अर्श की छाँव में होगा,रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमायाः «और व्यक्ति जिसे हैसियत वाली महिला बुलाये(व्यभिचारकरना चाहे) और वह कहे कि मैं अल्लाह से डरता हूँ..» (बुखारी),

और हदीस का ज़ाहिर ये बताता है कि वह अपनी जुबान से कहे ताकि महिला अपनी हरकत से बाज़ आ जाये और वह अपने जी में सोचे,और उस पर जमा रहे,और सिद्धांतों की घोषणा के बाद उस से न पलटे,

«और ऐसा व्यक्ति जिस ने अल्लाह तआला का अकेले में याद किया और उस की आँखों से आँसू निकल पड़े..» (बुखारी),

अल्लाह तआला का वह डर जो आँखों को आँसू निकालने पर मजबूर कर दे क़यामत के दिन ऐसी आँख को आग छू भी नहीं सकेगी.

2-यह क्षमा के कारणों में से है,और नबी ﷺ की हदीस इस पर गवाह हैः

«तुम से पहले एक आदमी था जिसे अल्लाह तआला ने धन दे रखा था,मरते समय उस ने अपने बेटों से कहाः मैं तुम्हारा कैसा बाप था?बेटों ने कहा अच्छे बाप थे,बाप ने कहा मैं ने कभी अच्छा काम नहीं किया,इस लिये जब मैं मर जाऊँ तो मुझे जला देना और अधिक बारीक कर देना फिर जब आँधी आये तो उस में मुझे उड़ा देना,उन्होंने ऐसा ही किया,फिर अल्लाह तआला ने उसे इकठ्ठा किया,पूछा ऐसा करने पर तुझे किस चीज़ ने उभारा,जबाब दिया तेरे डर ने,तो अल्लाह तआला उसे अपनी दया में लेलेगा अर्थात उसे क्षमा कर देगा!!» (बुखारी),

अल्लाह तआला ने उस की जेहालत के कारण उसे विवश (माज़ूर) समझा और उस के डर ने उस के रब से सिफारिश की,वरना तो जो व्यक्ति मरने के बाद दोबारा जीवित किये जाने को नहीं स्वीकारता वह काफिर है।

3- डरने वाले को डर स्वर्ग पहुँचाता है क्योंकि नबी ﷺ ने फरमायाः

«जो डरेगा वह रात के अंतिम भाग में सफर करेगा,और जो रात के अंतिम भाग में सफर करेगा वह मंज़िल तक पहुँच जायेगा,सुनो अल्लाह तआला की पूँजी बहुत क़ीमती है, सुनो अल्लाह तआला की पूँजी स्वर्ग बहुत क़ीमती है» (त्रिमिज़ी).

4- क़यामत के दिन शांति,अल्लाहत तआला हदीसे कुदसी में फरमाता हैः «मेरी इज़्ज़त की क़सम मैं अपने बंदे पर दो डर और दो शांति इकठ्ठा नहीं करूँगा,अगर वह मुझ से दुनिया में डरेगा तो मैं उसे क़यामत के दिन शांति दूँगा,और अगर मैं उसे दुनिया में शांति दूँगा तो उसे क़यामत के दिन डराऊँगा» (बैहक़ी)

5- अल्लाह तआला ने अपने इस जैसे कथन में अपने जिन बंदों के गुण बयान किये हैं उस में दाखिल होनाः {बेशक मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें, ईमानदार मर्द और ईमानदार औरतें,इताअत करने वाले मर्द और इताअत करने वाली औरतें,सच्चे मर्द और सच्ची औरतें,सब्र करने वाले मर्द और सब्र करने वाली औरतें,विनती करने वाले मर्द और विनती करने वाली औरतें,दान करने वाले मर्द और दान करने वाली औरतें,रोज़े रखने वाले मर्द और रोज़े रखने वाली औरतें,अपनी शर्मगाह की हिफाज़त करने वाले मर्द और अपनी शर्मगाह की हिफाज़त करने वाली औरतें"।}[अल अहज़ाबः 35].

यह सब अच्छे शब्द हैं जिन्हें प्राप्त करने की कोशिश करनी चाहिये,

अल्लाह तआला ने फरमायाः {उन की करवटें अपने बिस्तरों से अलग रहती हैं,अपने रब को डर और उम्मीद के साथ पुकारते हैं,और जो कुछ हम ने उन्हें दे रखा है वह खर्च करते हैं,कोई पराणी नहीं जानता जो कुछ हम ने उन की आँखों की ठंडक उन के लिये छिपा रखी है,जो कुछ करते थे यह उस का बदला है"।}[अस्सज्दाः 16].

और अल्लाह तआला ने फरमायाः {भला वह इन्सान जो रातों के समय सज्दा और खड़े होने की हालत में इबादत में गुज़ारता हो,आखिरत से डरता हो और अपने रब की रहमत की उम्मीद रखता हो,बताओ तो आलिम और जाहिल क्या बराबर हैं,बेशक नसीहत वही हासिल करते हैं जो अक़लमंद हों"।}[अज़्ज़ुमरः 9].

और अल्लाह तआला ने फरमायाः {और जो अपने रब के अज़ाब से डरते रहते हैं बेशक उन के रब का अज़ाब बेखौफ होने की बात नहीं"।} [अल मआरिजः 27-28].

और अल्लाह तआला ने अपने क़रीबी बंदो की प्रशंसा की है और वे पैग़म्बर हैं,क्योंकि वे अल्लाह से डरने वाले हैंः {ये नेक लोग नेक अमल की ओर जल्दी दौड़ते थे,और हमें चाहत और डर के साथ पुकारते थे"।}[अल अंबियाः 90].

बल्कि फरिश्ते स्वयं अपने रब से डरते हैं,अल्लाह तआला ने फरमायाः {और अपने रब से जो उन के ऊपर है कपकपाते रहते हैं और जो हुक्म मिल जाये उस के पालन करने में लगे रहते हैं"।}[अन्नहलः 50].

6- अल्लाह तआला की प्रसन्नताः {अल्लाह उन से खुश हुआ और ये उस से खुश हुये,यह है उस के लिये जो अपने रब से डरे"।} [अल बय्यिनाः 8].

अल्लाह तआला का ज्ञान रखने वालों का डर

अल्लाह तआला को पहचानने वाले बंदे अपने अच्छे अमल और अल्लाह तआल से आशा करने के कारण निःसंदेह यही अल्लाह तआला से डरते और अधिक खौफ खाते हैं,उदाहरण के तौर परः

- नबी ﷺ का नमाज़ की हालत में रोना,आप नमाज़ की हालत में इस प्रकार रोते कि रोने के कारण आप के सीने से हंडी पकने जैसी आवाज आती। (अहमद,अबूदाऊद,नसाई)।

-अबू बक्र ؓ अपनी ज़ुबान पकड़ कर कहतेः

«इसी ने मुझे हलाकत में डाला है»

और कहते

«ऐ काश में ऐसा पेड़ होता जिसे खालिया जाता»

उमर बिन खत्ताब ؓ कहतेः

«ऐ काश मैं कोई ऐसी चीज़ न होता जिस का ज़िक्र किया जाता है,ऐ काश मेरी माँ ने मुझे पैदा ही न किया होता»,

और कहते

«अगर फ़ुरात के किनारे कोई ऊँट मर जाता तो मुझे डर होता कि कहीं अल्लाह तआला क़यामत के दिन उस के बारे में मुझ से सवाल न करे»

और कहते

«अगर आसमान से पुकार लगाने वाला पुकार के कहताः ऐ लोगो तुम सब स्वर्ग में परवेश करने वाले हो सिवाय एक के तो मुझे डर होता कि वह एक मैं ही तो नहीं»!!

- उसमान बिन अफ्फान ﵁ कहते हैं:

«मैं चाहता हूँ कि मर जाऊँ और दोबारा जीवित न किया जाऊँ»,

आप पूरी रात तस्बीह,नमाज़ और क़ुरआन की तिलावत में गुज़ार देते थे।

मुसलमानों की माँ आयशा रज़िअल्लाहु अन्हा अल्लाह तआला का यह कथन पढ़ती थीं: {तो अल्लाह ने हम पर बड़ा उपकार किया,और हमें तेज़ गर्म हवाओं के परकोप से बचा लिया"।} [अŸूरः 27].

अपनी नमाज़ में (पढ़तीं) पस वह अधिक रोती थीं..

{अगर तू इन को सज़ा दे तो यह तेरे बंदे हैं और अगर तू इन्हें माफ करदे तो तू ज़बरदस्त हिक्मत वाला है"।}[अल माइदाः 118].

डर के अहकाम और उस विषय में चेतावनीः

1- खशिय्या शब्द खौफ शब्द से खास है,खशिय्या का अर्थ जो अल्लाह तआला को पहचानते हुये डरेः {अल्लाह से उस के वही बंदे डरते हैं जो जानकार हैं,बेशक अल्लाह तआला ग़ालिब,और बड़ा माफ करने वाला है"।}[फातिरः 28].

डर जो ज्ञान के साथ मिला हुआ हो,नबी ﷺ ने फरमायाः «अल्लाह की क़सम मैं तुम सब से अधिक परहेज़गार और अल्लाह से डरने वाला हूँ» (मुस्लिम),

और अल्लाह तआला,उस के नामों,उस की विशेषताओं,उस के कमाल और उस की महिमा के विषय में जानकारी के बक़द्र अल्लाह का डर और उस का खौफ होगा।

2- डर उस समय लाभदायक होगा जब वह मेहनत,अमल,और अफसोस अथवा गुनाहों के न करने के इरादे के साथ तोबा करने पर उभारे,तो डर अपराध की कुरूपता के ज्ञान और चेतावनी (वईद) के अनुसमर्थन और अल्लाह के ज्ञान से पैदा होता है जो बड़ा,महान और सर्वशक्तिमान है,और इस प्रकार अल्लाह का डर की कल्पना नहीं की जा सकती जो अमल,मेहनत और तोबा की ओर न बुलाये।

3- अल्लाह तआला से डरना यह वाजिबात में से एक वाजिब है,और यही ईमान का तक़ाज़ा भी है,और यह बेहतर मार्ग और दिल के लिये लाभदायक है,अथवा ये हर इन्सान के लिये अनिवार्य है,और गुनाहों,दुनियादारी,बुरी संगत,अचेतना और एहसासे कमतरी से बचाता है।

"अल्लाह से उस के वही बंदे डरते हैं जो जानकार हैं,बेशक अल्लाह तआला ग़ालिब,और बड़ा माफ करने वाला है"। {फातिरः 28}.

जो अल्ल्लाह से डरेगा उसे कोई चीज़ नुक़सान नहीं पहुँचा सकती,और जो अल्लाह के अतिरिक्त से डरेगा उसे कोई चीज़ लाभ नहीं पहुँचा सकती।

अल फुजेल बिन अयाज

समीक्षाः

1- जो चीज़ें अल्लाह से डर को बढ़ाती हैं उसे बताइये और गिनाइये।

2- जो कुछ अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं को आप जानते हैं जो अल्लाह का खौफ पैदा करती हैं उसे बयान करो।

3- अल्लाह से डरने वाले को क्या करना चाहिये?

आमाल और व्यवहार पर भक्ति प्रभावः

अल्लाह तआला की तौहीद इन्सान के व्यवहार और उस के कार्यों में ज़ाहिर होती है,जैसे इन्सान और उस का अमल उस के दिल और उस की परहेज़गारी में ज़ाहिर होते हैं,इसी प्रकार यह हर खासो आम व्यवहार में भी प्रकट होती है,तो संपूर्ण जीवन में ईमान,तौहीद और इबादत का प्रभाव प्रकट होता है,अल्लाह तआला ने फरमायाः {मैंने जिन्नात और इन्सानों को केवल इस लिये पैदा किया है कि वे सिर्फ मेरी इबादत करें“।} [अज़्ज़ारियातः 56].

विशेष मानव व्यवहार पर स्पष्ट प्रभाव निम्न लिखित हैंः

सब से पहले. व्यक्ति पर विशेष प्रभावः

प्विन्नताः

अल्लाह तआला की तौहीद सब से अधिक उन बड़ी चीज़ों में से है जिस से मोमिन को पविन्नता प्राप्त होती है,इसी कारण अल्लाह तआला उस से प्रेम करता है,अल्लाह तआला ने फरमायाः {बेशक अल्लाह तआला माफी माँगने वाले को और पाक रहने वाले को पसंद करता है।}[अल बक़राः 222].

और नबी ﷺ ने फरमायाः «पविन्नता (तहारत) आधा ईमान है» (मुस्लिम),

पविन्नता (तहारत)आधा ईमान है,क्योंकि यह उस की एक महत्वपूर्ण क़िस्म है,और अल्ला तआला हर एक प्रकार की पविन्नता को प्रिय रखता है,चाहे वहः

1-मानवी तहारत होः

अर्थात नफ्स का अपराध,पाप के प्रभाव और अल्लाह के साथ शिर्क करने से पाक होना,और वह सच्ची तोबा और दिल को शिर्क, संदेह, हसद,कीना कपट और घमंड से पाक करके होगा, और यह पाकी प्राप्त नहीं होगी मगर अल्लाह के लिये इख्लास,भलाई,सहनशीलता,नम्रता,सत्य ता और अमलों से अल्लाह तआला की प्रसन्नता के ज़रिये।

2-ऐन्द्रिक(हिस्सी) तहारत

अर्थात गंदगी और नापाकी को हटानाः

-गंदगी हटानाः

यह कपड़ों,शरीर,जगह और जो उस के हुक्म में है उस से गंदगी को पाक पानी से दूर करके होगा।

नापाकी को दूर करनाः

अर्थात नमाज़,क़ुरआन की तिलावत,अल्लाह के घर का तवाफ अल्लाह तआला का ज़िक्र या इस के अतिरिक्त के लिये वुज़ू,ग़ुस्ल और तय्म्मुम करना है।

> नबी ﷺ ने फरमायाः” पविन्नता (तहारत) आधा ईमान है“(मुस्लिम).

नमाज़ः

अल्लाह तआला की तौहीद उस नमाज़ में ज़ाहिर होती है जो बंदे और उस के रब के बीच लिंक है जिस में बंदा अपने रब की पैरवी, मुहब्बत, आजज़ी और विनम्रता का ऐलान करता है,इसी कारण शहादतैन के बाद यह सब से महान रुक्न है,और यह दीन का खंबा और यक़ीन की रोशनी है, इस से नफ्स को खुशी मिलती है,सीना खुल जाता है,और दिल को सुकून मिलता है,और

यह बुराइयों से रोकती है,और गुनाहों के मिटाने का ज़रिआ है,और यह विशेष प्रकार के आमाल हैं जो विशेष समय में अदा किये जाते हैं इस की शुरूआत तक्बीर से होती है और खतम सलाम पर।

और नमज़ छोड़ने वाला,उस का इनकार करने वाला अल्लाह और उस के रसूल को झुटलाने वाला और क़ुर्आन को नकारने वाला है,और यह असल ईमान के विपरित है,अलबŸा जो व्यक्ति इस की अनिवार्यता को स्वीकारता है और सुसती और काहिली के कारण इसे छोड़ता है तो वह अपने आप को गंभीर धमकी और बडे जोखम में डालता है,नबी ﷺ फरमाते हैं: «आदमी और शिर्क एवं कुफ्र के बीच(अलग करने वाली चीज़) नमाज़ का छोड़ना है» (मुस्लिम),

और दूसरे लोगों ने इसे कुफ्र कहा है परन्तु यह बड़ा कुफ्र नहीं है,बहर हाल या तो यह ऐसा कुफ्र है जो धर्म से निकाल देता है,या अधिकतर बड़ा गुनाह और हलाक करने वाली चीज़ों में अधिक बड़ी चीज़ है।

और नमाज़ के महान प्रभाव हैं जैसे:

आप ﷺ ने फरमाया: «नमाज़ रोशनी है» (बैहक़ी).

1- नमाज़ बेहयाई और बुराइयों से रोकती है,अल्लाह तआला ने फरमाया: {जो किताब आप की ओर वह्य की गई है उसे पढ़िये और नमाज़ क़ायम कीजिये बेशक नमाज़ बेहयाई और बुराई से रोकती है,ओर बेशक अल्लाह का ज़िक्र बहुत बड़ी बात है,तुम जो कुछ कर रहे हो उसे अल्लाह जानता है“।}[अल अनकबूत: 45].

2- नमाज़ शहादतैन के बाद सब से श्रेठ अमल है,अब्दुल्लाह बिन मसऊद رضي الله عنه की हदीस के कारण, कहते हैं: «मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से पूछा कौन सा अमल श्रेष्ट है?आप ने फरमाया: समय पर नमाज़ पढ़ना,रावी कहते हैं मैंने कहा फिर कौन सा? फरमाया: माँ बाप के साथ नेकी करना,रावी कहते हैं मैंने कहा फिर कौन सा?फरमाया: अल्लाह के रास्ते में जेहाद करना» (मुस्लिम).

जिन चीज़ों से बंदा अल्लाह तआला की निकटता प्राप्त करता है उन में नमाज़ सब से श्रेष्ट है।

3- नमाज गुनाहों को धुल देती है,इस की दलील जाबिर बिन अब्दुल्लाह رضي الله عنه की हदीस है,कहते हैं रसूल ﷺ ने फरमाया: «पाँच नमाज़ों की मिसाल तुम में से किसी के द्वार के सामने उस बहने वाली नहर की है जिस में वह हर दिन पाँच बार नहाता है» (मुस्लिम).

4- नमाज़ नमाज़ी के लिये दुनिया और आखिरत में नूर है,नबी ﷺ नमाज़ के बारे में फरमाया: «जिस ने नमाज़ की पाबंदी की तो नमाज़ उस के लिये क़यामत के दिन नूर,प्रमाण,और मुक्ति बनेगी,और जिस ने उस की पाबंदी न की उस के लिये न तो नूर होगी,न प्रमाण होगी और न ही मुक्ति का सामान बनेगी,और वह क़यामत के दिन क़ारून,फिरओन,हामान,और उबै बिन खलफ के साथ होगा» (अहमद),

और नबी ﷺ ने फरमाया: «नमाज़ नूर है» (बैहक़ी).

5-नमाज़ के ज़रिये अल्लाह तआला दरजों को बुलंद करता है,और गुनाहों को मिटाता है, इस की दलील रसूल ﷺ के आज़ाद किये हुये गुलाम सोबान की हदीस है कि नबी ﷺ ने उन से कहा: «अधिकतर सज्दा करो,क्योंकि आप अल्लाह के लिये कोई सज्दा नहीं करेंगे मगर अल्लाह तआला उस से आप के एक दरजे को ऊँचा करेगा और उस की वजह से आप के एक गुनाह को मिटायेगा» (मुस्लिम).

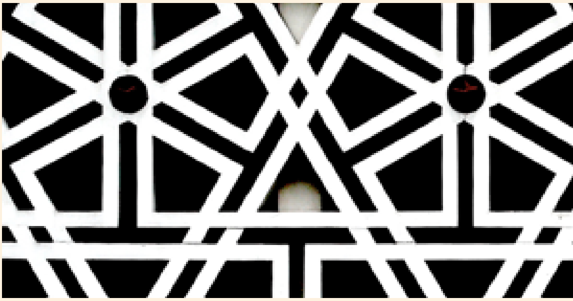

6-नमाज़ नबी ﷺ के साथ जन्नत में दाखिल होने के महान कारणों में से है,इस की दलील रबीआ बिन काब अल असलमी ﷺ की हदीस है,कहते हैं:

«मैंने रसूलुल्लाह ﷺ के साथ रात बिताई,मैं आप के पास वूज़ू और क़ज़ाये हाजत का पानी लायाः आप ने मुझ से कहाः माँगो,मैंने कहा मैं जन्नत में आप की संगत चाहता हूँ,आप ने फरमायाः क्या इस के अतिरिक्त कोई और चीज़? मैंने कहाः बस यही,आप ने फरमायाः तो अधिकतर सज्दों के ज़रिये अपने नफ्स पर मेरी सहायता करो» (मुस्लिम).

7- निःसंदेह नमाज़ शक्तिमान अल्लाह और कमज़ोर बंदे के बीच लिंक है,ताकि कमज़ोर व्यक्ति शक्तिमान और मज़बूत अल्लाह तआला से शक्ति प्राप्त करे,और अधिकतर उसे याद करे,और उस से दिल लगाये,और यह नमाज़ के महत्वपूर्ण उद्देश्य में से है,अल्लाह तआला ने फरमायाः {और मेरी याद के लिये नमाज़ क़ायम कर"।}[ताहाः 14].

ज़कात नफ्स,धन और समुदाय की पविन्नता और विकास का कारण है।

ज़कातः

पविन्नता और विकास में से एकेश्वरवादी के नफ्स की पविन्नता है,ये उसे ऐसा बना देती है कि वह अपने माल की ज़कात देता है और उसे ज़कात देकर पविन्न करता है,ज़कात मालदारों के माल में वाजिबी हक़ है जो गरीबों और जो उन के हुक्म में हैं उन के बीच बाँटा जाता है,ताकि अल्लाह तआला की प्रसन्नता और नफ्स की सफाई प्राप्त की जाये अथवा ज़रूतमंदों पर एहसान किया जा सके।

और इस्लाम में ज़कात का अधिक महत्व है,इसी लिये ज़कात वाजिब करने की हिक्मत में इस के महत्व का स्पष्ट प्रमाण है,और इन हिक्मतों में विचार करने वाले को इस महान रुकन के महत्व और उस के महान प्रभाव का ज्ञान होगा,और इन प्रभाव (आसार) में सेः

1- मनुष्य की आत्मा को कंजूसी,लोभ और लालच से पविन्न करना।

2- ग़रीबों की सांतवना और ज़रूतमंदों,परेशान हाल और वंचित लोगों की ज़रूरतें पूरी करना।

3-सार्वजनिक हित की स्थापना जिस पर उम्मत की ज़िन्दगी और उन की खुशी पर निर्भर है।

4- मालदारों और तिजारत करने वालों के पास सीमित मान्ना में माल का होना ताकि धन किसी एक संगठन के पास सीमित न रहे या फिर वह मालदारों के बीच ही घूमता न फिरे।

5- यह मुस्लिम समुदाय को एक परिवार की तरह बनाता है जिस में शक्ति वाला आजिज़ पर और मालदार फक़ीर पर दया करता है।

6- लोगों के दिलों में अमीरों के बारे में जो क्रोध नाराज़गी,हसद और कीना कपट है इस बिना पर कि अल्लाह तआला ने उन्हें पुरस्कार और जीविका दी है ज़कात उसे समाप्त करती है।

7-ज़कात विŸीय अपराधों जैसे चोरी, डकैती और

लूटपाट के बीच रुकावट बनती है।

8- ज़कात धन में बढ़ोतरी करती है।

और किताबो सुन्नत के ग्रंथों (नूसूस) में आया है जो ज़कात के वजूब का स्पष्ट प्रमाण हैं,और नबी ﷺ ने बताया है कि यह इस्लाम के उस मज़बूत खंबों में से है जिन पर इस्लाम की बुनियाद है,यही कारण है कि यह दीन का तीसरा रुक्न है,अल्लाह तआला ने फरमायाः {और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात दो, और रुकू करने वालों के साथ रुकू करो"।}[अल बक़राः 43].

और अल्लाह तआला ने फरमायाः {और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात दो,और जो भलाई तुम अपने लिये आगे भेजोगे सब कुछ अल्लाह के पास पा लोगे,बेशक अल्लाह तुम्हारे अमल को देख रहा है"।}[अल बक़राः 110].

और मशहूर हदीसे जिब्रील में हैः «इस्लाम ये है कि तुम इस बात की गवाही दो कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य उपास्य नहीं और मुहम्मदﷺ अल्लाह के संदेष्टा हैं,और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात दो,रमज़ान के रोज़े रखो और अगर अल्लाह के घर जाने की (माली व बदनी) शक्ति हो तो उस का हज करो» (मुस्लिम),

और नबी ﷺ ने फरमायाः «इस्लाम के पाँच आधार हैंः इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य उपास्य नहीं और मुहम्मद ﷺ अल्लाह के संदेष्टा हैं,नमाज़ क़ायम करना,ज़कात देना,हज करना और रमज़ान के रोज़े रखना» (बुखारी),

इस जैसे नुसूस इस बात का स्पष्ट प्रमाण हैं कि ज़कात इस्लाम के स्तंभों में से एक है,और उस के महान इमारतों में से है जिस के बिना इस्लाम अधूरा है।

रोज़ा (उपवास)

अल्लाह तआला ने रोज़ा को मशरू किया है, और उसे इस्लाम का स्तंभ बनाया है,रोज़ा कहते हैंः अल्लाह तआला की इबादत की नियत से रोज़ा तोड़ने वाली चीज़ों से दूर रहने को भोर से सूरज डूबने तक,अल्लाह तआला ने कहाः {और तुम खाते पीते रहो,यहाँ तक कि फज्र की सफेदी का धागा अंधेरे के काले धागे से वाज़ेह हो जाये,फिर रात तक रोज़े को पूरा करो"।} [अल बक़राः 187].

बंदे के दिल में ईमान की स्थिरता और अल्लाह तआला की तौहीद उस चीज़ के अनुपालन का कारण है जिसे अल्लाह तआला ने उस व्यक्ति पर अनिवार्य किया है,अल्लाह तआला के इस कथन का अनुपालन करते हुयेः {ऐ ईमान वालो! तुम पर रोज़े फर्ज़ किये गये,जिस तरह से तुम से पहले लोगों पर फजर् किये गये थे,ताकि तुम तक़्वा का मार्ग अपनाओ"।} [अल बक़राः 183].

एकीकृत (मुवहिहद) को रोज़े से आनंद मिलता है और तेज़ गति से उस की ओर आगे बढ़ता है,सर्वशक्तिमान अल्लाह ने हदीसे कुदसी में बयान किया हैः «आदम के बेटे का हर अमल उस के लिये है सिवाय रोज़े के क्योंकि रोज़ा मेरे लिये है और मैं ही उस का बदला दूँगा» (बुखारी).

बंदे पर रोज़े के प्रभाव अनेक हैं,जिस में से एकः

> अपने आप में ईमान के निर्माण के लिये रोज़ा एक स्कूल है.

1- रोज़ा बंदे और पैदा करने वाले (अल्लाह) के बीच एक भेद है जिस से मोमिन के दिल में सच्चे मुराक़बे का तत्व उजागर होता है,

क्योंकि इस में किसी भी हालत से रियाकारी का प्रवेश करना असंभव है,इस लिये कि रोज़ा मोमिन के भीतर अल्लाह का मुराक़बा और उस का डर पैदा करता है,और यह महान उद्देश्य और ऊँचा लक्षय है जिस की प्रप्ति के अधिक लोग लोभी होते हैं.

2- रोज़ा उम्मत को सिस्टम,यूनियन,न्याय और समानता को प्रिय रखने का आदी बनाता है,और मोमिनों के भीतर दया और एहसान का भावना पैदा करता है,अथवा बुराइयों और भ्रष्टाचार से समुदाय की रक्षा करता है।

3- रोज़ा मुसलमान को अपने भाई के दर्द का एहसास दिलाता है,और रोज़ेदार को ग़रीबों और ज़रूरतमंदों के ऊपर खर्च करने के लिये उभारता है,तो इस प्रकार मुसलमानों के बीच मुहब्बत और भाईचारगी पाई जायेगी।

4- रोज़ा अपने आप पर क़ाबू पाने और ज़िम्मेदारी और कष्ट सहने की व्यावहारिक प्रशिक्षण है।

5- रोज़ा मानव को गुनाह में पड़ने से बचाता है,और उसे उस के बदले अधिकतर भलाई मिलेगी,नबी ﷺ ने फरमायाः «रोज़ा ढाल है,रोजेदार गाली गलूज न करे,और जेहालत पर न उतर आये,और अगर कोई व्यक्ति उस से

झगड़ा करे,या गाली गलूज करे तो कहे मैं रोज़े से हूँ,दो बार इस प्रकार कहे। उस ज़ात की क़सम जिस के हाथ में मेरी जान है,रोज़ेदार के मुँह की बू अल्लाह तआला के नज़्दीक मुश्क की खुशबू से अधिक पसंदीदा है,रोज़ेदार अपना खाना पीना और अपनी ख्वाहिश को मेरे लिये छोड़ देता है,रोज़ा मेरे लिये है,और मैं ही इस का बदला दूँगा,और एक नेकी दस गुना नेकी के बराबर होगी।» (बुखारी).

हजः

अल्लाह तआला की तौहीद हज में प्रकट होती है,और हज ऐसी इबादत है जिस से एकेश्वरवादी की तौहीद में बढ़ोतरी होती है,और ईमान संपूर्ण होता है,हाजी हज शुरू करते समय ही तलबिया पुकार कर तौहीद का एलान करता है,कहता हैः " मैं हाज़िर हूँ, ऐ अल्लाह मैं हाज़िर हूँ, मैं हाज़िर हूँ तेरा कोई साझी नहीं,मैं हाज़िर हूँ" बल्कि हज के हर काम में तौहीद का ऐलान करता है ताकि जब वह हज कर के वापिस आये तो गुनाहों से इस प्रकार पाक साफ हो जाये जैसे उस की माँ ने जना हो,उस के भीतर केवल सच्ची तौहीद रची बसी हो और वह उस का ऐलान भी कर रहा हो,और हज कहते हैं हज अदा करने के इरादे से हज के समय में अल्लाह के घर जाना,जैसा कि अल्लाह तआला की ओर से यह चीज़ आई है और रसूलﷺ ने स्वयं हज किया,और अल्ला के बंदों पर हज करना अनिवार्य है क़ुरआन,हदीस,सुन्नत और इज्मा इस का प्रमाण हैं।

बंदे के जीवन में हज के प्रभावः

नबी ﷺ ने फरमायाः «काबा का तवाफ,सफा मरवा के बीच दौड़ना और जमरात को कंकर मारना अल्लाह तआला के ज़िक्र के लिये ह» (अहमद).

1- गुनाहों और ग़लतियों के मिटाने का कारण है,नबी ﷺ ने फरमायाः «क्या तुझे पता नहीं कि इस्लाम पिछले गुनाहों को मिटा देता है,और हिज्रत पिछले गुनाहों को मिटा देती है,और हज पिछले गुनाहों को मिटा देता है..» (मुस्लिम).

2- हज अल्लाह के आदेशों के अनुपालन का नाम है,बंदा अपनी बीवी और अपनी अवलाद को छोड़ता है,अपने कपड़े निकाल देता है,और अल्लाह के आदेशों का अनुपालन करते हुये अपने रब की तौहीद का एलान करता है,और यह अनुपालन का महान उदाहरण है।

3- हज अल्लाह तआला की प्रसन्नता और जन्नत में प्रवेश होने का कारण है,नबी ﷺ ने फरमायाः "हज्जे मबरूर का बदला जन्नत के सिवा कुछ नहीं" (बुखारी,मुस्लिम)

4- हज लोगों के बीच न्याय और समानता के सिद्धांत का व्यावहारिक तौर पर दिखाने का नाम है,और वह उस समय जब लोग मैदाने अरफात के अन्दर एक स्थिति में खड़े होते हैं,दुनिया की किसी भी चीज़ के बीच कोई भेद भाव नहीं,बल्कि वे एक दूसरे से प्रतिष्ठत अल्लाह के तक़वा (अल्लाह का डर) और अपनी तौहीद के कारण होंगे।

5- हज में आपसी पहचान और सहयोग का सिद्धांत पक्का होता है अर्थात आपसी पहचान मज़बूत होती है,और प्रामर्श और विचारों का आदान प्रदान होता है,और इस में क़ौम की तरक्क़ी और उस के नेतृत्व (क़ायदाना हैसियत) की बुलंदी है।

6-हज तौहीद और इख्लास की ओर बुलाता है, यह उन विशेषताओं में से है जो हज के बाद उस के संपूर्ण जीवन में झलकती हैं,वह केवल एक अल्लाह तआला ही को सत्य उपासक समझता है,और सिर्फ अल्लाह तआला से ही दुआ करता है।

2- लोगों के बीच आम प्रभाव

जिस प्रकार तौहीद और ईमान का प्रभाव मोमिन के दिल में और उस के निजी व्यवहार में प्रकट हुआ उसी प्रकार लोगों के साथ उस के व्यवहार और स्वभाव में भी प्रकट होगा,नबी ﷺ ने फरमायाः «नैतिकता को पूरा करने के लिये मुझे भेजा गया» (बैहक़ी),

बल्कि ईमान और स्वभाव के बीच संबंध जोड़ा,फरमायाः «ईमान के एतबार से सब से कामिल मोमिन वह है जिस का स्वभाव सब से उत्तम हो और वह अपने परिवार के रवैये में सब से अच्छा हो» (त्रिमिज़ी),

एकेश्वरवादी जो अल्लाह की निगरानी और बंदों पर उस के एहाते के विषय में सोचता है तो वह जीवन के विभिन्न विभागों में लोगों पर अधिक हमदर्दी और दया करेगाः

घर और परिवार मेंः

1- माँ बाप के साथ मामलाः

एकेश्वरवादी सब से अधिक माँ बाप की देख रेख करता है,और अल्लाह तआला ने अपनी किताब में अपनी इबादत के बाद माँ बाप के साथ एहसान करने का हुक्म दिया है,फरमायाः {और तेरा रब खुला हुक्म दे चुका है कि तुम उस के सिवाय किसी दूसरे की इबादत न करना और माता पिता के साथ अच्छा सुलूक करना,अगर तेरी मौजूदगी में इन में से एक या ये दोनों बुढ़ापे को पहुँच जायें तो उन को उफ तक न कहना,उन्हें डाँटना नहीं,बल्कि उन के साथ इज़्ज़तो एहतेराम से बात चीत करना,और नरमी और मुहब्बत के साथ उन के सामने इन्केसारी के हाथ फैलाये रखना,और दुआ करते रहना कि हे मेरे रब इन पर ऐसे ही रहम करना जैसा कि इन्होंने मेरे बचपन में मेरा पालने पोसने में किया है,जो कुछ तुम्हारे दिलों में है उसे तुम्हारा रब अच्छी तरह जानता है,अगर तुम नेक हो तो वह तोबा करने वालों को माफ करने वाला है“।}[अल इस्राः 23-25].

और अल्लाह तआला फरमाता हैः {हम ने हर इन्सान को अपने माता पिता से अच्छा सुलूक करने की शिक्षा दी है,लेकिन अगर वे यह कोशिश करें कि तुम मेरे साथ उसे शामिल करलो जिस का तुम को इल्म नहीं तो उन का कहना न मानो,तुम सब को लौट कर मेरी ही ओर आना है,फिर मैं हर उस बात से जो तुम करते थे,तुम्हें आगाह कराऊँगा“।}[अल अनकबूतः 8].

2- बेटों के साथ मामलाः

बेटे दुनियावी सजावट हैं,फिर भी अल्लाह तआला ने उन के विषय में फरमायाः {माल और अवलाद तो दुनियावी ज़िंदगी की ज़ीनत हैं“।}[अल कहफः 46].

मगर तौहीद जो मोमिन के दिल में है मोमिन को अपनी अवलाद की शिक्षा और तरबियत की ओर बुलाता है,और अल्लाह तआला ने मोमिनों को ईमान वाला कह कर पुकारा कि वह स्वयं को और अपने परिवार वालों को नरक के आग से बचायें,फरमायाः {ऐ ईमान वालो तुम खुद अपने को और अपने परिवार वालों को उस आग से बचाओ जिस का ईधन इन्सान और पत्थर हैं,जिस पर कठोर दिल वाले सख्त फरिशते तैनात हैं,जिन्हें जो हुक्म अल्लाह देता है उस की नाफरमानी नहीं करते, बल्कि जो हुक्म दिया जाये उस का पालन करते हैं“।}[अŸाहरीमः 6].

अवलाद की तर्बियत को हर निगहबान की ज़िम्मेदारी बना दिया है,आप ﷺ ने इर्शाद फरमायाः «तुम में का हर व्यक्ति उत्तरदायी है और तुम में हर एक से उस की रिआया के बारे में पूछा जायेगा,खलीफा उत्तरदायी है,उस से उस की प्रजा के बारे में पूछा जायेगा,मर्द अपने घर का उत्तरदायी है,उस के बारे में उस से पूछा जायेगा,औरत अपने पति के घर की उत्तरदायी है,उस से उस के बारे में पूछा जायेगा,नोकर अपने मालिक के के माल का उत्तरदायी है,उस से उस के बारे में पूछा जायेगा,तुम सब उत्तरदायी हो,अपनी अपनी प्रजा के बारे में पूछे जाओगे।» (बुखारी).

3- पत्नी के साथ मामलाः

एकेश्वरवादी अपनी बीवी का हक़ अदा करता है, अल्लाह से डरता है और इस विषय में और उस के हुकूक अदा करने में और उस के संग भलाई करने के बारे में यह विश्वास रखता है कि अल्लाह तआला सब कुछ देख रहा है,अल्लाह तआला ने फरमायाः

{औरतों के भी वैसे ही हक़ हैं जैसे उन पर मर्दों के हैं अच्छाई के साथ“।}[अल बक़राः 228].

नबी ﷺ ने कहाः «तुम में अच्छा वह व्यक्ति है जो अपने परिवार के लिये अच्छा हो और मैं अपने परिवार के लिये सब से अच्छा हूँ..» (त्रिमिज़ी),

और जब महिलायें नबी ﷺ के पास आकर अपने पतियों की शिकायत करने लगीं तो आपने फरमायाः «तुम में बेहतर वे हैं जो अपनी औरतों के लिये बेहतर हों» (इब्ने माजा).

4- पति के साथ मामलाः

ईमान वाली महिला के भीतर तौहीद अल्लाह का भय पैदा करता है जिस के कारण वह अपने रब की जन्नत की प्राप्ति के लिये अपने पति के हुकूक को अदा करती है,नबी ﷺ ने फरमायाः «जब औरत पाँच वक्त की नमाज़ पढ़ ले,और रमज़ान के रोज़े रख ले,अपनी शर्मगाह की हिफाज़त कर ले और अपने पति की बात माने तो उस से कहा जायेगाः तू जिस द्वार से चाहे जन्नत में प्रवेश कर ले» (अहमद),

और अल्लाह तआला ने उसे इस बात का आदेश दिया है कि वह पति को उन चीज़ों का मुकल्लफ न करे जिस की वह ताक़त नहीं रखता,अल्लाह तआला ने फरमायाः {धन वाले को अपने धन के अनुसार खर्च करना चाहिये,और जिस की जीविका उस के लिये कम की गई हो तो उस को चाहिये कि जो कुछ अल्लाह ने उसे दे रखा है, उसी में से दे,किसी इन्सान पर अल्लाह बोझ नहीं रखता लेकिन उतना ही जितनी ताक़त उसे दे रखी है,अल्लाह ग़रीबी के बाद माल भी अता करेगा“।}[अŸालाक़ः 7].

और बिना किसी कारण के वह अपने पति से तलाक़ न माँगे,नबी ﷺ ने फरमायाः «जिस औरत ने अपने शौहर से बिना किसी कारण के तलाक़ माँगा उस पर जन्नत की खुशबू हराम है» (अहमद).

रिश्तेदारों और पड़ोसियों के साथः

रिश्ता नाता जोड़ना और पड़ोसी का हक़ः

अल्लाह तआला ने अकेले अपनी इबादत,अपनी तौहीद,और एकेश्वरवादी का स्वभाव उस के क़रीबी रिश्तेदार,संबंधियों अथवा उस के पड़ोसियों के बीच जोड़ा है (एक साथ बयान किया है),अल्लाह तआला ने फरमायाः {और अल्लाह की इबादत करो,उस के साथ किसी को शरीक न करो,और माँ बाप, रिश्तेदारों, यतीमों,गरीबों,क़रीब के पड़ोसी,दूर के पड़ोसी और साथ के मुसाफिर के साथ और मुसाफिर और जो तुम्हारे ताबे हैं उन के साथ भीएहसान करो,बेशक अल्लाह डींग मारने वाले,घमंडी से मुहब्बत नहीं करता"।}[अन्निसाः 36].

और अल्लाह तआला ने फरमायाः {"तो क़रीबी रिश्तेदार को,ग़रीब को,मुसाफिर को,हर एक को उस का हक़ दो,यह उन के लिये बेहतर है,जो अल्लाह के मुंह की ज़ियारत करना चाहते हों,ऐसे ही लोग नजात हासिल करने वाले हैं"।}[अर्रूमः 38].

और नबी ﷺ ने फरमायाः «जिस व्यक्ति का अल्लाह और प्रलोक पर ईमान है उसे पड़ासियों के संग अच्छा व्यवहार करना चाहिये..» (मुस्लिम),

काम में और सभी लोगों के साथः

ईमान एकेश्वरवादी के दिल में सृष्टि के संग अच्छे व्यवहार और लोगों के लिये अच्छी चाहत और मामले में सच्चाई पर उभारता है,और यह सब उन श्रेष्ट कार्यों में से हैं जिन के ज़रिये बंदा अल्लाह तआला की निकटता प्राप्त करता हैः

1- अच्छा व्यवहारः

अल्लाह तआला ने अपने नबी की प्रशंसा करते हुये फरमायाः {और बेशक आप बहुत स्वभाव पर हैं"।}{अल क़लमः 4}.

और नबी ﷺ ने फरमायाः «सब से अधिक वह चीज़ जो लोगों को जन्नत में प्रवेश करवायेगी वह अल्लाह का भय और अच्छा व्यवहार है» (त्रिमिज़ी),

और नबी ﷺ ने फरमायाः «अल्लाह तआला के निकट सब से प्रिय वह व्यक्ति है जो लोगों को अधिक लाभ पहुँचाने वाला हो,और अल्लाह तआला के निकट सब से प्रिय कार्य मुसलमान को खुश करना,या उस की परेशानी दूर कर देना,या उस के क़र्ज़ का भुगतान करना है,

या उस की भूक मिटाना है,और मैं अपने भाई की आवश्यक्ता पूरी करने के लिये निकलूँ यह मुझे इस से कहीं अधिक प्रिय है कि मैं इस मस्जिद अर्थात मदीना की मस्जिद में एक महीने तक एतक़ाफ करूँ» (तबरानी)

2-सच्चाई,अल्लाह तआला ने फरमायाः {ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो और सच्चों के साथ रहो"।}[अŸïोबाः 119].

और नबी ﷺ ने फरमायाः «निःसंदेह सच्चाई नेकी की राह दिखाती है और नेकी जन्नत की राह दिखाती है और बेशक आदमी सच बोलता है यहाँ तक कि वह सच्चा हो जाता है,और झूट बुराई की राह दिखाती है और बुराई जहन्नम की राह दिखाती है,और आदमी झूट बोलता है यहाँ तक कि अल्लाह तआला के निकट उसे झूटा लिख दिया जाता है» (बुखारी),

और नबी ﷺ ने फरमायाः «मुनाफिक़ की तीन निशानियाँ हैंः जब बोले झूट बोले और जब वादा करे तो तोड़ दे और जब उस के पास अमानत रखी जाये तो खयानत करे» (बुखारी).

3- नसीहत करना और धोका न देना, नबी ﷺ ने फरमायाः

«जिस व्यक्ति को अल्लाह तआला ने उस की क़ौम का निगहबान बनाया हो,और जब उस मौत आये तो उस समय इस हाल में मरा हो कि वह अपनी रिआया को धोका देता रहा हो तो अल्लाह तआला उस पर जन्नत को हराम कर देगा» (मुस्लिम),

और नबी ﷺ गल्ले के एक ढेर के पास से गुज़रे,अपना हाथ गल्ले में डाला तो आप की उंगलियाँ तर हो गईं आप ने पूछाः «ऐ गल्ले वाले माजरा क्या है? कहने लगा वर्षा के कारण ऐसा हुआ है ऐ अल्लाह के रसूल,आप ने फरमायाः तुम ने इसे गल्ले के ऊपर क्यों न रखा ताकि लोग देखते,जिस ने धोका किया वह मूझ से नहीं» (मुस्लिम).

जिस नबी ने अपनी उम्मत को इस्तिन्जा का नियम सिखाया उस ने अपनी उम्मत को तौहीद न सिखाया हो यह सोचना भी असंभव है,और तौहीद जिस के बारे में नबी ﷺ का कथन हैः " मुझे इस बात का हुक्म दिया गया कि मैं लोगों से जंग करूँ यहाँ तक कि वे लाइलाहा इल्लल्लाह कह लें "

(बुखारी),तौहीद की हक़ीक़त यही है कि इस की वजह से जान और माल महफ़ूज़ हो जाते हैं।

इमाम मालिक बिन अनस

https://www.with-allah.com/hi

समीक्षा

1- वह भक्ति प्रभाव जो व्यवहार और अमलों के साथ खास है उस की तहारत- नमाज़- ज़कात- रोज़ा- और हज में वाजिबी सीमा क्या है

2-उस व्यक्ति के ईमान की कल्पना कैसे की जा सकती है जो नमाज़ न पढे? जो भी कहें उस का प्रमाण दें.

3-क्या इस बात की कल्पना की जा सकती है कि एक व्यक्ति नमाज़ पढे और उस की नमाज़ उसे बेहयाइयों और बुराइयों से न रोके?

4-अल्लाह तआला पर ईमान लाने का संबंध किस प्रकार अवलाद,पत्नी,रिश्तेदारों,पड़ोसियों और तमाम लोगों पर ज़ाहिर होगा?

https://www.with-allah.com/hi

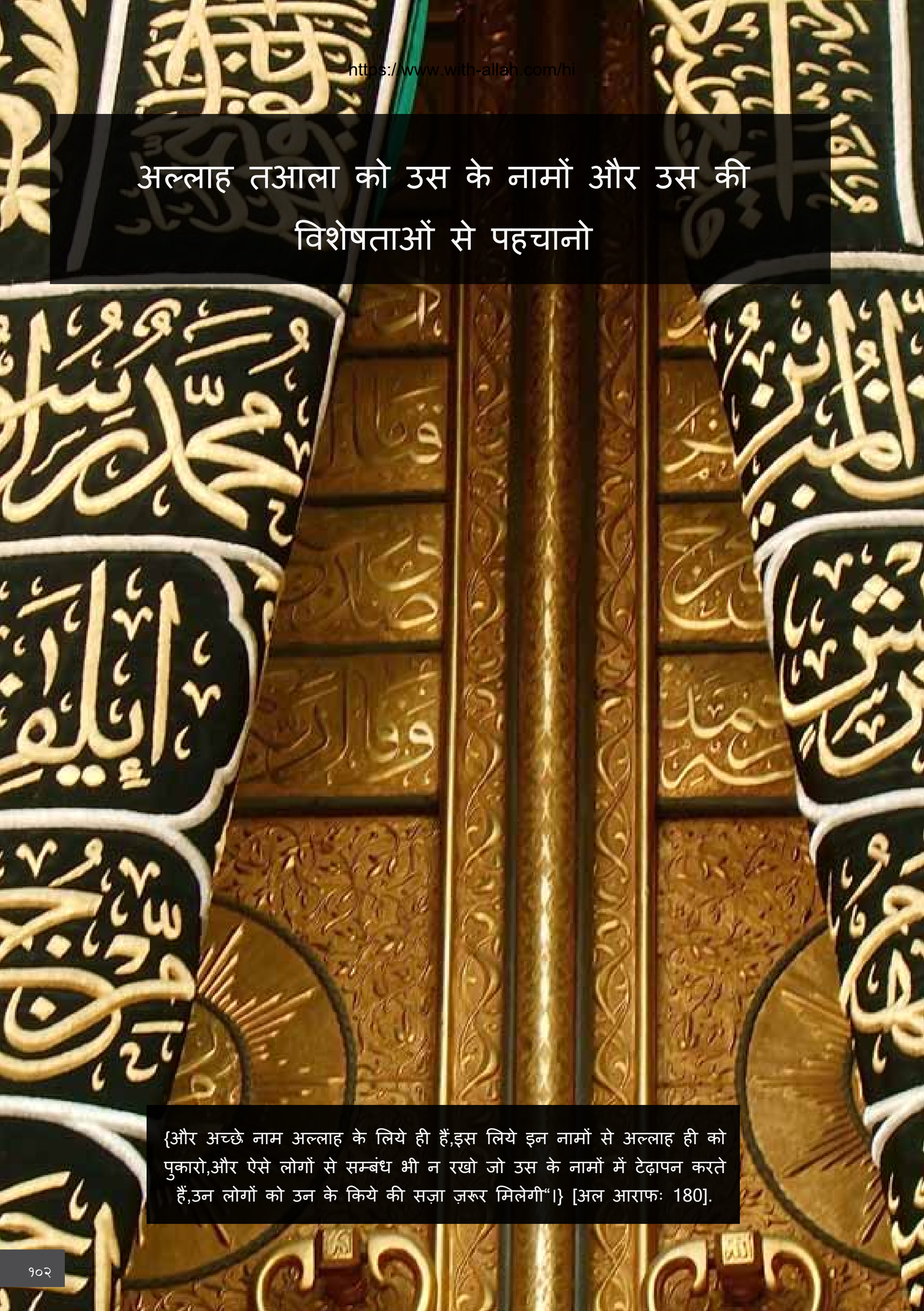

अल्लाह तआला को उस के नामों और उस की विशेषताओं से पहचानो

{और अच्छे नाम अल्लाह के लिये ही हैं,इस लिये इन नामों से अल्लाह ही को पुकारो,और ऐसे लोगों से सम्बंध भी न रखो जो उस के नामों में टेढ़ापन करते हैं,उन लोगों को उन के किये की सज़ा ज़रूर मिलेगी"।} [अल आराफः 180].

तीसरी बातः अल्लाह तआला को उस के नामों और उस की विशेषताओं से पहचानोः

और अच्छे नाम अल्लाह के लिये ही हैं,इस लिये:

अल्लाह तआला ने फरमायाः {और अच्छे नाम अल्लाह के लिये ही हैं,इस लिये इन नामों से अल्लाह ही को पुकारो,और ऐसे लोगों से सम्बंध भी न रखो जो उस के नामों में टेढ़ापन करते हैं,उन लोगों को उन के किये की सज़ा ज़रूर मिलेगी“।}[अल आराफः 180].

क- और अच्छे नाम अल्लाह के लिये ही हैं इस का अर्थः

अल्लाह तआला के संपूर्ण नाम प्रशंसा पर आधारित हैं और अल्लह तआला ने अपने इन सारे नामों के विषय में कहा कि यह सब अच्छे हैं,फरमायाः {और अच्छे नाम अल्लाह के लिये ही हैं,इस लिये इन नामों से अल्लाह ही को पुकारो,और ऐसे लोगों से सम्बंध भी न रखो जो उस के नामों में टेढ़ापन करते हैं,उन लोगों को उन के किये की सज़ा ज़रूर मिलेगी“।} [अल आराफः 180].

यह नाम केवल शब्दों के आधार पर अच्छे नहीं हैं बल्कि इस लिये भी अच्छे हैं क्योंकि यह सब नाम विशेषताओं पर आधारित हैं; अल्लाह तआला के सभी नामों में प्रशंसा तारीफ,बड़ाई और बुज़ुर्गी के अर्थ पाये जाते हैं,इसी लिये यह अच्छे हैं,अल्लाह तआला के संपूर्ण गुणों में विशेषतायें और प्रताप

https://www.with-allah.com/hi

(जलाल) एवं महनता (बुजुर्गी) पाई जाती है और उस के संपूर्ण कार्य हिक्मत,दया विधि और न्याय पर आधारित हैं।

ईमान में से है कि अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं पर उसी प्रकार ईमान लाया जाये जिस प्रकार उन के विषय में कुरआन और सही हदीस में आया है,परन्तु इस ईमान के आधार दो नियमों पर निर्धारित हैंः

पहला नियमः

बिना किसी परिवर्तन,अनध्याय,उपमा या कैफियत बयानी के अल्लाह तआला के नामों को उस की महिमा अनुसार साबित किया जाये ताकि अल्लाह के इस फरमान पर अमल हो जायेः {उस जैसी कोई चीज़ नहीं,और वह सुनने वाला देखने वाला है“।}[अश्शूराः 11].

दूसरा नियमः

उन नामों के अर्थ को समझा जाये और दशा तलाश किये बिन उन गुणों को साबित किया जाये जो इन नामों में पाये जाते हैंएअल्लाह तआला ने फरमायाः {जो कुछ उन के आगे और पीछे है उसे जानता है,मखलूक़ का इल्म उसे घेर नहीं सकता“।}[ताहाः 110].

अल्लाह तआला ने अच्छे अच्छे नामों और उस की महान विशेषताओं से अपनी हस्ती का अपने बंदों के सामने परिचय करवाने का कारण बताया है और वह अल्लाह तआला की इबादत है जैसा कि अल्लाह तआला ने फरमायाः {कह दीजिये कि अल्लाह को अल्लाह कह कर पुकारो या रहमान कह कर जिस नाम से भी पुकारो सभी अच्छे नाम उसी के हैं“।}[अल इस्राः 110].

और अल्लाह तआला ने फरमायाः {और अच्छे नाम अल्लाह के लिये ही हैं,इस लिये इन नामों से अल्लाह ही को पुकारो,और ऐसे लोगों से सम्बंध भी न रखो जो उस के नामों में टेढ़ापन करते हैं,उन लोगों को उन के किये की सज़ा ज़रूर मिलेगी“।}[अल आराफः 180].

ख- ” इस लिये इन नामों से अल्लाह ही को पुकारो “ इस का अर्थः

अल्लाह तआला के अच्छे अच्छे नामों से दुआ माँगना दो प्रकार की दुआ को शामिल हैः(पहली दुआ) माँगने के लिये दुआ करना जैसे बंदे का यह कहना ” ऐ अल्लाह मुझे दे,ऐ दयालू मुझ पर दया कर,ऐ दानशील मुझ पर कृपा कर “ (दूसरी दुआ) प्रशंसा और बंदगी बयान करने के लिये दुआ करना जैसे बिना किसी आवश्यक्ता के अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं के ज़रिये उस की बड़ाई

बयान करनाएऔर अच्छे अच्छे नाम और अच्छी विशेषताओं वाली महान और बड़ी हस्ती की यह प्रशंसा दिल और जुबान दोनों से होती है-

ग- ”और ऐसे लोगों से सम्बंध भी न रखो जो उस के नामों में टेढ़ापन करते हैं“ इस का अर्थः

अल्लाह तआला के नामों में इल्हाद का अर्थः यह है कि अल्लाह की किताब में बयान हुयी किसी चीज़ का झुटलाना,उसे नकारना,या अल्लाह तआला के नामों में से किसी नाम का मखलूक़ समान मानना या अल्लाह तआला को ऐसी विशेषता या ऐसे नाम से याद करना जो उस की महानता के योग्य न हो अथवा कुरआन एवं हदीस में उस की कोई दलील भी न हो।

अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषता जानने का महत्वः

अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषता जानने का महत्व निम्न लिखित बातों से ज़ाहिर होता हैः

पहली बातः

संपूर्ण ज्ञानों में अधिकतर प्रतिष्ठत वह ज्ञान है जिस का तअल्लुक़ अल्लाह की ज़ात और उस के नामों और उस की विशेषताओं से हो,और बंदे की जानकारी अनुसार

अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं के विषय में उस के भीतर अपने रब की बंदगी,उस से प्रेम,लगाव और उस की महानता उस का नसीब बन जाती है जो अल्लाह तआला की प्रसन्नता,उस के स्वर्ग की प्राप्ति और प्रलोक में अल्लाह के दीदार की निधि के हासिल होने का कारण होती है,और यह उद्देश्य अल्लाह की कृपा के बिना कदापि प्राप्ति नहीं हो सकता है।

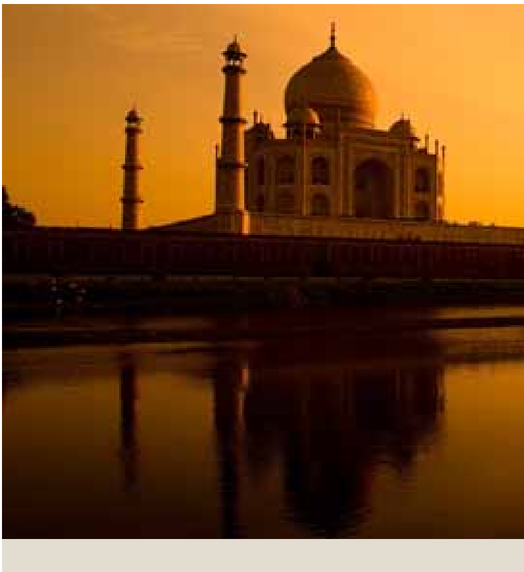

दूसरी बातः

अल्लाह तआला के नामों और और उस की विशेषताओं का ज्ञान, मूल ज्ञान और ईमान की जड़ और पहला फर्ज़ है; क्योंकि जब लोग अल्लाह तआला को अच्छे प्रकार से जान लेंगे तो वह सही ढंग से उस की इबादत भी करेंगे,अल्लाह तआला ने फरमायाः {तो जान लो कि अल्लाह के सिवा काई उपास्य नहीं“।}[मुहम्मदः 19].

तीसरी बातः

अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं के ज्ञान से ईमान और विश्वास में बढ़ोतरी होती है,तौहीद प्रमाणित होती है और बंदगी का मज़ा मिलता है,और यही ईमान की रूह,उस की जड़ और उस का उद्देश्य है, और इस का सरल मार्ग क़ुरआने करीम में मौजूद अल्लाह तआला के नामों और और उस की विशेषताओं में ग़ौरो फ़िक्र करना है,अल्लाह तआला जब किसी बंदे को अपनी परिचय और उस के दिल में अपना प्रेम डालना चाहता है तो अपनी महान विशेषताओं को स्वीकार करने और वह्य के ताक़ से उसे प्राप्त करने के लिये उस के दिल को खोल देता है,फिर जब भी बंदे के सामने अल्लाह तआला की विशेषताओं में से कोई चीज़ आती है तो वह उसे क़बूल करता है,उस पर प्रसन्नता प्रकट करता है और स्वीकारता है और अधीनता के साथ उस पर विश्वास रखता है तो इस कारण उस का दिल रोशन हो जाता है।

> किसी भी ज्ञान का महत्व उस ज्ञान से प्राप्ति होने वाली चीज़ों के महत्व पर आधारित होती है,और अल्लाह तआला,उस के नामों और उस की विशेषताओं के ज्ञान से बढ़ कर कोई ज्ञान नहीं ह

बंदे का सीना चैड़ा हो जाता है,प्रेम और प्रसन्नता से भर जाता है,फिर उस की ख़ुशी बढ़ जाती है,उस की बेनियाज़ी अधिक हो जाती है,अल्लाह का परिचय मज़बूत हो जाता है,उस की रूह को संतुष्टि मिलती है और उस के दिल में शान्ति पैदा होती है,फिर वह उस ज्ञान के साथ उस के मैदानों में घूमता फिरता है,और ज्ञान के बग़ैचों में अपनी ज्ञानचक्षु (बसीरत) वाली आंख से देखता है,क्योंकि उस का विश्वास है कि किसी भी ज्ञान का महत्व उस ज्ञान से प्राप्ति होने वाली चीज़ों के महत्व पर आधारित होता है,और इस जैसी विशैषताओं वाली हस्ती से अधिक कोई भी प्राप्ति किया जाने वाला ज्ञान महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ नहीं है,और वह हस्ती अल्लाह तआला की हस्ती है जिस के प्यारे प्यारे नाम और प्रमुख विशेषतायें हैं,और ज्ञान का महत्व उस की आवश्यक्ता अनुसार होता है,और रूह को अपने पैदा करने वाले का ज्ञान,उस की मुहब्बत,उसे याद करना,अल्लाह को याद करेने से मिलने वाली ख़ुशी,अल्लाह तआला से वसीला मांगने और उस के दरबार से निकटता प्राप्त करने से अधिक कभी किसी महान चीज़ की आवश्यक्ता नहीं होती है,और उस आवश्यक्ता को पूरा करने का केवल एक ही मार्ग है और वह मार्ग अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं का ज्ञान है,बंदा जिस प्रकार अल्लाह

तआला के नामों और उस की विशेषताओं का ज्ञान रखता है उसी प्रकार अल्लाह तआला के विषय में जानकारी प्राप्त होती है,उसी प्रकार वह अल्लाह का इच्छुक रहता है, उस के निकट आता है,और बंदा जिस प्रकार उन नामों और उस की विशेषताओं को नकारता है उसी प्रकार वह अल्लाह की हस्ती से नावाक़िफ, उस को नापसंद करने वाला,और उस से दूर होगा,बंदा जिस प्रकार अपने दिल में अल्लाह तआला को जगह देता है उसी प्रकार अल्लाह तआला भी उस को अपने निकट जगह देता है।

अल्लाह तआला की हस्ती,उस के नामों और उस की विशेषताओं के ज्ञान में दिल के सुधार और ईमान की पुर्ति है.

चैथी बातः

अल्लाह तआला की हस्ती का ज्ञान रखने वाला व्यक्ति अल्लाह के नामों और उस की विशेषताओं के विषय में जानकारी को अल्लाह तआला के संपूर्ण कार्यों और निर्णायकों के लिये सबूत बनाता है; क्योंकि अल्लाह तआला वही करता है जो उस के नामों और उस की विशेषताओं के अनुसार होते हैं और उस के कार्य हिक्मत,न्याय और एहसान पर आधारित होते हैं,और अल्ला तआला जो भी निर्णय लेते हैं वह उस की बड़ाई हिक्मत और एहसान अनुसार होते हैं,इसी लिये अल्लाह की ओर से आने वाली सभी बातें सत्य और सही हैं और उस की ओर से मिलने वाले सभी निर्णायक न्याय,हिक्मत और दया पर आधारित हैं,अल्लाह के नामों और उस की विशेषताओं का यह ज्ञान महान है और अधिक स्पष्ट होने के कारण इस पर चेतावनी की कोई आवश्यक्ता भी नहीं है।

पाँचवीं बातः

अल्लाह तआला की विशेषताओं और उन के नोदनों (तक़ाज़ों) में शामिल होने वाली सब ज़ाहिरी और छुपी इबादतों के बीच एक गहरा तअल्लुक़ है,क्योंकि हर विशेषता के लिये एक विशेष बंदगी है जो उस के तक़ाज़ों में शुमार होती है,दिली तौर पर और शारीरिक तौर पर की जाने वाली संपूर्ण इबादतों में यह बात आम है; इस लिये जब बंदे को इस बात का विश्वास हो जाये कि केवल अल्लाह ही लाभ और हानि का मालिक है,वही देने और छीनने की क्षमता रखता है,वही जीविका देता है,वही पैदा करता है, वही मौत और जीवन का मालिक है,तो इस विश्वास से छुपे तौर पर बंदे के भीतर भरोसे की बंदगी पैदा होती है,और ज़ाहिरी तौर से अल्लाह पर भरोसे के प्रभाव ज़ाहिर होते हैं,बंदे का अल्लाह तआला के सुनने और देखने की शक्ति का ज्ञान रखना और इस बात का विश्वास रखना कि अल्लाह तआला से संसार की छोटी सी छोटी चीज़ भी छुपी नहीं है,वह हर ढकी छुपी चीज़ को जानता है,वह आंखों और सीनों में छुपी हुयी चीज़ों को जानता है,तो इस ज्ञान के कारण बंदे में हर उस चीज़ से बचने का जज़्बा पैदा होता है जिस से अल्लाह तआला क्रोधित होता है,फिर वह अपने अंगों उन चीज़ों से जोड़े रखता है जो अल्लाह तआला को प्रसन्न करते हैं जिस कारण

बंदे में छुपे तौर पर लज्जा की स्थिति (कैफियत) पैदा हो जाती है,और लज्जा बंदे को बुराइयों और हराम चीज़ों से दूर रखती है,जब बंदे को अल्लाह तआला की बेनियाज़ी,दानशीलता,पुरस्कार देने की क्षमता और उस की दया का ज्ञान होता है तो उस से बंदे की आशा बढ़ जाती है,इसी प्रकार जब बंदे को अल्लाह तआला के प्रताप,उस की महानता,उस के सम्मान का ज्ञान होता है तो इस से बंदे के भीतर नम्रता और विनम्रता और प्रेम आता है,फिर यह सब छुपी स्थितियां अपने अपने तक़ाज़ों के अनुसार बंदे में ज़ाहिरी बंदगी के अनेक तरीक़े पैदा करती हैं .. इस का तत्व यह निकला कि बंदगी का आधार अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं के तक़ाज़ों पर आधारित हैं।

छटवीं बातः

अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं की इबादत में दिलों और उस के स्वभाव एवं आचार की सुरक्षा है,जब कि इस का उलटा करने में अर्थात अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं को छोड़ देने में रूहानी बीमारियों का द्वार खोलना है।

सातवीं बातः

जब बंदा किसी मुसीबत, घृणित कामों और कष्ट में पड़ जाता है तो अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं का ज्ञान बंदे की सांत्वना का सामान बनता है,क्योंकि जब बंदे को इस बात पर विश्वास हो कि उस का रब अधिक जानने वाला,हिक्मत वाला,और न्याय करने वाला है जो किसी ऐसे व्यक्ति के साथ अन्याय नहीं करता जो उस के निर्णय से प्रसन्न हो और धैर्य करने वाला हो और बंदे में यह यक़ीन हो कि उस को पहुंचने वाली सभी मुसीबतों और सब परीक्षाओं में अनेक रूचियाँ और लाभ हैं जिन का जानना उस के बस से बाहर है,परन्तु अल्लाह तआला की हिक्मत और उस के ज्ञान का तक़ाज़ा यही है,तो इस विश्वास से बंदे को शांति मिलती है,अपने रब के निर्णय से वह प्रसन्न रहता है अपने सभी मामलों को अल्लाह के हवाले कर देता है।

आठवीं बातः

अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं का समझना, अल्लाह तआला की मुहब्बत,उस की महानता,उस की हस्ती से आशा करने, उस से डरने, उस पर भरोसा करने,सदा उसे हाज़िर व नाज़िर समझने और इस के अतिरिक्त बहुत सी विशेषतायें बंदे में पैदा करने का कारण हैं जो अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं की ज्ञान के फल हैं।

नोंवीं बातः

निःसंदेह अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं के अर्थ में विचार करना,अल्लाह तआला की किताब क़ुर्आन में विचार करने पर सहायक है; और अल्लाह तआला ने हमें अपने क़ुरआन में विचार करने का आदेश दिया है,अल्लाह तआला ने फरमायाः {यह मुबारक किताब है जिसे हम ने आप की ओर इस लिये उतारा है कि लोग इस की आयतों पर ध्यान दें और ख्याल करें और अक़्लमंद इस से नसीहत हासिल करें"।}[सादः 29].

और चूंकि क़ुरआने करीम में अधिकतर अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं के विषय में उचित जगहों पर ज़िक्र आया है, इस लिये उन नामों और विशेषताओं में विचार करने से क़ुरआने करीम के भीतर गौरो फिक्र करने का एक बड़ा द्वार खुल जाता है,जब आप क़ुर्आने करीम में विचार करेंगे तो क़ुरआन आप को आसमानों के ऊपर अर्श पर बैठे हुये ऐसे बादशाह और क़ायम करने वाली हस्ती को देखेंगे जो

अपने बंदों के मामलात चलाता है,उन्हें आदेश देता है और मना करता है,संदेष्टाओं को भेजता है,किताबें उतारता है,प्रसन्न होता है और क्रोधित भी,सवाब और अज़ाब देने की शक्ति रखता है,देता भी है और छीन भी लेता है,सम्मान देता है और ज़लील भी करता है,ऊँचा उठाता है और नीचे भी फेंक देता है,सातों आकाश के ऊपर से देखता और सुनता है हर ढकी और खुली चीज़ को जानता है,जो चाहता करता है,उस में हर विशेषता और हर प्रकार के गुण हैं,हर दोष से पाक है,कोई कण उस की अनुमति बिना हरकत नहीं करता,और कोई पत्ता भी नहीं गिरता मगर अल्लाह उसे जानता है,निःसंदह वह हस्ती अधिक ज्ञान और हिक्मत वाली है।

जिस ने अल्लाह तआला को पालिया उस ने क्या खोया?!और जिस ने अल्लाह को खो दिया उस ने क्या पाया?!

दस्वीं बातः

अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं का ज्ञान दिल में अल्लाह तआला का अदब,सम्मान और उस से लज्जा करने पर उभारता है,अल्लाह तआला के अदब और सम्मान का अर्थ यह है कि उस के दीन पर जमने के साथ साथ अमल किया जाये,और ज़ाहिरी एवं छुपे तौर पर उस दीन के आदाब को बजा लाया जाये,और अल्लाह तआला का अदब एवं सम्मान तीन चीज़ों के बिना पैदा हो ही नहीं सकता हैः एक अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं का ज्ञान हो,दूसरी चीज़ उस के दीन और शरीअत अथवा उस की प्रिय और अप्रिय चीज़ों का ज्ञान हो,तीसरी चीज़ ज्ञान और कर्म अनुसार तथा तुरंत सत्य को स्वीकारने वाला कोमल दिल हो।

ग्यारहवीं बातः

अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं का ज्ञान बंदे को अपने नफ्स की बुराइयों और उस में पायी जाने वाली कमी से खबरदार रखती है,फिर बंदा अपने नफ्स के सुधारने में जुट जाता है,याद रहे कि इन्कार और हटधर्मी के चार कारण हैंः घमंड,ईष्र्या,क्रोध और वासना(हविस) और चारों चीज़ों के पैदा होने का कारण बंदे की अपने रब से और स्वयं अपने आप से दूरी हो जाती है,और जब बंदा अपने रब की विशेषताओं की पूर्णता और उस के गुणों की महानता को जान लेता है और अपने नफ्स में पाई जाने वाली कोताहियों और बुराइयों को पहचान लेता है फिर न तो वह घमंड करता है और न क्रोध और न ही अल्लाह तआला की ओर से अपने किसी भाई को मिली हुयी नेमत पर डाह करता है।

बारहवीं बातः

बंदे का अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं का न तो ज्ञान रखना और न ही उसे समझना और उन विशेषताओं की बुनियाद पर उस की बंदगी न करना गुमराही और जहालत का कारण

है,जिस व्यक्ति ने अल्लाह और उस के रसूल को न पहचाना उस ने फिर क्या जाना? जिस व्यक्ति को अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं की (वास्तविक्ता) हक़ीक़त का ज्ञान न हो तो उसे किस चीज़ की हक़ीक़त का ज्ञान होगा? और जिस व्यक्ति को अल्लाह तआला की हस्ती,उस की मरज़ी और चाहत अनुसार अमल,उस के दरबार के निकट करने वाले मार्गों और अल्लाह तआला के दरबार तक पहुंचने के बाद उस को मिलने वाली नेमतों का ज्ञान न हो तो फिर उसे कौन से ज्ञान और अमल वाला समझा जायेगा? निःसंदेह मानव जीवन उस की रूह व दिल के जीवित होने पर निर्भर है,और दिल उसी समय जीवित रह सकता है जब उसे अपने पैदा करने वाले का ज्ञान और उस से प्रेम हो,उसी की इबादत में वह लगा हो,उसी के समीप विलाप करता हो,उसी की याद से उस को सुकून प्राप्त होता हो,और उसी की निकटता से उस को प्रेम हो,जिस व्यक्ति को इस जैसा जीवन प्राप्त न हो वास्तविकता में वह हर प्रकार की भलाई से वंचित (महरूम) है? चाहे उस के बदले दुनिया के संपूर्ण सुख उसे प्राप्त हो जायें।

तेरहवीं बातः

अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं का ज्ञान एकेश्वरवाद के विशुद्व करने और ईमान की पूर्णता का कारण है,इसी ज्ञान से दिल के कार्य जैसे निश्छलता,प्रेम,उम्मीद,डर और एक हस्ती पर भरोसा करने का जज़्बा पैदा होता है, अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं के ज्ञान की ओर ध्यान,और उस में विचार एक छोटा सा कार्य है परन्तु दिलों को सुधारने और वस्वसों एवं आफतों से दिलों को पाक रखने में इस का बहुत बड़ा रोल है,जो व्यकित शरीअत के उसूल व ज़वाबित में विचार करेगा तो उसे यह ज्ञान हो जायेगा कि अंगों के कार्य दिलों के कार्य से जुड़े हुये हैं और अंगों के कार्य दिलों के कार्य के बिना लाभदायक नहीं हो सकते,अथवा उसे यह भी पता चल जायेगा कि अंगों के कार्य से अधिक महत्व दिलों के कार्यों की है,क्या मोमिन और मुनाफिक़ के बीच केवल इसी बात से फर्क़ नहीं किया जाता है कि इन दोनों के दिलों में क्या क्या चीज़ें छुपी हुयी हैं,जो इन दोनों को एक दूसरे से अलग करते हैं? और क्या किसी भी मनुष्य के लिये अंगों के कार्य से पहले दिल के कार्य के ज़रिये इस्लाम में परवेश करने के अतिरिक्त कोई और मार्ग है? जो दिल की बंदगी से अधिक महान व महत्वपुर्ण और सदा बाक़ी रहने वाला है,और यही बंदगी अंगो से होने वाले कार्यों का रास्ता है,इसी लिये दिल की बंदगी हर समय अनिवार्य है।

अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं के समझने के विषय में नियम एवं चेतावनीः

अल्लाह तआला के ज्ञान में दिलों और जिस्मों का सुधार है।

अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं के समझने के विषय में नियम एवं चेतावनीः

”उस जैसी कोई चीज़ नहीं,और वह सुनने वाला देखने वाला है“। [अश्शूराः 11].

1- बेशक अल्लाह तआला के सब नाम अच्छे हैं,अल्लाह तआला ने फरमायाः {और अच्छे नाम अल्लाह के लिये ही हैं“।}[अल आराफः 180].

vYykg rvkyk dks ge us ml dh cqyan t+ात से पहचाना ताकि हम उस की इबादत करें,उसे महान समझें,उस से प्रेम करें,उस से डरें और उस से उम्मीद बाँधें।

2- अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं के प्रमाण के दो स्रोत (मसदर) हैं तीसरा कोई नहीं,और वह अल्लाह की किताब और उस के रसूल की सुन्नत है,अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं का प्रमाण इन दोनों के सिवा किसी और मसदर से नहीं हो सकता,हम वही साबित करेंगे जिसे अल्लाह और उस के रसूल ﷺ ने साबित किया है, इसी प्रकार उस के विपरित की पूर्णता को हम साबित करेंगे,और जिस के सबूत और इन्कार के विषय में कोई चीज़ नहीं आई है उस में चुप रहना अनिवार्य है,इस लिये कि प्रमाण न होने के कारण किसी चीज़ का सबूत नहीं होगा और इन्कार न आने के कारण किसी चीज़ को नकारा नहीं जायेगा,हाँ अर्थ के विषय में विस्तार (तफ्सील) है,अगर उस से हक़ का इरादा किया गया जो अल्लाह तआला के योग्य है तो स्वीकार्य है,और अगर उस से ऐसे अर्थ का इरादा किया गया जो अल्लाह तआला के योग्य नहीं है तो उस का अस्वीकार्य अनिवार्य है।

3- अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं में कलाम करना उस की ज़ात में कलाम करने की तरह है,जिस प्रकार हम पविन्न ज़ात की कैफियत नहीं जान सकते,इसी प्रकार हम अच्छी विशेषताओं की कैफियत भी नहीं जान सकते,परन्तु हम उस पर ईमान लाते हैं और बिना,किसी रद्दो बदल,तातील(अर्थात अल्लाह तआला को उस के नामों और विशेषताओं से खाली मानना) औ तकयीफ के(अल्लाह तआला की विशेषता की हिकायत बयान करना जैसे यह कहना कि अल्लाह तआला का हाथ इस प्रकार है) और बिना तमसील के(अल्लाह तआला की विशेषताओं की मिसाल बयान करना)।

4-अल्लाह तआला के नाम और उस की विशेषताओं के हक़ीक़ी अर्थ हैं,न कि अवास्तविक

https://www.with-allah.com/hi

मजाज़ी,और न ही रहस्यपूर्ण,और यह अल्लाह तआल की ज़ात पर और उस की पूर्णता की विशेषताओं पर प्रमाणित हैं जो उस के साथ क़ायम हैं,जैसे शक्तिमान,जानकार,हिक्मत वाला,सुनने वाला और देखने वाला,तो निःसंदेह यह सब नाम अल्लाह तआला की ज़ात और उस की शक्ति,ज्ञान,हिक्मत,सुनने और देखने पर दलालत करते हैं।

5- अल्लाह तआला को ख़ामियों से पविन्न मानना ये बिना तातील के उस की पविन्नता बयान करना हुआ,और अल्लाह ताअला की ज़ात से कमियों का इन्कार संक्षेप प्रकार से करना है और हर एक विशेषता की पूर्णता को विस्तार से साबित करना है,अल्लाह तआला ने कहाः {उस जैसी कोई चीज़ नहीं,और वह सुनने वाला देखने वाला है“।}[अश्शूराः 11].

6- अल्लाह तआला के नामों पर ईमानः

जिस प्रकार नाम और उस सिफत पर ईमान जिस को नाम शामिल है तक़ाज़ा करता है ठीक उसी प्रकार उस प्रभाव पर ईमान जिस का तअल्लुक़ नाम से है भी तक़ाज़ा करता है,अर्थात अल्लाह तआला का अर्रहीम नाम अल्लाह तआला की दया वाली विशेषता को शामिल है,तो अल्लाह तआला अपनी दया के ज़रिये अपने बंदों पर मेहरबानी करता है।

और यहाँ पर कुछ महत्वपूर्ण चेतावनियाँ हैं जो अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं के समझने में सहायक हैं,और वह निम्न लिखित हैंः

1- अल्लाह तआला के नाम किसी निश्चित सीमा तक ही सीमित नहीं हैं,हदीस में हैः «मैं तुझ से तेर हर उस नाम के ज़रिये सवाल करता हूँ जिसे तूने अपना नाम बनाया या अपने मखलूक़ में से किसी को सिखाया या उसे तू ने अपनी किताब में उतारा या अपने इल्मे गैब में इसे अपने लिये खास कर लिया..» (अहमद).

2- अल्लाह तआला के नामों में से कुछ नाम ऐसे हैं जो केवल अल्लाह के साथ खास हैं,उस में कोई और अल्लाह का साझी नहीं है,और अल्लाह तआला के अतिरिक्त किसी और को ये नाम नहीं दिये जा सकते जैसे,अल्लाह,अर्रहमान,और कुछ ऐसे हैं जो दूसरों के नाम रख सकते हैं,अगरचे अल्लाह तआला के नाम और उस की विशेषतायें अधिकतर पूर्ण और मुकम्मल हैं.

3- अल्लाह तआला के नामों से विशेषतआयें ली जाती हैं,हर नाम में विशेषता पाई जाती है,परन्तु विशेषता से नाम नहीं निकलता,जैसे हम कहें कि अल्लाह को क्रोध आता है लेकिन हम ये नहीं कह सकते कि अल्लाह तआला अलगज़ूब (क्रोध वाला) है,अल्लाह तआला इस से पाक है.

बंदे पर अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं पर ईमान लाने के प्रभावः

1- अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं की बंदगीः जब बंदे को पता चला तो वह उन पर उस प्रकार ईमान ले आया जैसे अल्लाह तआला चाहता है,और उस ने उन का अर्थ जान लिया जिस से उस का अपने ऊपर ईमान अधिकतर हो गया तो अल्लाह तआला की महानता उसे पहचानने वाले के दिल में अधिक हो जायेगी,इसी लिये कहा गयाः " जो जितना अधिक अल्लाह तआला को पहचानेगा उतना अधिक वह अल्लाह तआला से डरेगा ".

2- ईमान में बढ़ोतरीः

अच्छे अच्छे नामों और उस की महान विशेषताओं के ज्ञान से बंदे को अल्लाह तआला की महानता का एहसास होता है जिस के कारण उस के ईमान और विनम्रता में बढ़ोतरी होती है.. {और जो लोग हिदायत हासिल कर चुके हैं अल्लाह ने उन्हें संमार्ग में और बढ़ा दिया है"।}[मुहम्मदः 17].

3- अल्लाह तआला का ज़िक्रः

जो अल्लाह तआला को पहचान लेगा वह उस से प्रेम करेगा और जो अल्लाह तआला से प्रेम करेगा वह उसे अधिक याद करेगा,क्योंकि प्रेम के ज़रिये अल्लाह ने उस के दिल पर क़ब्ज़ा कर लिया यहाँ तक कि वह उसी से प्रेम करने लगता है जिस से अल्लाह तआला प्रेम करता है, और उस से घृणा करने लगता है जिस से अल्लाह तआला घृणा करता है।

4- अल्लाह तआला की मुहब्बतः अल्लाह तआला फरमाता हैः {और कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अल्लाह के साझीदार दूसरों को ठहराकर उन से ऐसा प्रेम रखते हैं जैसा प्रेम अल्लाह से होना चाहिये और ईमान वाले अल्लाह से प्रेम में सख्त होते हैं"।} [अल बक़राः 165].

जब बंदे को अल्लाह तआला की महान विशेषता के विषय में पता चलेगा तो उस का नफ्स अल्लाह की ओर झुक जायेगा और उस का तअल्लुक अल्लाह तआला से मज़बूत हो जायेगा और रूह अपने रब की पूर्ण महिमा और खूबसूरती से झूम जायेगी,फिर बंदे को अल्लाह के कलाम में आनंद आयेगा,अल्लाह तआला से प्रार्थना करके उसे सुकून मिलेगा,वह अल्लाह से आशा करेगा और उस से डरेगा,क्योंकि अल्लाह तआला

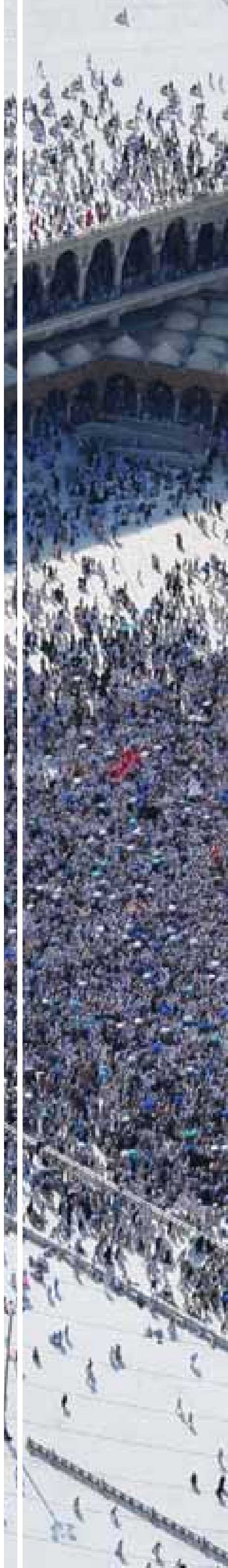

की मुहब्बत ऐसा करने पर उसे उभारेगी,फिर आप देखेंगे कि वह अल्लाह से मुहब्बत करेगा, और उन चीज़ों से अथवा उन लोगों से भी मुहब्बत करेगा जिन से अल्लाह तआला मुहब्बत करता है।

5- अल्लाह तआला से शरमानाः

जब तुम उसे पहचान लोगे तो अल्लाह से डरोगे और जब अल्लाह तआला से डरोगे तो अल्लाह तआला से आप की लज्जा बढ़ जायेगी,फिर यह डर बंदे की रक्षा करेगी, मौत की याद दिलायेगी और रुलायेगी,और आप के अंगों की रक्षा करेगी ताकि अल्लाह तआला आप से प्रसन्न हो जाये।

6-नफ्स की विनम्रता और उस की आजज़ीः

जब आप ने अल्लाह तआला को पहचान लिया तो अपनी तुच्छता को भी जानो,और जब आप ने उस की शक्ति को जान लिया तो अपनी कमज़ोरी को भी पहचानो,और जब उस की बादशाहत का ज्ञान हो गया तो अपनी गरीबी और मुहताजी को पहचानो,और जब उस की पूर्णता को समझ चुके हो तो अपनी कमी को भी पहचानो और जब आप ने उस की विशेषताओं की पूर्णता और उस के नामों की खूबसूरती को जान लिया तो अपनी अधिक गरीबी और मुहताजी को भी जानो, यह सारी चीज़ें और आप की तुच्छता आश्चर्यजनक नहीं क्योंकि आप तो केवल अल्लाह के बंदे हो.

किसी व्यक्ति के लिये ठीक नहीं है कि वह अल्लाह की ज़ात के विषय में कुछ बोले, और न उस के बारे में कुछ बयान करे मगर जैसा कि उस ने स्वयं अपने विषय में बयान किया है,और उस के बारे में अपनी राय से कुछ न कहे, अल्लाह तआला की ज़ात बरकत वाली है,वह संपूर्ण संसार का रब है।

इमाम अबू हनीफा

समीक्षाः

1- अल्लाह तआला के कथनः (और अच्छे नाम अल्लाह के लिये ही हैं,इस लिये इन नामों से अल्लाह ही को पुकारो,और ऐसे लोगों से सम्बंध भी न रखो जो उस के नामों में टेढ़ापन करते हैं,उन लोगों को उन के किये की सज़ा ज़रूर मिलेगी)। {अल आराफः 180}. इस का अर्थ स्पष्ट रूप से बयान करें।

2- अल्लाह तआला और उस के नामों एवं विशेषताओं का ज्ञान क्यों सब से श्रेष्ठ ज्ञान है?

3- अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं को आप किस प्रकार समझ रहे हैं? उदाहरण के तौर पर आप को किस प्रकार पता चलेगा कि अल्लाह तआला अधिक क्षमा करने वाला है?

वही अल्लाह है जिस के सिवाय कोई पूज्य नहीं।

https://www.with-allah.com/hi

अल्लाह (जिस की उपासना की जाये)	एक	बुलंद	अधिक करम वाला	माबूद	पहला
अंतिम	स्श्प्दजन्रतपमनतए सम ब्बीन्र	स्म च्तवकनबजमनत	स्म ठपमदपिजमनत	स्म टवलंदजए ब्मसनप ु नप अवपज जवनजम बीवेम	फनप दम बमेम कशंबबनमपससपत सम तमचमदजपत
अधिक तोबा क़ुबूल करने वाला	स्म च्तवजमबजमनत	फनप तध्हसम सम बवउचजम कम जवनज सम उवदकम	स्म ळंतकपमद	स्श ाïइसम	स्म टतंप
हक़	ज़ाहिर करने वाला	हिकमत वाला	सहनशील	प्रशंसा किया हुआ	हमेशा जीवित रहने वाला
हमेशा क़ायम करने वाला	स्पष्ट(ज़ाहिर)	छुपा	पैदा करने वाला	नेकी और भलाई करने वाला	देखने वाला
रहम करने वाला	अधिक रोजी देने वाला	निगरानी करने वाला	शांति वाला	सुनने वाला	शुक्र गुज़ार
अधिक शुक्र करने वाला	गवाह	बेनियाज़	ज्ञानी	गलबा पाने वाला	महान
क्षमा करने वाला	अधिक जानकार	बुलंद	अधिक बख़शने वाला	बख़शने वाला	बेपरवाह
खोलने वाला	शक्तिमान	ग़ालिब	पाक	कुदरत वाला	निकट

https://www.with-allah.com/hi

मज़बूत	अधिक ग़लबा पाने वाला	बड़ा	बुजुर्ग और दानी	नरमी करने वाला	शांति देने वाला
अधिक बुलंद	बड़ाई करने वाला	ज़बरदस्त ताक़त वाला	क़बूल करने वाला	बड़ी शान वाला	घेरने वाला
सूरत देने वाला	पूरी कुदरत वाला	रोज़ी देने वाला	बादशाह	मालिक	दोस्त
निगहबान और हिफाज़त करने वाला	सहायक	अकेला	उत्तरधिकारी	कुशादा	दोस्त भलाई चाहने वाला
दोस्त भलाई चाहने वाला	दोस्त	अधिक देने वाला	खूबसूरत	अधिक दानी(सख़ी)	न्याय करने वाला
जीवित	पालनहार	दोस्त	बेऐब	मालिक	शिफा देने वाला
उत्तम	तंगी करने वाला	कुशादगी करने वाला	आगे करने वाला	पीछे करने वाला	एहसान करने वाला
		देने वाला	एहसान जतलाने वाला	ताक़(अकेला)	

रसूल ﷺ ने फरमायाः

«बेशक अल्लाह तआला के 99 नाम हैं जिस ने इसे याद किया वह जन्नत में दाखिल होगा।» (बुखारी)

अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं के साथ जीवनः

क- बेशक वह अल्लाह हैः

अल्लाह अधिक मेहरबान और अधिक दयावान है..

बेशक वह अल्लाह है जो अधिक मेहरबान और अधिक दयावान है..

अल्लाह ने अपने ऊपर दया को लिख दिया है,और उस की दया उस के क्रोध से आगे है और उस की दया हर चीज़ को आम है.. {बेशक अल्लह की रहमत नेक लोगों से क़रीब है"।}[अल आराफः 56].

" निःसंदेह अल्लाह तआला रहमान और रहीम है "

"अर्रहमान,अर्रहीम,अलबर्र अलकरीम,अलजव्वाद,अर्रऊफ, अलवह्हाब": इन नामों के अर्थ मिलते जुलते हैं और सब के सब इस बात पर दलालत करते हैं कि अल्लाह तआला दया, भलाई, उदारता, करम जैसी विशेषताओं से मुŸासिफ है,और उस की उस दया पर प्रमाण है जो अपनी हिकमत के तक़ाज़ों के अनुसार संसार को घेरे हुये है,और इस दया का अधिकतर भाग मोमिनों के साथ खास है,अल्लाह तआला फरमाता हैः "और मेरी रहमत के दायरे में हर चीज़ है,तो वह रहमत उन लोगों के नाम ज़रूर लिखूँगा,जो अल्लाह से डरते हैं"। {अल आराफः 156}.

संपूर्ण इनाम और हर प्रकार के एहसानात अल्लाह तआला की दया,और उस की उदारता एवं उस की दानशीलता को ज़ाहिर करते हैं,अथवा लोक प्रलोक की सारी भलाइयाँ उसी की रहमत के गवाह हैं।

अल्लाह तआला की ज़ात हमारी माओं से अधिक हम पर दयालू है,नबी ﷺ ने अपने बच्चे को दूध पिलाने वाली माँ की ओर इशारा करते हुये यह कहाः «इस औरत के बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है क्या यह अपने बच्चे को आग में झोंक सक्ती है,हम ने कहाः नहीं वह अपने बच्चे को आग में नहीं झोंक सक्ती,तो आप ने फरमायाः यह औरत जिस तरह अपने बच्चे पर मेहरबान है अल्लाह तआला अपने बंदों पर इस से अधिक दयालू है» (बुखारी).

" निःसंदेह अल्लाह तआला रहमान और रहीम है "

अल्लाह तआला संपूर्ण संसार पर दया करता है,और उस के पास वह दया भी है जो उस के मोमिन बंदों के लिये विशेष है।

" निःसंदेह अल्लाह तआला रहमान और रहीम है "

अल्लाह तआला की ज़ात हमारी माओं से अधिक हम पर दयालू है,नबी ﷺ ने अपने बच्चे को दूध पिलाने वाली माँ की ओर इशारा करते हुये यह कहाः

«इस औरत के बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है क्या यह अपने बच्चे को आग में झोंक सक्ती है,हम ने कहाः नहीं वह अपने बच्चे को आग में नहीं झोंक सक्ती,तो आप ने फरमायाः यह औरत जिस तरह अपने बच्चे पर मेहरबान है अल्लाह तआला अपने बंदों पर इस से अधिक दयालू है।» (बुखारी).

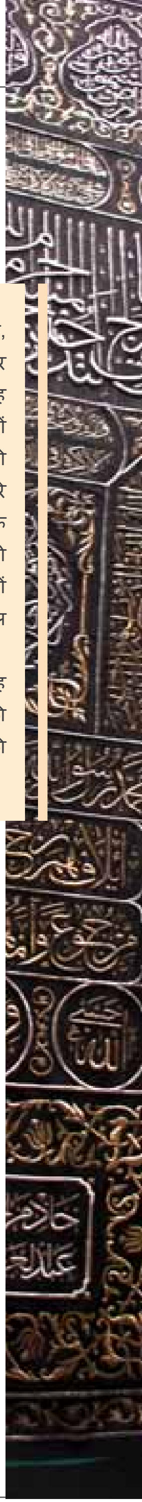

"निःसंदेह अल्लाह तआला रहमान और रहीम है"

अल्लाह तआला संपूर्ण संसार पर दया करता है,और उस के पास वह दया भी है जो उस के मोमिन बंदों के लिये विशेष है। {और अल्लाह मुसलमानों पर बड़ा रहम करने वाला है"।}[अल अहज़ाबः 43].

"निःसंदेह अल्लाह तआला रहीम है"

उस की रहमत का तक़ाज़ा है कि उस ने मुहम्मद को संपूर्ण संसार के लिये रहमत की शक्ल में इन्सानियत के लिये मार्गदर्शक,और उन की दीनी व दुनियवी हितों का रक्षक बना कर भेजा।

"निःसंदेह अल्लाह तआला रहीम है"

उस की रहमत को उस के अतिरिक्त कोई रोकने वाला नहीं और न ही उस के अतिरिक्त कोई भेजने वाला है। {अल्लाह जो दया लोगों के लिये खोल दे तो उस का कोई बंद करने वाला नहीं,और जिस को बंद कर दे उस के बाद उस को कोई शुरू करने वाला नहीं,और वही ज़बरदस्त हिक्मत वाला है"।}[फातिरः 2].

"निःसंदेह अल्लाह तआला रहमान और रहीम है"

अल्लाह तआला वह्हाब और जव्वाद है..

निःसंदेह अल्लाह तआला वह्हाब और जव्वाद है..

ऐ नेमतें देने वाले... ऐ उम्मीदो को बाँध रखने वाले... ऐ एहसान करने वाले.

मुझे प्रसन्नता दे... मुझे शांति दे... मुझे खुशी और प्रेम अता कर..

हम पर एहसान और करम कर,तू फज़्ल, उदारता और करम वाला है.. {और हमें अपने पास से रहमत अता कर,बेशक तू ही सब से बड़ा दाता है"।}[आले इमरानः 8].

«बेशक अल्लाह तआला दानशील है दानशीलता और अच्छे स्वभाव को पसंद करता है और बुरे व्यवहार को नापसंद करता है» (त्रिमिज़ी).

"अलवह्हाब"

जिसे चाहता है देता है और जिसे चाहे मना कर देता है.

"अलजव्वाद"

अल्लाह के देने की कोई हद नहीं है,और उस के एहसान को कोई रोक नहीं सकता,वह किसी चीज़ को कहता हैः {हो जा पस वह हो जाती है"। अल बक़राः117}
[नामों और उस की विशेषताओं का].

"अल वह्हाब"

वह हिस्सी और आँतरिक(मानवी) जीविका देता है और अपने करम व एहसान से खूब देता है.

अल्लाह तआला अपने बंदे के दिल में जो अच्छे खयालात,लाभदायक बातें, ज्ञान, हिदायत,तौफीक़,खुशी डालता है और उस की दुआओं को क़बूल करता है,इन सब चीज़ों का तअल्लुक़ आँतरिक (मानवी) रोज़ी से है जिसे अल्लाह तआला ने अधिक लोगों को दे रखा है।

"अल वह्हाब"

दे या न दे,ऊँचा करे या अवंधे मुंह गिरा दे,और बराबर एहसान करे,या उसे खतम कर दे,उसी के हाथ में हर प्रकार की भलाई है,बेशक वह हर चीज़ पर शक्तिमान है।

बेशक अल्लाह तआला अलवह्हाब और अलजव्वाद है..

अल्लाह ताला अलवासे है..

अल्लाह ताला अलवासे है..{अल्लाह बहुत ताक़त वाला जानने वाला है"।}
[अल बक़राः 115].

" अलवासे "..

वह जव्वाद अर्थात दानशील है,उस की दानशीलता हर एक प्रश्न के लिये काफी है।

" अलवासे "..

अल्लाह तआला अपनी विशेषताओं में संपूर्ण है... अपने नामों में महान है उस की प्रशंसा को मापा नहीं जा सकता,वह कुशादा महानता,बादशाहत,सलतनत,उदारता और अधिक करम व एहसान का मालिक है।

" अलवासे "..

संपूर्ण सृष्टि को अपने ज्ञान, दान, रक्षा, निगरानी,और तदबीर से घेरे हुये है।

" अलवासे "..

अल्लाह ताला की ज़ात सब आवाज़ों को सुनती है और अनेक ज़ुबानों के कारण उसे मुग़ालता नहीं होता।

" अलवासे "..

अल्लाह तआला ने अपने बंदों के लिये उपासना को सरल कर दिया है,दीन को उन के लिये आसान बना दिया है,और उस ने बंदों को अपनी दया से ढाँप लिया है।

बेशक अल्लाह तआला अल वासे है..

अल्लाह तआला अल वदूद है..

बेशक अल्लाह तआला अल वदूद है.. {और वह बड़ा माफ करने वाला और बहुत प्रेम करने वाला है"।}[अल बुरूजः 14].

अल्लाह तआला अपने बंदों से मुहब्बत करने वाला है,उन से मुहब्बत करता है,उन्हे अपने निकट करता है, उन्हें प्रसन्न करता है,और उन से प्रसन्न होता है.. {अल्लाह उन से प्रेम करता है और ये अल्लाह से प्रेम करते हैं"।}[अल माइदाः 54].

अल्लाह तआला उन्हें लोगों की मुहब्बत प्रदान करता है,फिर लोग उस से मुहब्बत करने लगते हैं और उन की बातें स्वीकारते हैं।

"अलवदूद"..

अल्लाह तआला क़रीब है अपने बंदों से, वह अपने बंदो से मुहब्बत करता है और उन के लिये भलाई चाहता है।

"अलवदूद"..

अल्लाह के बंदे अल्लाह तआला से मुहब्बत करते हैं और उस से मिलने के इच्छुक हैं,और हदीस में है: «जो व्यक्ति अल्ला तआला से मुहब्बत करेगा वह अल्लाह तआला से मिलने का शौक़ीन होता है» (बुखारी).

"अलवदूद"... वह ज़ात है जो अपने नबियों,रसूलों,और उन की पैरवी करने और उन से मुहब्बत करने वालों से मुहब्बत करती है,अल्लाह तआला की ज़ात उन के निकट हर चीज़ से अधिक प्रिय है,उन के दिलों में अल्लाह की मुहब्बत भरी है और उन की जुबानों पर अल्लाह तआला का ज़िक्र है और उन के दिल प्यार,इख्लास,और हर एतबार से उस की ओर रूजू हो कर आस लगाये हुये हैं।

"अलवदूद".. अल्लाह तआला तुम्हें इस बात का आदेश देता है कि तुम अपने दिल को पविन्न रखो कीना कपट और नफरत से दिल को दूर रखो अथवा कीना कपट की गंदगी को पानी से धुल दो और हसद की आग को प्यार व मुहब्बत के ओले से बुझा दो।

बेशक अल्लाह तआला अल वदूद है..

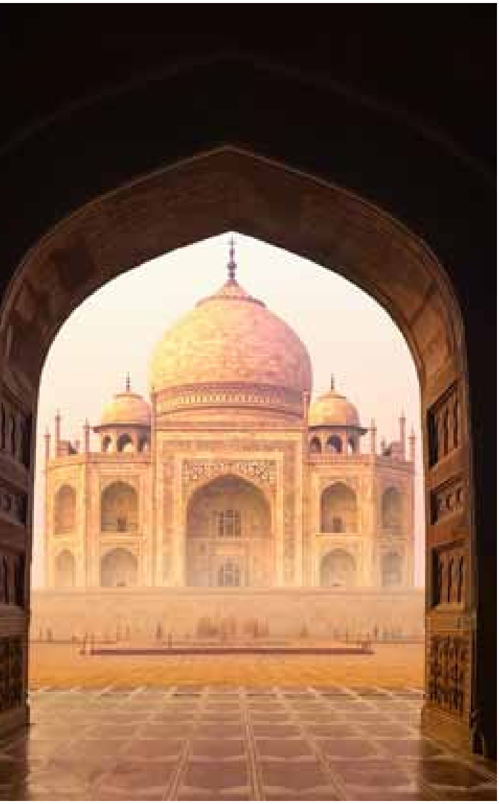

अल्लाह तआला अल हय्य और अल क़य्यूम है..

{अल्लाह वह है जिस के सिवाय कोई सत्य माबूद नहीं,जो ज़िंदा है और सभी का रक्षक है"।} [आले इमरानः 2].

बेशक अल्लाह तआला अल क़य्यूम है.. {अल्लाह वह है जिस के सिवाय कोई सत्य माबूद नहीं,जो ज़िंदा है और सभी का रक्षक है"।}[आले इमरानः 2].

"अल हय्य"

संपूर्ण जीवन वाला,उस को किसी की आवश्यक्ता नहीं,जब कि दूसरों को उस की आवश्यक्ता है... और अल्लाह तआला की ज़ात के अतिरिक्त हर चीज़ हलाक होने वाली है।

"अल क़य्यूम"..

वह ज़ात जो स्वयं क़ायम और सब से बेनियाज़ है।

"अल क़य्यूम"..

हर नफ्स के करतूतों का ज्ञान रखने वाला,उन के आमाल,हालतों,कथनों,उन की अच्छाइयों और उन की बुराइयों का रक्षक है,जो उन के अमलों की बुनियाद पर उन्हें प्रलोक में बदला देने वाला है।

"अल क़य्यूम"..

बंदों के आमाल की गिनती रखने वाला।

"अल क़य्यूम"..

अपने हर मखलूक़ के जीवन,उन की जीविका,उन के अहवाल और उन के मामलों की तदबीर का ज़िम्मेदार।

"अल हय्य अल क़य्यूम"

बिना निधन के बाक़ी रहने वाला।

"अल हय्य अल क़य्यूम"

अल्लाह अल जब्बार है..

बेशक अल्लाह तआला अल जब्बार है.. {वही अल्लाह है जिस के सिवाय कोई पूज्य नहीं,मालिक,बहुत पाक,सभी बुराइयों से पविन्न,शांति अता करने वाला,रक्षक,ग़ालिब,ताक़तवर,महान,पाक है अल्लाह उन चीज़ों से जिन्हें ये उस का साझीदार बनाते हैं“।}[अल हश्रः 23].

संपूर्ण जीवन वाला स्वयं अपने वजूद को क़ायम रखने वाला। आसमान और ज़मीन वालों के लिये क़ायम करने वाला,उन की रोज़ी और दूसरे तमाम अहवाल की तदबीर करने वाला।
”अल हय्य “
संपूर्ण ज़ाती विशेषताओं वाला,और अल क़य्यूम“ः दूसरी संपूर्ण विशेषताओं वाला।

”अलजब्बार“...

टूटे हुये को जोड़ने वाला,कैदी की सहायता करने वाला,मुहताज को बेनियाज़ करने वाला,भटकने वालों को सुधारने वाला, गुनहगारों के गुनाहों को क्षमा करने वाला,अज़ाब दिये जाने वालों को आज़ाद करने वाला,और मुहब्बत करने वालों और विनम्रों के दिलों को तसल्ली देने वाला।

”अल जब्बार“...

वह ज़ात जो सब से ऊपर है और उस की नेमतें हर चीज़ से बुलंद हैं।

”अल जब्बार“...

वह ज़ात जिस के सामने हर चीज़ पस्त और झुकी हुयी है,और किसी एक मामले के कारण वह दूसरे मामले से बे खबर नहीं है।

”अल जब्बार“...

स्लतनत,बादशाहत,हुकूमत और महानता एवं बुज़ुर्गी वाला।

”अलजब्बार“...

उस के सामने बड़े बड़े ज़ालिम झुकते हैं और महान लोग माथा टेकते हैं और बादशाह और बड़े बड़े लोग उस के सामने आजज़ी ज़ाहिर करते हैं और उस के सामने बड़े बड़े मुज्रिम और सर्कश टूट जाते हैं।

बेशक वह अल्लाह तआला अल जब्बार है..

”अलजब्बार“ अर्थात वह बुलंद व बाला है अथवा इस का अर्थ ग़ालिब,मेहरबान के भी हैंः अर्थात टूटे हुये दिलों को जोड़ने वाला और कमज़ोर,आजिज़ को तसल्ली देने वाला और जो उस की ओर पनाह ढूँडे उसे पनाह देने वाला है।

अल्लाह तआला अल जमील है ..

बेशक अल्लाह तआला अल जमील है।

ऐ अल्ल्लाह हम तुझ से तेर मुबारक चेहरे को देखने की लज़्ज़त के सवाली हैं और तेरी मुलाक़ात के शौक़ीन हैं।

" अल जमील "

अल्लाह के अधिक अच्छे अच्छे नाम और उत्तम विशेषतायें हैं।

" अल जमील "

संपूर्ण नामों और पूर्ण विशेषताओं की खूबसरती बल्कि निपेक्ष पूर्णता की सुंदरता अल्लाह तआला के लिये है। {और तुम्हारे रब के कलाम सच्चे क़ौल और इन्साफ में पूरा हो गये"।}[अल अनआमः 115].

वह ज़ात जिस ने हर चीज़ को बड़े निराले ढाँचे में पैदा किया है।

" अल जमील "

संसार की सुंदरता अल्लाह की महिमा एवं सुंदरता का प्रमाण है,अल्लाह तआला की सुंदरता बुद्वियों में नहीं आसकती,और न ही किसी की समझ उसे बयान कर सकती है,नबी ﷺ ने फरमायाः «मैं तेरी वैसी प्रशंसा नहीं कर सकता जैसी प्रशंसा का तू हक़दार है,तू वैसे ही है जैसा तू ने स्वयं अपने बारे में बयान किया है।» (मुस्लिम)

" अल जमील "

अल्लाह तआला को संसार की सुंदरता, स्वभाव की सुंदरता और अच्छे गुमान की सुंदरता प्राप्त है।

ऐ सुंदरता को प्रिय रखने वाली सुंदर ज़ात,हमारे दिलों को ईमान की रोशनी से सुंदर बनादे,हमारे स्वभाव,हमारे दिलों और हमारी ज़ाहिरी शक्लों को सुंदर बना दे।

बेशक अल्लाह तआला अल जमील है।

अल्लाह तआला,अल अलीम,अल खबीर और अल मुहीत.. है।

बेशक अल्लाह तआला अल अलीम,अल खबीर और और अल मुहीत.. है।

" अल अलीम,अल खबीर,अल मुहीत"

वह ज़ात जिस के ज्ञान ने ज़ाहिर व रहस्य,पोशीदा व घोषड़ा की हुयी,यक़ीनी व मुहाल और संभावित चीज़ों अथवा निचली और ऊपरी दुनिया को,और भूत,वर्तमान और भविष्य को घेरे हुये है,कोई भी चीज़ उस के ज्ञान से छुपी नहीं है।

"अल अलीम,अल खबीर"

{बेशक अल्लाह ही के पास क़यामत का इल्म है,वही बारिश करता है और माँ के गर्भ में जो है उसे जानता है,कोई नहीं जानता कि कल क्या कुछ कमायेगा,न किसी को यह मालूम है कि किस धरती पर मरेगा,याद रखो अल्लाह ही पूरे ज्ञान वाला और सच्चाई जानने वाला है"।}[लुक़मानः 34].

"अल्लाह तआला अल अलीम और अल मुहीत है"

{वह आसमानों और ज़मीन की सभी चीज़ों का ज्ञान रखता है और जो कुछ तुम छिपा रखो और जो ज़ाहिर करो वह जानता है,अल्लाह तो सीनों तक की बातों को जानने वाला है"।}[अÿग़ाबूनः 4].

अल्लाह तआला हर चीज़ को जानता है.. {अल्लाह वह है जिस ने सात आकाश बनाये और उसी की तरह धरती भी,उस का हुक्म उन के बीच नाज़िल होता है ताकि तुम जान लो कि अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है,और अल्लाह ने हर चीज़ को अपने ज्ञान की परिधि में घेर रखा है"।}¿अÿलाक़ः 12].

और अल्लाह तआला ने फरमायाः {और अल्लाह ने हर चीज़ को अपने ज्ञान की परिधि में घेर रखा है"। {अÿलाक़ः 12} [अÿलाक़ः 12].

" बेशक अल्लाह तआला अल अलीम,अल खबीर और अल मुहीत है"

अल्लाह तआला अल क़रीब है..

बेशक अल्लाह तआला अल क़रीब है..

हे वह ज़ात जो हर उस व्यक्ति के क़रीब है जो उस से माँगता है... हे वह ज़ात जो हर उस व्यक्ति के क़रीब है जो उस से आशा करता है।

हे वह ज़ात जो हर उस व्यक्ति के क़रीब है जो उस से माँगता है...हे वह ज़ात जो हमारे गले के नस से भी अधिक क़रीब है।

हे क़रीब ज़ात तू अपनी उनसियत और अपने कलाम के ज़रिये हमारे ऊपर एहसान कर...

{और जब मेरे बंदे मेरे बारे में आप से सवाल करें तो मैं क़रीब हूँ"।}[अल बक़राः 186].

" अल क़रीब "

बुलंद होने के बावजूद अपने ज्ञान और जानकारी के ज़रिये क़रीब रहने वाली ज़ात।

" अल क़रीब "

हर उस व्यक्ति से अल्लाह तआला क़रीब है जो उस से माँगे,वह दया करता है,उम्मीदें पूरी करता है,दुख दूर करता है और परेशान हाल की दुआ क़बूल करता है।

" अल क़रीब "

हर उस व्यक्ति से अल्लाह तआला क़रीब है जो उस से तोबा करे,उस से लव लगाये,अल्लाह तआला गुनाह माफ करता है और तोबा स्वीकार करता है।

" अल क़रीब "

जिन इबादतों के ज़रिये बंदा अल्लाह तआला की निकटता ढूँडता है उसे वह स्वीकारता है और बंदा जिस प्रकार अल्लाह तआला के निकट आता है उसी प्रकार अल्लाह तआला भी बंदे के निकट आता है।

" अल क़रीब "

अपने बंदो के हालात से परिचित है,वह अपने ज्ञान और उन्हें घेरने के कारण उन से क़रीब है,और कोई भी चीज़ उस से छुपी नहीं है।

" अल क़रीब "

अपनी दया व करम,रक्षा और सहायता एवं ताईद से क़रीब है,और यह निकटता उस के दोस्तों अर्थात मोमिनों के साथ खास है।

" अल क़रीब "

अंजाम के एतबार से उस के सब बंदे उसी की ओर लौटते हैं।

{और हम उस इन्सान से तुम्हारे मुक़ाबले में ज़्यादा क़रीब होते हैं"।}[अल वाकेआः 85].ß अल क़रीब "

रूह उस की निकटता से मानूस होते हैं और उस के ज़िक्र से आबाद रहते हैं।

बेशक अल्लाह तआला अल क़रीब है..

https://www.with-allah.com/hi

”अल क़रीब “.. हर एक व्यक्ति से अपने ज्ञान,अनुभव,निगरानी,देखने और उसे घेरे हुये होने के कारण क़रीब है।

अल्लाह तआला अल मुजीब है...

बेशक अल्लाह तआला अल मुजीब है...

{बेशक मेरा रब निकट और तोबा क़बूल करने वाला है“।}[हूदः 61].

” अल मुजीब “

जब बंदे उस का वसीला माँगें,उस से प्रार्थना करें और शरई ऐतबार से उस से जायज़ चीज़ें माँगें तो वह देता है,और उसी ने अपने बंदों को दुआ करने का आदेश दिया है और दुआ क़बूल करने का उन से वादा किया है।

” अल मुजीब “

क़ैदी क़ैदखाने में,डूबने वाला समुद्र में, मुहताज अपनी मुहताजी में,यतीम अपनी यतीमी में,बीमार अपनी बीमारी में,बाँझ अपने बाँझपन में उस से उम्मीद लगाये तो वह उन सब को देता है,उन की दुआयें क़बूल करता है,अनुदान करता है और उन्हें सेहत व तंदुरुस्ती देता है।

” अल मुजीब “

परेशान हाल की दुआयें क़बूल करता है.. {बेबस की पुकार को जब कि वह पुकारे कौन क़बूल कर के तकलीफ को दूर कर देता है“।}[अन्नमलः 62].

” अल मुजीब “... दुआ करने वाले जो भी हों जहाँ भी हों और जिस हाल में हों उन की दुआयें स्वीकारता है।

क़बूलियत के अधिक क़रीब उस बंदे की दुआ होती है जो उस के नामों और उस की विशेषताओं के ज़रिये उस से माँगता है,कितने ऐसे हैं जिन्हों ने जेलों में उस से प्रार्थना की तो अल्लाह तआला ने उन्हें जेल से रिहाई दिला दी,कितने ऐसे हैं जिन्हों ने समुद्रों में उस से उम्मीद बाँधी तो उस ने उन्हें शांति के साथ किनारे पहुँचा दिया,ऐसे लोग भी हैं जिन्हों ने मुहताजगी में उसे याद किया तो अल्लाह तआला ने उन्हें बेनियाज़ कर दिया और उन्हें अमन व शांति दे दी,वह अनाथ भी हैं जिन्हों ने अनाथ होने की हालत में उसे पुकारा तो उस ने उन्हें अपनी निगरानी में रखा और अपने करम से उन्हें बड़ा कर दिया,वह बीमार भी हैं जिन्हों ने उस से आशा की तो उस ने उन्हें शिफा दे दी, और उन्हें तंदुरुस्ती अता कर

दी,और कितने ऐसे बाँझ हैं जिन्हों ने उस के सामने गिड़गिड़ा कार माँगा तो उस ने उन्हें अवलाद दे कर उन का सम्मान बढ़ा दिया ।

बेशक अल्लाह तआला अल मुजीब है...

अल्लाह तआला अन्नूर है..

बेशक अल्लाह तआला अन्नूर है..

{अल्लाह नूर है आकाशों का और धरती का"।}[अन्नूरः 35].

" अन्नूर "..

जिस ने अल्लाह का ज्ञान रखने और उस पर ईमान लाने वालों के दिलों को रोशन कर दिया,और उन के दिलों में हिदायत की रोशनी डाल दी।

" अन्नूर "..

जिस ने अपने नूर से अंधेरा खतम कर दिया,और आसमान और ज़मीन को रोशन कर दिया अवर अपनी ओर आने वालों के मार्गों और उन के दिलों को चमका दिया ।

अल्लाह तआला अन्नूर है और,उस का हेजाब(परदा) भी नूर का है,अगर वह अपना हेजाब उठा ले तो उस के चेहरे के नूर से जहाँ तक निगाह पहुँचे उस की मखलूक़ जल जायेगी।

बेशक अल्लाह तआला अन्नूर है..

अल्लाह तआला अल हकीम है..

बेशक अल्लाह तआला अल हकीम है.. {क्या अल्लाह सभी हाकिमों का हाकिम नहीं है?"} [अŸीनः 8].

" अल हकीम "

वह ज़ात जो सब चीज़ों को अपनी पकड़ में रखे और उन को बेहतर तरीक़े से अंजाम दे और अपने तक़दीर के फैसेलों के अनुसार उन चीज़ों को उन के मुनासिब स्थान पर रखे।

" अल हकीम "

सारे क़ानून और दस्तूर को उस ने अपनी बुद्धिमŸा (हिकमत) ही की बुनियाद पर बनाया है,उस की ओर से बनाये हुये क़ानून अपने उद्देश्यों,उस के रहस्यों और उस के दुनियवी एवं उखरवी परिणामों के एतबार से महान बुद्धिमŸा का पता देते हैं।

" अल हकीम "

अल्लाह तआला अपने फैसलों और तक़दीर में हिकमत वाला है,वह ज़ात मुहताज के लिये

मुहताजगी,बीमार के लिये बीमारी,और कर्ज़दार की परेशानी और तंगदस्ती के फैसलों में हिकमत वाली है,उस के रचने में दोष प्रवेश नहीं कर सकता और न ही उस के शब्दों और कर्मों में कोई कमी और अस्पष्टता आ सकती है,अल्लाह तआला महान ज्ञान एवं हिकमत वाला है।

" अल हकीम "

अपने बंदों में ज्ञान,हिकमत संयम और संजीदगी डालता है,और हर काम को उस के ठीक स्थान पर रखता है।

अल्लाह तआला सब हाकिमों से अधिक हिकमत वाला है,इस कायनात (संसार) की हर चीज़ उसी के आदेश के अधीन है, वही जिसे चाहता हलाल करता है और जिसे चाहता है हराम करता है,हुक्म केवल उसी का चलता है,और दीन वही है जिस का उस ने आदेश दिया और जिस से उस ने मना किया,उस के आदेश को कोई पीछे डालने वाला नहीं,और न ही उस के फैसले एवं तक़दीर को कोई ठुकराने वाला है।

" अल हकीम "

वह किसी पर जुल्म नहीं करता... वह हुक्म देने,मना करने और अपनी ओर से दी जाने वाली खबरों में न्याय करने वाला है।

बेशक अल्लाह तआला अल हकीम है..

" अल हकीम " .. वही ज़ात है जिस के लिये पैदा करने वाली विशेषता और हुक्म में बुलंद हिक्मत है,वह किसी चीज़ को बिना लाभ के पैदा नहीं करता,और न किसी बात का बेकार में हुक्म देता है,पहले और बाद में उसी के लिये बादशाहत है।

अल्लाह तआला अल मलिक अल मालिक और अल मलीक है..

बेशक अल्लाह तआला अल मलिक है.. {वह मालिक और अधिक पाक है"।} [अल हश्रः 23].

"अल मलिक"

वह महानता और बड़ाई वाला है,बंदों के मामलों की उपाय और तसर्रुफ करता है,सब बंदे उस के गुलाम और उस के मुहताज हैं,वह उन का बादशाह और मालिक है।

" अल मलिक अल मालिक " .. उसी के लिये हुकूमत व बादशाहत है,वही है जिस में बादशाहत की विशेषता पाई जाती है,और यह विशेषता महानता,बड़ाई गलबा और उपाय के अर्थ को शामिल है,वह जिस के लिये पैदा करने,हुक्म देने और बदला देने का पूरा इख्तियार है,उसी के लिये सब निचली और ऊपरी दुनिया है सब उसी के गुलाम,बंदे और उसी के मुहताज हैं।

उसी के लिये संपूर्ण बादशाहत है,जितने भी बादशाह और हाकिम हैं सब उस के गुलाम हैं,और आसमान व ज़मीन में जो भी भलाई है सब उसी के करम और देन से है। {उस की मिल्कियत में ज़मीन व आसमान की सभी चीज़ें हैं"।} [अल बक़राः 255].

"अल मलिक"

वह बिना हिसाब व किताब देता है,बंदों को अधि प्रदान करता है,और इस से उस की बादशाहत में कोई कमी नहीं होती,और न एक चीज़ दूसरी चीज़ से उस को बेखबर रखती है,और सही हदीसे कुदसी में हैः «..यदि तुम में से पहला और अंतिम व्यक्ति,इन्सान और जिन्नात एक पलेट फार्म पर खड़ें हो जायें और मुझ से माँगें,और मैं उन में से हर एक की मुराद पूरी कर दूँ तो उस से मेरे खज़ानों में उसी प्रकार कमी होगी,जिस प्रकार सूई को समुद्र में डाल कर निकालने से होती है।..» (मुस्लिम)

"अल मलिक"

वह जिसे चाहता है बादशाह बना देता है,अल्लाह तआला ने फरमायाः{आप कह दीजिये ऐ अल्लाह! हे सारी दुनिया के मालिक तू जिसे चाहे मुल्क दे और जिस से चाहे मुल्क छीन ले,और तू जिसे चाहे इज़्ज़त दे और जिसे चाहे ज़लील कर दे,तेरे ही हाथों में सारी ही भलाइयाँ है,बेशक तू हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है"।} [आले इमरानः 26].

"अल मलीक"

वह अपनी मखलूक़ का मालिक है,और लोक एवं प्रलोक में उन के मामलों में तसर्रुफ करता है,इस लिये बंदे उसी की चाह में रहें और उसी की पनाह ढूँडें और उसी की ओर से मिलने वाली नेमतों की आशा करते हुये अनुरोध,प्रार्थना गिड़गिड़ा कर और पुकार कर अधिकतर माँगें।

बेशक अल्लाह तआला अल मलिक अल मालिक और अल मलीक है..

अल्लाह तआला अल कुद्दूस है..

बेशक अल्लाह तआला अल कुद्दूस है..

वह अपनी बुलंदी और और बड़ाई में मुक़द्दस है,उस की प्रशंसा अधिकतर है और उस की नेमतें महान हैं.. {वही अल्लाह है जिस के सिवाय कोई पूज्य नहीं,मालिक,बहुत पाक और सभी बुराइयों से आज़ाद है"।} [अल हश्रः 23].वह पाक,क़ुद्दूस ज़ात फरिश्तों और जिब्रीले अमीन का स्वामी है... वह पाक ज़ात अलमलिक और अल कुद्दूस है।

"अल कुद्दूस अस्सलाम" .. वह महान ज़ात हर प्रकार के अैब और कमी और मखलूक़ में से किसी की मुशाबहत से पाक है,वह हर अैब से पाक है और इस बात से भी पाक है कि उस की मखलूक़ में से कोई उस के क़रीब हो या कोई उस के कमालात में से किसी चीज़ की तरह हो।

"बेशक अल्लाह तआला अल कुद्दूस है.,

अल्लाह तआला हर अैब और हर कमी से पाक है अथवा हर उस विशेषता से पाक है जो उस के शायाने शान नहीं है।

"बेशक अल्लाह तआला अल कुद्दूस है"

वह पूर्णता,सुंदरता और महिमा जैसी विशेषताओं से मुŸासिफ है,हर कमी और हर एक अैब से पाक है,उस जैसी न तो कोई चीज़ है और न ही कोई उस के समकक्ष है,उस की पूर्णता के ऊपर कोई पूर्णता नहीं और न ही कोई उस के नामों और उस की विशेषताओं की बुलंदी को पहुंच सकता है।

"बेशक अल्लाह तआला अल कुद्दूस है"

वह ज़ात जिस की पविन्नता दिल बयान करते हैं और संपूर्ण आशायें उसी से जुड़ी हुयी हैं, और ज़ुबान उस की पविन्नता के गीत गाते हैं,अथवा हर समय उस की तस्बीह बयान करते हैं।

" बेशक अल्लाह तआला अल कुद्दूस है"

वह बरकत,दानी,करम और प्रशंसा वाला है,उसी की ओर से बरकतें शुरू और खतम होती हैं,वह बरकत वाला है जो अपने बंदों को बरकत प्रदान करता है,और अपनी इच्छा अनुसार अपनी दी हुयी चीज़ों में बरकत डाल देता है।

"बेशक अल्लाह तआला अल कुद्दूस है"

अल्लाह तआला अस्सलाम है..

बेशक अल्लाह तआला अस्सलाम है..

अल्लाह तआला अस्सलाम है और उसी से शांति है कोई व्यक्ति उस की ओर से मिलने वाली शांति के बिना शांति से नहीं रह सकता और कोई भी कामयाबी उस की ओर से मिलने वाली तौफीक़ के बिना पूरी नहीं हो सकती है।

बेशक अल्लाह तआला अस्सलाम है

वह हर कमी और हर अैब से महफ़ूज़,और संसार को मुसीबतों और आफतों से बचाने वाला है

बेशक अल्लाह तआला अस्सलाम है

अल्लाह तआला की विशेषतायें सृष्टि समान नहीं हैं, वह हर प्रकार की कमी और कोताहियों से संरक्षित हैं,उस का ज्ञान पूर्ण और संरक्षित है,उस का न्याय हर चीज़ को घेरे हुये अथवा संरक्षित है,उस का फैसला संरक्षित है,उस की कारीगरी संरक्षित है,वह अस्सलाम है,उसी से शांति है वह बरकत,महिमा और सम्मान वाला है।

अल्लाह तआला ने अपने बंदों के लिये दोनों संसार में शांति लिख दी है। {इब्राहीम पर सलाम हो"।}[अस्साफ्फातः 109].

{मूसा और हारून पर सलाम हो"।} [अस्साफ्फातः 120].

{और पैग़म्बरों पर सलाम हो"।} [अस्साफ्फातः 181].

और प्रलोक में अल्लाह तआला कहेगाः {सलामती और अमन के साथ उस में दाखिल हो जाओ"।}[अल हिज्रः 46].

अस्सलाम

संपूण शांति जिस के पश्चात कोई डर नहीं और संपूर्ण क्षमा जिस के बाद कोई भय नहीं।

वही शांति है और उसी से शांति है।

बेशक अल्लाह तआला अस्सलाम है..

अल्लाह तआला अल हक्क़ है..

बेशक अल्लाह तआला अल हक्क़ है..

{यह इस लिये कि अल्लाह ही हक़ है"।} [अल हज्जः 6].

"अल्लाह तआला अल हक्क़ है"..

वह अपनी ज़ात और विशेषताओं में सत्य है,वह पूर्ण सिफात और विशेषताओं वाला है,उस का वजूद ज़ाती है और उसी के वजूद से हर चीज़ का वजूद है,वही है जो अपनी महिमा,सुंदरता,और पूर्णता के साथ हमेशा से है और हमेशा रहेगा,इसी प्रकार उस का उपकार हमेशा से जाना पहचाना है और हमेशा जाना पहचाना रहेगा।

"अल्लाह तआला अल हक्क़ है"..

उस की बात,उस का काम,उस से मुलाक़ात,उस के रसूल,उस की किताबें,उस का दीन,और उस की अकेले उपासना सब सत्य और हक़ हैं,और उस की ओर मंसूब होने वाली हर चीज़ हक़ है। {यह सब इस लिये कि अल्लाह ही सच है,और उस के सिवाय जिसे भी यह पुकारते हैं वे झूटे हैं, और बेशक अल्लाह बुलंद और बड़ाई वाला है"।} [अल हज्जः 62].

बेशक अल्लाह तआला अल हक्क़ है..

अल्लाह तआला अल मोमिन और अल मुहैमिन है..

बेशक अल्लाह तआला अल मोमिन और अल मुहैमिन है..

{वही अल्लाह है जिस के सिवाय कोई पूज्य नहीं,मालिक,बहुत पाक और सभी बुराइयों से आज़ाद है,शांति अता करने वाला और रक्षक है"।} [अल हश्रः 23].

"अलमोमिन"..

जो वह्य के ज़रिये अपने बंदों और अपनी मखलूक के बीच शांति फैलाता है। {और उन्हें डर में अमन अता किया"।}[कुरेशः 4].

"अलमोमिन"...

शांति देने वाला,रक्षा करने वाला है और अपने मखलूक़ के सारे अमल की खबर रखने वाला है।

"अलमोमिन"...

वह बदले में कोई कमी नहीं करता,और न सज़ा में कोई ज़्यादती करता है,वह दया,फज़्ल,अच्छाई,और दान के अधिक योग्य है।

"अल मुहैमिन"

वह अपने बंदों का रक्षक है वह उन पर ग़ालिब है और उन्हें नियंन्नित किया,उन की देख रेख करता है,उन के करतूतों और हालतों को जानता है,उस ने बंदों के हर एक चीज़ को घेर रखा है,हर मामला उस के लिये सरल और हर चीज़ उस की आवश्यक है...

{उस जैसी कोई चीज़ नहीं वह सुनने वाला देखने वाला है"}[अश्शूराः 11].

बेशक अल्लाह तआला अल मोमिन और अल मुहैमिन है..

" अल मोमिन "..
वह ज़ात जिस ने अपनी पूर्ण विशेषताओं और पूर्ण महिमा और सुंदरता के कारण स्वयं की प्रशंसा की है,और जिस ने अपने मैसेंजर को भेजा और दलाइल एवं प्रमाण के साथ किताबें उतारी,और रसूलों के लाये हुये पैग़ाम के सत्य होने और स्वयं रसूलों की सत्यता पर प्रमाणित दलीलों और चिन्हों से उन की सत्यता साबित की।

"अल मुहैमिन"
वह छुपे हुये मामलों और सीनों में छुपी हुयी चीज़ों की खबर रखता है,उस ने अपने ज्ञान से हर चीज़ को घेर रखा है।

अल्लाह तआला अल अफ्व,अल ग़फूर और अल ग़फ्फार है..

बेशक अल्लाह तआला अल अफ्व और अल ग़फ्फार है.. {बेशक अल्लाह तआला माफ करने वाला अधिक क्षमा करने वाला है"।}[अल हज्जः 60].

बेशक अल्लाह तआला अल अफ्व अल ग़फ़ूर और अल ग़फ्फार है..

वह ज़ात जो हमेशा हमेश से अपनी क्षमा से जानी पहचानी जाती है,और जिस में अपने बंदों को माफ करने और उन्हें दरगुज़र करने की विशेषता पाई जाती है,हर एक उस की क्षमा और माफी की मुहताज है जैसे हर एक चीज़ उस की दया और करम की मुहताज है।

हे वह ज़ात जिस ने उस व्यक्ति के लिये क्षमा करने का वादा किया है जो क्षमा के कारणों को अपनाये,अल्लाह तआला ने फरमायाः {और बेशक मैं उन्हें माफ कर देने वाला हूँ जो माफी माँगें,ईमान लायें,नेकी के काम करें और सीधे रास्ते पर भी रहें"।}[ताहाः 82].

हे क्षमा करने वाले हम तुझ से इस बात के सवाली हैं कि तू हमें सच्ची तोबा की तौफिक दे, जिस के बाद हम गुनाहों से दूर हो जायें, और उसे छोड़ दें,और जो कुछ हमने ग़लत और पाप किया है उस पर शर्मिंदा हैं,और तेरी फरमाबरदारी करने का और तेरी नाफरमानी न करने का पुखता इरादा कर लें,हे क्षमा करने वाले हमें क्षमा कर दे।

हे अल्लाह तू क्षमा करने वाला है,क्षमा को प्रिय रखता है,तू हमें भी क्षमा कर दे... ऐ अल्लाह तू ने हमें खबर दी है कि तू अधिक क्षमा करने वाला और अधिक दयालू है... {मेरे बंदों को खबर कर दो कि मैं बहुत माफ करने वाला और बहुत रहम करने वाला हूँ"।}[अल हिज्रः 49].

तो हम पर कृपा कर,और ऐ क्षमा करने वाले हमें क्षमा कर दे।

बेशक अल्लाह तआला अल अफ्व अल ग़फ़ूर और अल गफ्फार है..

अल्लाह तआला अŸाव्वाब है ..

बेशक अल्लाह तआला अŸाव्वाब है .. {बेशक अल्लाह तआला बहुत ज़्यादा तोबा क़बूल करने वाला और रहम करने वाला है"।}[अŸोबाः 118].

" अŸाव्वाब "

वह ज़ात जिस ने अपने बंदों के लिये उन पर करम,उपकार और एहसान करते हुये तोबा को मश्रू किया, बल्कि इस के अतिरिक्त अधिक पुरस्कार का वादा किया,अर्थात उन के बुराइयों को नेकियों में बदल दिया जायेगा।

" अŸाव्वाब "

वह ज़ात जो अपने बंदों को तोबा पर क़ायम रखती है,और फर्ज़ की अदायगी में उन की सहायता करती है।

" अŸाव्वाब "

वह ज़ात जो अपने बंदों को तोबा की तौफीक़ देती है,और उन्हें तोबा की इच्छा दिलाती है,और फिर तोबा की बुनियाद पर स्वयं उन से मुहब्बत करने लगती है।

" अŸाव्वाब "

जो हमेशा अपने बंदे की तोबा क़बूल करता है और तोबा करने पर उन्हें सवाब देता है और बंदों के दरजों को बुलंद करता है और उन के गुनाहों को मिटाता है,क्या ही महान है अल्लाह और किस क़दर उस की शान बुलंद है।

बेशक अल्लाह अŸाव्वाब है..

" अŸाव्वाब "
जो हमेशा तोबा करने वालों की तोबा क़बूल करता है और गुनहगारों के गुनाहों को क्षमा करता है,हर वह व्यक्ति जो अल्लाह तआला से सच्ची तोबा करे अल्लाह तआला उस की तोबा क़बूल करता है,वह तोबा करने वालों को पहले तोबा की तौफीक़ देता है और उन के दिलों को अपनी ओर मुतवज्जेह करता है,फिर तोबा करने के बाद उन की तोबा को क़बूल करते हुये उन की गलतियों को क्षमा करता है.

अल्लाह तआला अलवाहिद और अल अहद है..

बेशक अल्लाह तआला अलवाहिद और अल अहद है..

हे वह ज़ात जिस की ज़ात अकेली है और जो अपने नामों और विशेषताओं के एतबार से अकेला है।

हम तुझ से इख्लास,मुहब्बत और महत्वाकांक्षा (पुखता इरादा) के सवाली हैं ऐ अकेली और बेनियाज़ ज़ात।

"अल अहद"

वह अपनी ज़ात और अपने नामों एवं विशेषताओं में अकेला है,उस का न तो कोई समकक्ष है न कोई उस के मुशाबेह है और न ही उस जैसी कोई चीज़ है। {क्या तेर इल्म में उस का हमनाम कोई दूसरा भी है"।}[मरयमः 65].

"अल अहद"

वह इबादत के योग्य और उलूहियत में अकेला है,इस लिये अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य उपास्य नहीं, और हर प्रकार की इबादत चाहे वह छोटी हो या बड़ी उस के अतिरिक्त किसी की नहीं की जायेगी।

"अल अहद"

वह एक है जिस का इरादा किया जाता है, और वह एक पालनहार है जिस की उपासना की जाती है,दिलों की गहराइयों ने इस की गवाही दी और गैब की खबर रखने वाले अल्लाह से निगाहें जुड़ गईं।

"अल वाहिद अल अहद"

अल्लाह तआला ने अपने बंदों को अपनी तौहीद पर पैदा किया है,उस का कोई साझी नहीं,कोई ऐसा व्यक्ति नहीं जिस ने अल्लाह के अतिरिक्त की ओर धियान लगाया हो और वह कामयाब होगया हो,और न ही कोई ऐसा बंदा है जिस ने अल्लाह के अतिरिक्त की इबादत की हो और वह खुश भी हो,और न ही कोई बंदा ऐसा है जिस ने उस का साझी बनाया और वह सफल रहा हो।

बेशक अल्लाह तआला अल वाहिद और अल अहद है.

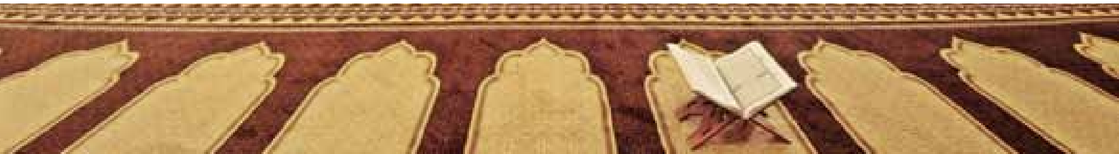

अल्लाह तआला अस्समद है..

बेशक अल्लाह तआला अस्समद है..

{कह दीजिये कि वह अल्लाह एक है,अल्लाह बेनियाज़ है"।}[अल इख्लासः 1-2].

"अस्समद"...

अपने नामों और विशेषताओं में संपूर्ण है,उस में किसी प्रकार की कोई कमी और कोताही प्रवेश नहीं कर सकती।

"अस्समद"...

वह बेनियाज़ है उस के सब मुहताज हैं और वह किसी का मुहताज नहीं। {वह खिलाता है और खिलाया नहीं जाता"।}[अल अनआमः 14].

"अस्समद"

वह पालनहार,उपाय करने वाला,मालिक और तसर्रुफ करने वाला है।

" अल वाहिद अल अहद"
वह अल्लाह जो अपने तमाम पूर्णता में अकेला है,इस प्रकार कि इन पूर्णताओं में उस का कोई साझी नहीं,और बंदों पर यह अनिवार्य है कि अक्ल के एतबार से,ज़ुबान के एतबार से और अमल के एतबार से अल्लाह तआला की यकताइयत को स्वीकारें,अर्थात वे अल्लाह तआला की निरपेक्ष पूर्णता और यकताइयत में अकेले होने को स्वीकार करें और हर प्रकार की इबादत का योग्य केवल उसी को जानें।

”अस्समद“

ज़रूरत के समय दिल उस की ओर मुतवज्जेह होते हैं तो वह उन्हें देता है, मना नहीं करता है,परेशानियों के समय दिल उसे पुकारते हैं तो वह उन की पुकार क़बूल करते हुये उन की परेशानियों को दूर करता है,उस से कटे हुये लोग जब उसे पुकारते हैं तो वह उन्हें जोड़ लेता है,और डरे हुये लोग उस का इरादा करते हैं तो वह उन्हें शांति देता है,और एकेश्वरवादी उस से आशा लगाते हैं तो वह उन की मुरादें पूरी करता है,दुखी लोग उस से प्रार्थना करते हैं तो वह उन्हे दुखों से मुक्ति देता है,और बंदे उस की ओर झुकते हैं तो अल्लाह तआला उन के मरतबे को ऊँचा करता है।

बेशक अल्लाह तआला अस्समद है..

”अस्समद“
वह ज़ात है जिस का इरादा संपूर्ण मखलूक़ अपनी ज़रूरतों,आवश्यक्ताओं और तमाम हालतों मे करती है,क्योंकि उसे अपनी ज़ात,अपने नामों,अपनी विशेषताओं और अपने कार्यों में हर प्रकार की पूर्णता प्राप्त है।

अल्लाह तआला अल अज़ीज़ है..

बेशक अल्लाह तआला अल अज़ीज़ है.. {और अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है“।}

[अल अन्फाल:67].

अल्लाह तआला ताकतवर मज़बूत और ग़ालिब है।

उसे किसी शक्तिमान की शक्ति हानि नहीं पहुँचा सकती,और न किसी ताक़त वाले की ताक़त उसे आजिज़ कर सकती है... वह बरकत वाला,बुलंद और खबर रखने वाला है।

”अल अज़ीज़“

संपूर्ण इज़्ज़त उसी के लिये है,उस के अतिरिक्त हर चीज़ आज़िज़ और ज़लील हैं,और उस के सामने हर शक्तिशाली कमज़ोर है,तो अल्लाह के अतिरिक्त हर चीज़ नीच(हक़ीर) है और हर मखलूक उस के समीप ज़लील है।

”अल अज़ीज़“

जिसे चाहता है इज़्जत देता है और जिस से चाहता है इज़्ज़त खींच लेता है,और जिसे चाहता है हीन कर देता है,उसी के हाथ में संपूर्ण भलाई है,अल्लाह तआला ने फरमायाः {बेशक पूर्ण ग़ल्बा अल्लाह ही के लिये है“।}[यूनुसः 65].

हसब नसब और माल से मिलने वाली इज़्ज़त कोई इज़्जत नहीं,बल्कि इज़्ज़त तो वह है जो उस के करम से मिली हुयी हो।

”अल अज़ीज़“

जिसे भी इज़्ज़त मिलती है उसी की इज़्ज़त से मिलती है,और शक्ति भी उसी के करम से मिलती है,जो व्यक्ति पनाह चाहता हो वह अल्लाह तआला की पनाह माँगे,और जो इज़्ज़त का इच्छुक है वह अपने दिल से अल्लाह की ओर मुतवज्जेह हो जाये। {सम्मान तो केवल अल्लाह के लिये और उस के रसूल के लिये और ईमान वालों के लिये है“।} [अल मुनाफिक़ूनः 8].

बेशक अल्लाह तआला अल अज़ीज़ है

अल्लाह तआला अल क़ाहिर और अल क़हहार है..

"अल अज़ीज़"..
जिस के लिये हर प्रकार की इज़्ज़त है,शक्ति की इज़्ज़त,ग़लबे की इज़्ज़त,और रुके रहने की इज़्जत,तो उस ने अपने आप को मखलूक़ की पहुँच से बाहर रखा है,और उस ने सारी सृष्टि को अपने वश में कर लिया है,संपूर्ण मखलूक उस के समीप नमस्तक और उस की महानता के आगे पस्त है।

"अल क़हहार"
वह हर चीज़ पर ग़ालिब है,उस के सामने संपूर्ण संसार आजिज़ है,उस की संपूर्ण प्रभुत्व के सामने हर एक हीन और तुच्छ है।

बेशक अल्लाह तआला अल क़ाहिर और अल क़हहार है..

वह इन्सान और जिन्नात पर ग़ालिब है: {और वही अपने बंदों पर प्रभावशाली है और वही हिक्मत वाला,खबर रखने वाला है"।}[अल अनआम: 18].

"अल क़हहार"

अपनी बुलंदी,ज्ञान,एहाता,उपाय के ज़रिये मखलूक़ पर ग़ालिब है,इस लंबे चैड़े संसार में कोई भी चीज़ उस की आज्ञा और ज्ञान से बाहर नहीं है।

"अल क़हहार"

सर्कश और घमंडी लोगों को महान हुज्जतों और स्पष्ट दलीलों के ज़रिये अकेले रब होने,माबूदे हक़ीक़ी होने और नामों एवं बुलंद विशेषताओं में यकता होने पर विजित(मगलूब)कर दिया।

"अल क़हहार"

ज़ालिम,सर्कश और घमंडियों को मग़लूब कर दिया,और क़यामत के दिन उन्हें उन की मरज़ी के विपरित विजित(मग़लूब) बना कर इकठा करेगा। {और सभी के सभी एक अल्लाह ज़बरदस्त के सामने होंगे"।} [इब्राहीम: 48].

"अल क़हहार"

अल्लाह तआला ही की मरज़ी चलती है,मखलूक़ में से कोई उस की मरज़ी को रद्द नहीं कर सकता चाहे वह कितना ही महान क्यों न हो,वह अपनी कारीगरी में नायाब और अनोखा है,शक्तिमान लोग चाहे जितने वसाइल और साधन जुटालें वे आजिज़ ही रहेंगे,और उस की कारीगरी की प्रशंसा करने में ज़ुबानें गूँगी समझी जायेंगी चाहे जितनी अच्छाइयाँ और विशेषतायें उन में पाई जायें।

बेशक अल्लाह तआला अल क़ाहिर और अल क़हहार है..

अल्लाह तआला अर्रज़्ज़ाक़ है..

बेशक अल्लाह तआला अर्रज़्ज़ाक़ है.. {बेशक अल्लाह तो खुद रोज़ी देने वाला,ताक़त वाला और बलवान है"।}[अज़्ज़ारियातः 58].

"अर्रज़्ज़ाक़"

जिस के हाथ में मखलूक़ की रोज़ी और उन की जीविका है,वह अल्लाह तआला ही की ज़ात है जो जिसे चाहे अधिक जीविका देती है,उसी के हाथ में मामलों का उपाय और आकाश एवं धरती की कुंजियाँ हैं,

{और धरती पर चलते फिरते जितने भी जानदार हैं सभी की रोज़ी अल्लाह पर है,वही उन के रहने की जगह भी जानता है और उन को सौंपे जाने की जगह भी"।}[हूदः 6].

और अल्लाह तआला ने फरमायाः {और बहुत से जानवर हैं जो अपने रिज़्क़ लादे नहीं फिरते,उन सब को और तुम्हें भी अल्लाह तआला ही रोज़ी अता करता है,और वह सुनने जानने वाला है"।}[अल अनकबूतः 60].

और अल्लाह तआला ने फरमायाः {बेशक तेरा रब जिस के लिये चाहे रोज़ी का विस्तार कर देता है और जिस के लिये चाहे तंग कर देता है,बेशक वह अपने बंदों से बाखबर है और अच्छी तरह से देखने वाला है"।}[अल इस्राः 30].

और अल्लाह तआला ने फरमायाः {अल्लाह जिसे चाहता है बेशुमार अता करता है"।}[अल बक़राः 212].

"अर्रज़्ज़ाक़"

सब लोग अल्लाह तआला और उस की जीविका के मुहताज हैं,वह सब लोगों को जीविका देता है चाहे वे अच्छे हों या बुरे,पहले आने वालों में से हों या बाद में।

"अर्रज़्ज़ाक़"

अल्लाह तआला हर उस व्यक्ति को रोज़ी देता है जो सच्चे दिल से उस की ओर मुतवज्जेह हो,और दिलों का ठीक ठाक होना,महत्वपूर्ण जीविका और पूर्ण नेमत है,और जो ज्ञान और विश्वास के साथ माँगता है उसे अल्लाह तआला हलाल रोज़ी देता है,जो दिलों के सूधार पर सहायक होती है और हर उस व्यक्ति को दीनी सुधार प्रदान करता है जो उस से दीनी सुधार माँगे।

बेशक अल्लाह तआला अर्रज़्ज़ाक़ है..

अल्लाह तआला अल्लतीफ़ है..

बेशक अल्लाह तआला अल्लतीफ़ है..

{बेशक मेरा रब जो चाहे उस के लिये अच्छी व्यवस्था करने वाला है"।}[युसुफः 100].

" अल्लतीफ़ "

वह ज़ात जिस ने अपनी दयालुता,मुहब्बत और चाहत से मखलूक़ को मखलूक़ के ताबे कर दिया।

" अल्लतीफ़ "

जो अधिक नेकियाँ,महान उपहार और गिफ्ट देने वाला है।

" अल्लतीफ़ "

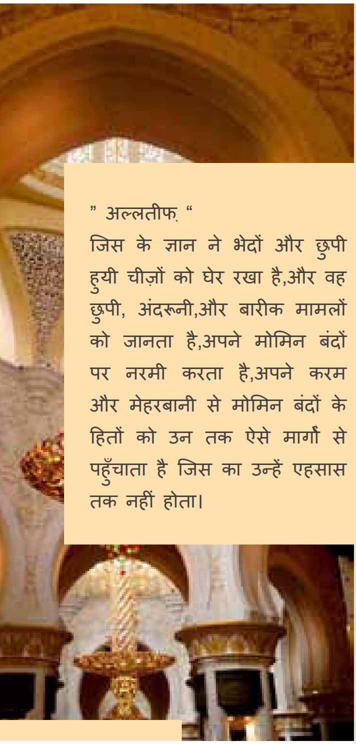

" अल्लतीफ़ "
जिस के ज्ञान ने भेदों और छुपी हुयी चीज़ों को घेर रखा है,और वह छुपी, अंदरूनी,और बारीक मामलों को जानता है,अपने मोमिन बंदों पर नरमी करता है,अपने करम और मेहरबानी से मोमिन बंदों के हितों को उन तक ऐसे मार्गों से पहुँचाता है जिस का उन्हें एहसास तक नहीं होता।

अपने बंदों के साथ नरमी का मामला करने वाला है।{अल्लाह अपने बंदों पर बड़ा ही कृपा करने वाला है"।}[अश्शूराः 19].

og mUgsa ogh pht+ nsrk gS tks mu ds nhuks नुनिया के लिये उत्तम हो और उन्हें वह चीज़ें नहीं देता जो उन के दीनो दुनिया के लिये बुरी हों।

" अल्लतीफ़ "

उसे किसी की निगाह एहाता नहीं कर सकती और वह सब की निगाहों को अपने एहाते में रखे हुये है। {आँखें उसे देख नहीं सकततीं और वह सभी निगाहों को देखता है और वह गहराई से देखने वाला सर्वसूचित है"।}[अल अनआमः 103].

" अल्लतीफ़ "

वह सब छुपे मामलों को जानता है,और सब बारीक कार्यों की खबर रखता है,रात व दिन में कोई चीज़ उस से छुपी नहीं है,वह अपने बंदों के लिये छोटे से छोटे और बड़े से बड़े हितों को जानता है और उन पर करम करता है।

" अल्लतीफ़ "

जब भी वह किसी मामले में फैसला करता है तो अपने बंदों पर नरमी करता है,और जब भी किसी चीज़ को मुक़द्दर करता है तो उस में बंदों की सहायता करता है,और जब मामले बिगड़ जाते हैं और रास्ते बंद हो जाते हैं तो वह उन के लिये सरलता के द्वार खोल देता है,और जब मामला कठिन हो जाता है तो वह उन पर आसानी पैदा कर देता है।

बेशक अल्लाह तआला अल्लतीफ़ है..

अल्लाह तआला अल फयॅाह है..

अल्लाह तआला अल फयॅाह है..

{और वह फैसला करने वाला सब कुछ जानने वाला है“।} [सबाः 26].

” अल फयॅाह“

वह हमारे ऊपर अपनी दया के द्वार खोलता है..

{अल्लाह जो दया लोगों के लिये खोलता है तो उस का कोई बंद करने वाला नहीं“।}[फातिरः 2].

”अल फयॅाह“

अल्लाह तआला ने हम पर और आप पर अपनी बरकतों के द्वार खोल दिये हैं... और हमें अपने करम और उपकारों को अता किया है... और हम पर क्षमा और उपहारों की वर्षा की है।

अल्लाह तआला बंद दिलों को हिदायत और ईमान की कुंजी से खोल देता है।

”अल फयॅाह“

अल्लाह तआला करम के द्वार खोल कर सैराब करता है,और अधिकतर नेमतों की वर्षा करता है,और उन के लिये ज्ञान की रोशनी प्रकट करता है और उन की बुद्वियों के लिये हिकमत प्रदान करके उसे संवारता है,और उन के दिलों को ईमान के लिये खोल देता है फिर उन्हें सत्य मार्ग पर चलाता है।

”अल फयॅाह“

जो अपने बंदों से ग़म को दूर करता है, और उन्हें हर संकट से मुक्ति देता है,और उन के हर नुक़सान को दूर करता है।

”अल फयॅाह“

वह प्रलोक में अपने बंदो पर न्याय करेगा,और वह अभिभावक (सरपरस्त) है अथवा प्रशंसा के योग्य है।

बेशक अल्लाह तआला अल फयॅाह है..

”अल फयॅाह“
जो अपने बंदों को शरई अहकाम,तक़्दीर के फैसले और जज़ा और सज़ा के अहकाम के ज़रिये नियंन्त्रित करता है,जिस ने अपने करम से सच्चों की आँखें खोल दी हैं,और उन के दिलों को अपनी मारफत,मुहब्बत और अपनी ओर लौटने के लिये खोल दिया है,और उस ने अपने बंदों के लिये दया और अनेक प्रकार की जीविका के द्वार खोल दिये हैं।

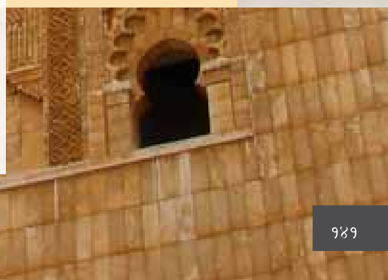

अल्लाह तआला अल ग़नी और अल मुग़नी है..

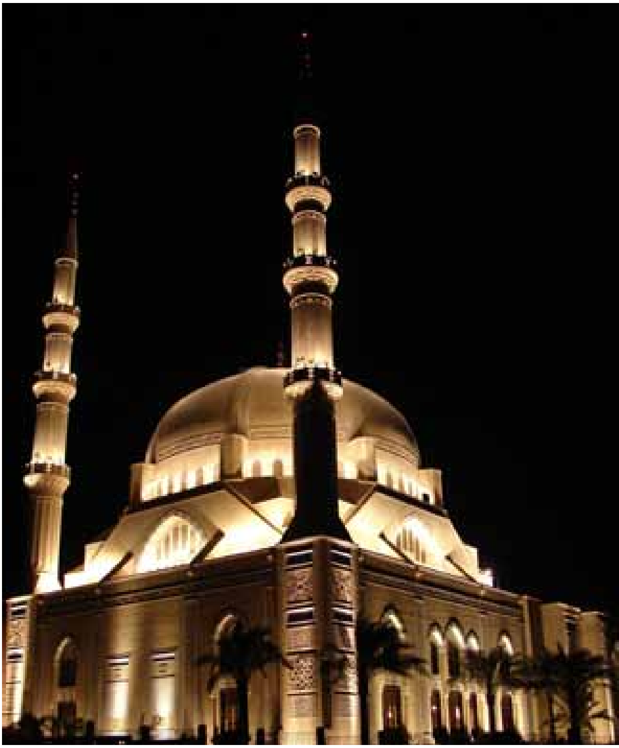

बेशक अल्लाह तआला अल ग़नी और अल मुग़नी है..

" अल ग़नी "

वह अपनी ज़ात के एतबार से बेनियाज़ है,जिस के लिये पूर्ण बेनियाज़ी है,उस की विशेषताओं और उस की पूर्णता में किसी प्रकार की कमी पैदा नहीं हो सकती,और उस के लिये बेनियाज़ी के सिवा कुछ और होना असंभव है,क्योंकि बेनियाज़ी उस की ज़ात की आवश्यक विशेषता है,जिस प्रकार उस का खालिक़ राज़िक,क़ादिर और मुह्सिन होने के अतिरिक्त कुछ और होना असंभव है,वह किसी भी प्रकार से किसी का मुहताज नहीं,वह बेनियाज़ है,उसी के हाथ में आकाश एवं धरती की कुंजियाँ हैं,वह अपनी मखलूक़ को आम तौर पर बेनियाज़ बनाने वाला है।

"अल ग़नी"

वह अपने बंदों से बेनियाज़ है,वह उन से खाना पीना नहीं माँगता,उस ने बंदों को इस लिये पैदा नहीं किया कि अपनी कमी को उन से पूरा करे,और न इस लिये कि अपनी कमज़ोरी को उन से शक्ति पहुँचाये,और न इस लिये कि अपनी वह्शत को दूर करने के लिये उन से मानूस हो,बल्कि बंदे ही अपने खाने पीने और संपूर्ण मामलों को हल करने में उसी के मुहताज हैं,अल्लाह तआला ने कहाः {मैंने जिन्नात और इन्सानों को सिर्फ इसी लिये पैदा किया है कि वे केवल मेरी इबादत करें,न मैं उन से जीविका चाहता हूँ,न मेरी यह इच्छा है कि ये मुझे खिलायें"।}[अज़्ज़ारियातः 56-57].

"अल मुग़नी"

वह लोगों को उन की ज़रूरतों और मुहताजगी से बेनियाज़ रखता है,वह अपने बंदों को देने में कमी नहीं करता,और बंदों को उस के अतिरिक्त किसी और की आवश्यक्ता नहीं,जैसा कि हदीसे क़ुदसी में आया है किः «अगर तुम में से पहला और अंतिम व्यक्ति,इन्सान और जिन्नात एक पलेटफार्म पर खड़े हो जायें और मुझ से माँगें और मैं उन में से हर एक की ज़रूत पूरी करूँ तो उस से मेरे खज़ानों में बिलकुल उसी प्रकार कमी होगी,जिस प्रकार सूई को समुद्र में डाल कर निकालने से होती है..» (मुस्लिम).

"अल मुग़नी"

वह अपने कुछ बेंदों को हिदायत और उन के दिलों की सुधार के ज़रिये बेनियाज़ करता है,अर्थाता उन्हें अपने ज्ञान,महिमा,महानता,और अपनी मुहब्बत प्रदान करता है,तो दुनियावी सुधार से ज़्यादा और अधिकतर पूर्ण और महत्व चीज़ों से उन्हें बेनियाज़ करता है।

हे वह ज़ात जिस के देने से उस के खज़ाने में कोई कमी नहीं होती... हमें हराम से बचाते हुये हलला रोज़ी के ज़रिये बेनियाज़ कर दे,क्योंकि तू खूद बे नियाज़ है और बेनियाज़ी अता करने वाला है।

"अल मुक़ीत"
जिस ने हर एक मखलूक को वह चीज़ें पहुँचा दी हैं जिन से वे अपना पेट भरते हैं,और हर एक को उस की जीविका दे दी है,और अपनी हिक्मत और प्रशंसा को देखते हुये जैसा चाहता उस में तसरुफ करता है।

बेशक अल्लाह तआला बे नियाज़ है और बेनियाज़ी अता करने वाला है..

अल्लाह तआला अल मुक़ीत है..

बेशक अल्लाह तआला अल मुक़ीत है..

{और अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत रखने वाला है"।}[अन्निसाः 85].

"अल मुक़ीत"

वह ज़ात जिस ने संपूर्ण सृष्टि को जीविका दी और उन के लिये वह चीज़ें पैदा कर दीं जिस से यह जीवित रहें,तो उस ने उन्हें वह सब प्रदान किया जिस से ये अपनी प्यास बुझाते हैं,अपनी भूक मिटाते हैं,और अपना जीवन आनंद लेकर बिताते हैं।

"अल मुक़ीत"

जो दिलों को अनेक प्रकार के इल्मो ज्ञान से शक्ति प्रदान करता है,जिस से रूहें जीवित रहती हैं और नफ्सों को खुशी मिलती है।

हे अल्लाह!हे वह ज़ात जो अपनी मखलूक़ के कामों,उन की रोज़ी और उन के लौट कर वापस आने की जगह का उपाय और इन्तिज़ाम करती है ... (हे अल्लाह!) हम तुझ से तेरी रक्षा,तेरी क्षमा और तेरी भलाई के सवाली हैं। {और अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत रखने वाला है"।}[अन्निसाः 85].

बेशक अल्लाह तआला अल मुक़ीत है..

"अल मुक़ीत" ने हर एक मखलूक को वह चीज़ें पहुँचा दी हैं जिन से वे अपना पेट भरते हैं,और हर एक को उस की जीविका दे दी है,और अपनी हिक्मत और प्रशंसा को देखते हुये जैसा चाहता उस में तसरुफ करता है।

अल्लाह तआला अल हसीब और अल काफी है..

बेशक अल्लाह तआला अल हसीब और अल काफी है..

अल्लाह तआला अपने मखलूक का काम बनाने वाला है,और वह उन के लिये हर चीज़ से काफी है..

{क्या अल्लाह अपने बंदों के लिये काफी नहीं?"} [अज़्ज़ुमरः 36].

अल्लाह तआला हमारे लिये काफी है और अच्छा काम बनाने वाला है ..जब खलील इब्राहीम को आग में डाला गया तो उन्हों ने यही कहा:(अल्लाह तआला हमारे लिये काफी है और अच्छा काम बनाने वाला है) तो आग इब्राहीम के लिये शांति के साथ ठंड हो गई,और इसे सहाबा ने कहा,जैसा कि अल्लाह तआला ने अपने इस कथन में ज़िक्र किया हैः {बेशक लोग तुम्हारे लिये इकठ्ठा हो चुके हैं"।}[आले इमरानः 173].

तो उन्हों ने कहाः {अल्लाह हमारे लिय बस है और वह सब से अच्छा संरक्षक है,वह अल्लाह की नेमत के साथ वापस हुये उन्हें कोई दुख नहीं पहुँचा,उन्होंने अल्लाह की प्रसन्नता का रास्ता अपनाया"।}[आले इमरानः 173-174].

अल्लाह तआला हिसाब लेने वाला और अपने बंदों का हिसाब करने वाला है,उन के अमल का बदला देने वाला है,अगर अच्छे अमल हैं तो अच्छा बदला और अगर बुरे अमल हैं तो बुरा बदला ताकि करतूत अनुसार बदला मिल सके।

{और वह बहुत जल्द हिसाब लेगा"।}[अल अनआमः 62].

"अल हसीब"

अपने मखलूक़ के ज़ाहिरी और छुपी हुयी चीज़ों को विस्तार से जानता है।

हे हमारे पालनहार,ऐ काफी हमारी ज़रूरतों के लिये काफी होजा,और हमें समझ बूझ प्रदान कर और ऐ करम करने वाले हमें अधिकतर भलाई दे। {और लेखा-जोखा के लिये अल्लाह काफी है"।}[अन्निसाः 6].

बेशक अल्लाह तआला अल हसीब और अल काफी है..

"ल हसीब".. अल्लाह तआला अपने बंदों को जानने वाला है,भरोसा करने वालों के लिये काफी है,अपने बंदों को अपनी हिक्मत और ज्ञान से उन के हर छोटे बड़े अमल का बदला देता है।

अल काफी".. वह अपने बंदों की संपूर्ण उन चीज़ों के लिये काफी है जिन की उन्हें ज़रूरत पड़ती है,और जिस की ओर वे मजबूर होते हैं,और जो उस पर ईमान लाये,उस पर भरोसा करे और अपनी दीनी व दुनियावी ज़रूरतों में उसी से सहायता माँगे तो उस के लिये वह विशेष तौर पर काफी है।

अल्लाह तआला अल मुबीन है..

बेशक अल्लाह तआला अल मुबीन है..

{बेशक अल्लाह ही सच है,वही ज़ाहिर करने वाला है"।}[अन्नूरः 25]-

हे ऊँची शान वाले ज़ाहिर करने वाली ज़ात... हमारे लिये हक़ का मार्ग रोशन कर दे,और हे पालनहार! गलत मार्ग हम पर खलत मलत हो जाये इस से हमारी रक्षा कर।

अल्लाह तआला हक और सब तथ्यों को प्रकट करने वाला है और उस समय सब संदेह दूर हो जोयेंगे।

अल्लाह तआला अपनी यकताइयत के मामले में बिलकुल वाजेह है और निःसंदेह उस का कोई साझी नहीं।

"अल मुबीन"

अपनी उदारता,अपने वजूद और अपनी बादशाहत पर बंदों के लिये जो हिस्सी और आंतरिक(मानवी) दलाइल बयान किये हैं वह मखलूक पर ढकी छुपी नहीं हैं।

"अल मुबीन"

जिस ने रसूलों को स्पष्ट किताब दे कर अपने बंदों के लिये सत्य मार्ग को वाजेह कर दियाः

{तुम्हारे पास अल्लाह की ओर से नूर और खुली किताब आ चुकी है"।}[अल माइदाः 15].अल्लाह तआला ही है जिस ने अपने बंदों के लिये खुश बखती की राह दिखाई,और उन्हें अपनी आज्ञापालन और अपनी तौहीद से जोड़ दिया ।

बेशक अल्लाह तआला अल मुबीन है।

अल्लाह तआला अल क़दीर,अल मुक़्तदिर और अल क़ादिर है..

अल्लाह तआला अल क़दीर,अल मुक़्तदिर और अल क़ादिर है..

{और अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत रखने वाला है“।}[अल बक़राः 284].

{सच्चाई और इज़्ज़त की बैठक में कुदरत वाले मालिक के पास“।}[अल क़मरः 55].

{कहिये कि वही है जो ताक़त रखने वाला है।}[अल अनआमः 65].

”अल क़दीर“.. वह पूर्ण शक्ति वाला है,उस ने अपनी शक्ति से संसार को वजूद बखशा और अपनी ही शक्ति से संसार वालों के लिये उपाय किया और अपनी ही शक्ति से उस ने संसार को बराबर और मज़बूत बनाया,और वह अपनी ही शक्ति से मारता और जिलाता है और बंदों को मरने के बाद दोबारा जीवित करेगा,नेक लोगों को उन की नेकी का और बुरों को उन की बुराई का बदला देगा,अल्लाह तआला जब किसी चीज़ का इरादा करता है तो कहता है हो जा,पस वह चीज़ हो जाती है,और वह अपनी शक्ति से दिलों को उलटता पलटता है और जिस प्रकार चाहता है दिलों में उलट फेर करता है।

”अल मुक़्तदिर“

वह मज़बूत ताक़त वाला है,जिस पर जैसा चाहता है शक्ति रखता है।

”अल क़ादिर“

पूर्ण शक्ति वाला है,उस ने जीवित किया और मौत दी,मखलूक़ को वजूद बखशा,उन के लिये उपाय किया और उसे मज़बूत बनाया ।

”अल क़दीर“

वह अपनी शक्ति से लोगों को दोबारा जीवित करेगा और उन्हें बदला देगा,और वह जैसा चाहता है दिलों में उलट पलट करता है।

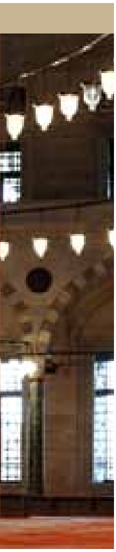

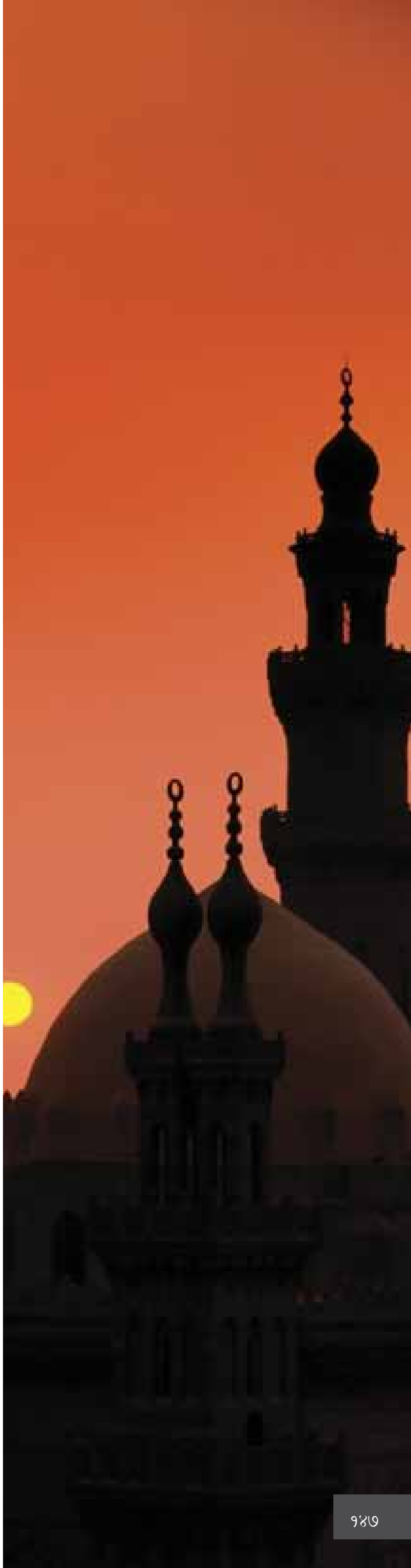

”अल मुक़्तदिर“

वह मज़बूत ताक़त वाला है,जिस पर जैसा चाहता है शक्ति रखता है।

”अल क़ादिर“

पूर्ण शक्ति वाला है,उस ने जीवित किया और मौत दी,मखलूक़ को वजूद बखशा,उन के लिये उपाय किया और उसे मज़बूत बनाया ।

”अल क़दीर“

वह अपनी शक्ति से लोगों को दोबारा जीवित करेगा और उन्हें बदला देगा,और वह जैसा चाहता है दिलों में उलट पलट करता है।

अल्लाह तआला अल वारिस है..

बेशक अल्लाह तआला अल वारिस है.. {और हम ही जिलाते और मारते हैं,और हम ही वारिस हैं“।}[अल हिज्रः 23].

”अल वारिस“

वह धरती और धरती की सब चीज़ों का वारिस है,और अल्लाह तआला के अतिरिक्त कोई चीज़ बाक़ी रहने वाली नहीं है।

”अल वारिस“

वह अपनी मखलूक़ के फना हो जाने के बाद अपनी बादशाहत की पूर्णता के कारण बाक़ी रहने वाला है,क्योंकि सब बादशाहतें उसी की मुहताज हैं। वह ज़ालिमों अहंकारियों और सरकशों को यह कह कर डराता है कि उन्हें अल्लाह तआला ही की ओर लौटना है,इस लिये कि वही सत्य वारिस है।

”अल वारिस“

अल्लाह तआला अपने बंदों को अपनी राह में खर्च करने पर उभारता है,क्योंकि धन आरज़ी है और आयु खतम होने वाली, और सब लोगों को बाक़ी रहने वाले अल्लाह की ओर लौटना है।

”अस्समी अल बसीर“..

वह तेरी बातें सुनता है,तो अपना हिसाब स्वयं लो,वह तुम्हारी प्रार्थना सुनता है तो तुम उस के सामने गिड़गिड़ाओ,वह तुम्हारे आमाल को देखता है,कोई छोटी सी छोटी चीज़ उस से छुपी नहीं है,इस लिये अच्छे कार्य करो,निःसंदेह अल्लाह तआला अच्छे कार्य करने वालों को प्रिय रखता है।

"अल वारिस"

वह अपने बंदों को अपनी नाशुक्री से रोकता है,क्योंकि नेमत उसी की ओर से है और नेमतों को उसी की ओर लौटना है।

"अल वारिस"

धरती और धरती में पाई जाने वाली सब चीज़ों का वह मालिक है,और हर एक चीज़ को अतिरिक्त उस के खतम होना है,तो उसी की ज़ात बाक़ी रहने वाली हुयी और वही असली वारिस हुआ। {और हम ही हैं सब कुछ के वारिस"।[अल क़ससः 58].

बेशक अल्लाह तआला ही अल वारिस है..

अल्लाह तआला अस्समी और अल बसीर है..

बेशक अल्लाह तआला अस्समी और अल बसीर है...

हे सुनने वाले हमारी दुआयें सुन ले और हमारी पुकार क़बूल कर ले,तु हमारे आमाल,हमारी कोताहियाँ को देखने वाला है,अथवा तू यह भी देख रहा है कि हम केवल तेरी अकेली ज़ात के मुहताज हैं।

"अल्लाह तआला अस्समी है"

वह हर कमज़ोर और शक्तिमान की आवाजें सुनता है,उस को एक आवाज़ दूसरी आवाज़ से और एक माँगने वाला दूसरे माँगने वाले से बे खबर नहीं करता है।

"अल्लाह तआला अल बसीर है"

वह हर चीज़ को देखता है,चाहे वह छोटी हो या बड़ी,या वह रात में छुपी हो अथवा दिन में हो।

"अस्समी"

अनेक भाषाओं और अनेक आवश्यक्ताओं के होने के बावजूद वह सब की बातें सुनता है।

"अल बसीर"

ठोस पत्थर पर काली रात में काली चींटी के क़दमों को वह देखता है,और वह सात ज़मीनों के नीचे रहने वाली चीज़ों को उसी प्रकार देखता है जिस प्रकार वह सात आसमानों के ऊपर वाली चीज़ों को देखता है।

"अस्समी अल बसीर"

उस से कोई चीज़ ढकी छुपी नहीं है,और न ही वह किसी चीज़ से ग़ाफिल है।

बेशक अल्लाह तआला अस्समी और अल बसीर है..

अल्लाह तआला अश्शाकिर और अश्शकूर है..

बेशक अल्लाह तआला अश्शाकिर और अश्शकूर है..

बेशक अल्लाह तआला अश्शकूर है..

{बेशक अल्लाह तआला सम्मान करने वाला और जानने वाला है"।}[अल बक़राः 158].

{बेशक हमारा रब बड़ा माफ करने वाला और क़दर करने वाला है"।}[फातिरः 34].

अल्लाह तआला छोटे से छोटे अमल की क़द्र करता है, और अधिकतर गलतियों को क्षमा कर देता है,और इख्लास वालों के अमलों को बिना हिसाबो किताब कई गुना बढ़ा देता है।

"अल्लाह तआला अश्शकूर है"

जो शुक्र अदा करता है उसे देता है,और माँगने वाले पर करम करता है,और जो उसे याद करता है वह भी उसे याद करता है,तो शुक्रगुज़ार के लिये अधिक है और नाशुक्रे के लिये घाटा और नुक़सान है, अल्लाह तआला ने कहाः {अगर तुम शुक्रिया अदा करोगे तो बेशक मैं तुम्हें अधिक दूँगा,और अगर तुम नाशुक्रे होगे तो निश्चय मेरा सख्त अज़ाब है"।}[इब्राहीमः 7].

बेशक अल्लाह तआला अश्शाकिर और अश्शकूर है..

अल्लाह तआला अल हमीद(प्रशंसा के योग्य) है..

बेशक अल्लाह तआला अल हमीद है

अल्लाह तआला अपनी ज़ात में अपने कार्यों में,अपने स्वभाव में और अपने कथनों में प्रशंसा के योग्य है,इस संसार में अल्लाह के अतिरिक्त कोई प्रशंसा के योग्य नहीं,स्तुति और संपूर्ण प्रशंसा अल्लाह तआला के लिये है"

अल हमीद

अल्लाह तआला अपनी ज़ात में,अपनी विशेषताओं में और अपने कार्यों में प्रशंसा के योग्य है,उस के लिये अच्छे अच्छे नाम हैं,और उस के लिये अधिक पूर्ण विशेषतायें हैं और खूबसूरत कारनामे हैं,क्योंकि अल्लाह तआला के कारनामे उस के करम और न्याय पर आधारित हैं।

तेरे ही लिये सब तारीफें हैं कि तू ने हमारे पास अपनी किताब उतारी,और हमें अपनी महिमा की पहचान करवाई और हमारी ओर अपने रसूल मुहम्मद ﷺ को भेजा।

बेशक अल्लाह तआला प्रशंसा के योग्य है"

अल्लाह तआला अल मजीद,अल कबीर, अल अज़ीम और अल जलील है..

बेशक अल्लाह तआला अल मजीद,अल कबीर,अल अज़ीम और अल जलील है..

बेशक अल्लाह तआला की ज़ात में महिमा, बड़ाई,महानता और प्रतापवान(जलाल) की विशेषतायें पाई जाती हैं,वह हर चीज़ से बड़ा और हर चीज़ से अधिक महान, शक्तिशाली और बुलंद है,उसी के लिये उस के नेक और चुने बंदों के दिलों में सम्मान और इज़्ज़त है,निःसंदेह उन के दिल अल्लाह तआला की ताज़ीम,सम्मान,इज़्ज़त और आजज़ी एवं नम्रता से भरे हैं,ऐ महान रब!! तेरी ज़ात पाकीज़ा है और तू अधिक अज़ीम है।

ऐ महान!! तेरी ज़ात पाकीज़ा है और तू बहुत बड़ा है!! {तो तू अपने महान रब के नाम की पविन्नता बयान कर"।}[अल वाक़ेआः 96].

हम तेरी प्रशंसा और महानता को गिन ही नहीं सकते,ऐ बडे, बुलंद शान और ऐ प्रतापवान(जलाल) और इज़्जत वाले।

अल्लाह तआला अपनी महान ज़ात और अपने नामों और विशेषताओं में विराट है.. {उस जैसी कोई चीज़ नहीं"।}[अश्शूराः 11].

अल्लाह तआला प्रतापवान(जलाल) और महानता वाला है,जो कोई उस में से किसी भी चीज़ के अन्दर अल्लाह तआला से झगड़ा करे तो अल्लाह तआला उस को तोड़ देगा,जैसा की हदीसे कुदसी में हैः «बड़ाई मेरी चादर है,और महानता मेरी लुंगी,अगर इन दोनों में से किसी एक में भी कोई मुझ से झगड़ा करे,तो मैं उसे नर्क में डाल दूँगा» (अहमद).

बेशक अल्लाह तआला अल मजीद,अल कबीर,अल अज़ीम और अल जलील है..

अल्लाह तआला अल अली,अल आला और अल मुतआल है..

बेशक अल्लाह तआला अल अली,अल आला और अल मुतआल है..

" अल अली,अल आला और अल मुतआल"

अल्लाह तआला के लिये हर प्रकार की बुलंदी है,ज़ाती बुलंदी,शक्ति और विशेषताओं की बुलंदी,और गलबा पाने की बुलंदी है

{और वह तो बहुत महान और बहुत बड़ा है"।}[अल बक़राः 255].

अल्लाह तआला अर्श पर मुस्तवी है,और वह महानता,बड़ाई,प्रतापवान,सुंदरता की विशेषताओं और अधिकतर पूर्णता से मुत्तसिफ है,और ये सारे कमाल उसी पर खतम हैं।

"अल अली,अल आला"

अल्लाह तआला हर उस अैब से बुलंद व बाला है जो उस की शान के योग्य नहीं,और वह हर प्रकार की कमी और संदेह से दूर है,वह अपनी ज़ात,विशेषताओं,और ग़लबा के ज़रिये बुलंद व बाला है,अर्थात अल्लाह तआला अधिकतर महान है।

बेशक अल्लाह तआला अल अली,अल आला और अल मुतआल है..

अल्लाह तआला अल क़ाबिज़ और अल बासित है..

बेशक अल्लाह तआला अल क़ाबिज़(तंगी करने वाला) और अल बासित(कुशादगी करने वाला) है..

"अल्लाह तआला अल क़ाबिज़ है"

वह कुछ क़ौमों की रोज़ी तंग कर देता है ताकि उन की परिक्षा ले,और कुछ की रोज़ी रोक लेता है ताकि उन्हें विजित(मगलूब) करे,और कुछ क़ौमों की रोज़ी को महफ़ूज़ रखता है ताकि उन के दरजों को ऊँचा करे।

"अल्लाह तआला अल बासित है"

अल्लाह तआला रोज़ी कुशादा करता है,और दिलों के ज्ञान में भी कुशादगी करता है,और यह सब उस की हिक्मत,दयालुता,उस के करम और उस की उदारता के तक़ाज़ा अनुसार हैं।

बेशक अल्लाह तआला अल क़ाबिज़(तंगी करने वाला) और अल बासित(कुशादगी करने वाला) है..

अल्लाह तआला अल मूअती(देने वाला) और अल माने(मना करने वाला) है"

बेशक अल्लाह तआला अल मूअती (देने वाला) और अल माने(मना करने वाला) है"

अल्लाह तआला अल मूअती(देने वाला) और अल माने(मना करने वाला) है"

जिस को अल्लाह तआला दे उस को कोई रोकने वाला नहीं,और जिस को रोक ले उस को कोई देने वाला नहीं,सब हितों और लाभों को उसी से माँगा जाता है,और उसी से आशा की जाती है,वही है जिसे चाहता है देता है,और अपनी हिक्मत और दयालुता की बुनियाद पर जिस से चाहे रोक लेता है।

हे अल्लाह! हे विशाल (कुशादा) करने वाली ज़ात,अपनी रहमतें हमारे ऊपर विशाल कर दे,और हमें अपना दान प्रदान कर,और ऐ रोकने वाले!हम से बुराइयों को रोक ले,और ऐ मना करने वाले हम से झगड़ा फसाद को दूर कर दे।

https://www.with-allah.com/hi

बेशक अल्लाह तआला अल मूअती(देने वाला) और अल माने(मना करने वाला) है"

संपूर्ण प्रशंसा अल्लाह तआला के लिये है,वह उसी प्रकार है जिस प्रकार स्वयं उस ने अपने विषय में बयान किया है,और जिस प्रकार मखलूक ने उस के विषय में बयान किया है उस से कहीं अधिक ऊपर है।

इमाम शाफई

https://www.with-allah.com/hi

ख-संसार में अल्लाह तआला के नामों का प्रभावः

अल्लाह तआला के नामों और उस की महान विशेषताओं का ज्ञान अधिकतर बड़ा और श्रेष्ठ ज्ञान है,और अल्लाह तआला के नामों में से हर एक नाम की एक खास विशेषता (सिफत) है,उस के सब नामों में प्रशंसा और पूर्णता की विशेषता है,और हर सिफत का एक तक़ाज़ा और अमल है,और हर एक अमल का एक प्रभाव है जो उस का लाज़मी नतीजा है,और अल्लाह तआला की ज़ात को उस के नामों से और उस के नामों को उस की विशेषताओं और उस के अर्थों से,और उन विशेषताओं को तक़ाज़ा करने वाले कार्यों से जाना जाता है,और उन कार्यों को उन के प्रभाव से खाली समझना असंभव है,और यह सब अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं के प्रभाव में से हैं।

और अल्लाह तआला के सब कार्य हिक्मत और हितों के अनुसार हैं,और उस के अच्छे अच्छे नाम हैं,उन नामों को उन के प्रभाव से खाली मानना अल्लाह तआला की ज़ात में ना मुम्किन और असंभव है,इसी लिये अल्लाह तआला ने उस की पकड़ की है जो अल्लाह तआला के आदेश,रोक,सवाब और दंड को अल्लाह तआला के लिये अनिवार्य नहीं समझता, क्योंकि इस प्रकार से उस व्यक्ति ने अल्लाह तआला की ओर ऐसी चीज़ मंसूब कर दी जो उस के शान योग्य नहीं, अथवा जिस से वह पाक है,और गोया उस ने यह कहा हो कि यह तो एक बुरा हुक्म है,जिस किसी ने भी उस पर यह हुक्म लागू किया हो,और जो व्यक्ति इस जैसी चीजें अल्लाह तआला की ओर मंसूब कर रहा है,वास्तव में वह अल्लाह तआला की जैसी क़द्र करनी चाहिये नहीं कर रहा है, और न ही वह अल्लाह तआला की शान के योग्य सम्मान कर रहा है,जैसा कि अल्लाह तआला ने,नुबुव्वत,पैग़म्बर और किताबों का इन्कार करने वाले लोगों के बारे में कहाः {और उन्हें जिस तरह अल्लाह की क़द्र करनी चाहिये थी क़द्र नहीं की,जब उन्हों ने यह कहा कि अल्लाह ने किसी इन्सान पर कुछ नहीं उतारा“।}[अल अनआमः 91].

और अल्लाह तआला ने क़यामत,सवाब ओर अज़ाब का इन्कार करने वाले लोगों के बारे में

कहाः {और उन लोगों ने जैसा सम्मान अल्लाह का करना चाहिये था नहीं किया,सारी धरती क़यामत के दिन उस की मुठी में होगी और सारे आकाश उस के दायें हाथ में लपेटे हुये होंगे“।}[अज़्ज़ुमरः 67]. और अल्लाह तआला ने अनेक प्रकार के लोगों,जैसे नेक,बुरे,मोमिन और काफिर के बीच बराबरी को जायज़ क़रार देने वालों के बारे में कहाः {क्या उन लोगों का जो बुरे काम करते हैं यह ख्याल है कि हम उन्हें उन लोगों जैसा कर देंगे जो ईमान लाये और नेकी के काम किये कि उन का मरना जीना बराबर हो जाये,बुरा फैसला है जो वे कर रहे हैं“।} [अल जासियाः 21].

अल्लाह तआला ने यह बतलाया है कि यह एक ग़लत और बुरा हुक्म है,जो उस की शान के योग्य नहीं और उस के नाम और उस की विशेषतायें इस से बरी हैं,

और अल्लाह तआला ने कहाः {क्या तुम यह समझ बैठे हो कि हम ने तुम्हें बेकार ही पैदा किया है,और यह कि तुम हमारी ओर लौटाये ही नहीं जाओगे,अल्लाह तआला सच्चा बादशाह है,वह बुलंद है,उस के सिवाय कोई माबूद नहीं,वही इज़्जत वाले अर्श का रब है“।} [अल मोमिनूनः 115-116].

अल्लाह तआला ऐसे बुरे गुमान और सोच से बुलंद व बाला है जो उस के नामों और उस की विशेषताओं के तक़ाज़ों के विपरित हों।

और कुआन में इस की अधिकतर मिसालें हैं,जिन में अल्लाह तअलाला ने अपने नामों और विशेषताओं के विपरित चीज़ों की अपने आप से नफी की है,क्योंकि इस से अल्लाह तआला की विशेषताओं का उन की पूर्णता और उन के तक़ाज़ों से खाली करना लाज़िम आता है।

अल्लाह तआला का नाम ”अल हमीद,अल मज़ीद है“ जो इस बात से रोकता है कि वह इन्सान को

बेकार कर दे और उसे किसी काम का न छोड़े,न उसे किसी चीज़ का आदेश दे और न किसी चीज़ से मना करे,न उस को अच्छाई का बदला दे और न बुराई पर सज़ा दे,इसी प्रकार उस का नाम ”अल हकीम“ है जो इन(मज़कूरा) चीज़ों से रोकता है,इसी प्रकार उस के नाम अल मलिक की भी यही सूरते हाल है,और उस का नाम अल हय्य इस बात से रोकता है कि अल्लाह तआला बिना किसी अमल के बेकार हो,बल्कि जीवन का मूल अमल ही है,हर जीवित कार्य करता है,और अल्लाह तआला का खालिक़ और क़य्यूम होना उस के जीवन के लवाज़मात और उस के तक़ाज़ों में से है,उस का नाम अस्समी और अल बसीर है,जिस के लिये किसी देखी और सुनी जाने वाली चीज़ का होना अनिवार्य है,उस का नाम अल खालिक़ है जिस के लिये किसी मखलूक़ का होना अनिवार्य है,उस के नाम अर्रज़्ज़ाक़ का भी यही हाल है,उस का नाम अल मलिक है जो हुकूमत व बादशाहत,तसर्रुफ,उपाय,देने,मना करने,एहसान और न्याय करने,सवाब व अज़ाब देने का तक़ाज़ा करता है,और उस के नाम ”अल बर्र,अल मुह्सिन,अल मुअ्ती और अल मन्नान“ अथवा इस जैसे दूसरे नाम अपने तक़ाज़ों और लवाज़मात को चाहते हैं।

अल्लाह तआला के नाम ”अल गफ्फार, अŸाव्वाब,अल अफ्व“ हैं इन सब नामों के लिये उन के मुतअल्लिक़ात का होना ज़रूरी है,इस लिये किसी ऐसे गुनाह का होना अनिवार्य है जिसे क्षमा किया जाये,तोबा का होना अनिवार्य है जिसे क़बूल किया जाये,और ऐसे जुरमों का होना अनिवार्य है जिन्हें माफ किया जाये,और अल्लाह तआला के नाम ”अल हकीम“ के लिये किसी ऐसे मामलों से मुतअल्लिक़ होना ज़रूरी है जिस में उस की हिक्मत ज़ाहिर हो,क्योंकि इन नामों का इन के प्रभाव के मुतक़ाज़ी होना ऐसे ही है जैसे मखलूक़ के लिये खालिक़ होना,मरज़ूक के लिये राज़िक होना,बंदे के लिये किसी देने वाले का होना,अथवा बंदे के लिये किसी रोकने वाले का होना अनिवार्य है और(अल्लाह तआला के) यह सब नाम अच्छे हैं।

अल्लाह तआला अपनी ज़ात और अपने नामों और विशेषताओं से मुहब्बत करता है,वह माफ करने वाला है,माफी को पसंद करता है,और वह क्षमा करने को अथवा तोबा को प्रिय रखता है,और जब बंदा तोबा करता है तो वह इतना अधिक प्रसन्न होता है जिसे बयान नहीं किया जा सकता,उस पर सहनशील होता है,उस की तोबा क़बूल करता है,और उसे दरगुज़र करता है।

अल्लाह तआला ”अल हमीद और अल मजीद“ है, अल्लाह तअला की प्रशंसा और उस की महिमा अपने प्रभाव का तक़ाज़ा करते हैं,और उन के प्रभाव में से चूक को माफ करना,गलतियों को दरगुज़र करना,पापों को क्षमा करना,और अपराधों को माफ करना है,जब कि उसे हक़ वसूल करने की पूर्ण शक्ति है,और वह

जुर्म और उस पर सज़ा की मिक़्दार से बा खबर है,तो अल्लाह तआला का ज्ञान रखते हुये माफ और क्षमा करना उस की पूर्ण इज़्ज़त और उस की हिक्मत की खबर देती है,जैसा कि अल्लाह तआला ने ईसा बिन मरयम अलैहिमस्सलाम की ज़ुबानी फरमायाः {अगर तू इन को सज़ा दे तो यह तेरे बंदे हैं और अगर तू इन्हें माफ कर दे तो तू ज़बरदस्त हिक्मत वाला है“।}[अल माइदाः 118].

अर्थात तेरी माफी केवल तेरी शक्ति और तेरी हिक्मत की बुनियाद पर है, (हे अल्लाह!) तू उस व्यक्ति की तरह नहीं है जो कमज़ोर होने के कारण माफ करता है,और न तो उस व्यक्ति की तरह है जो इस लिये दरगुज़र करता है कि वह हक़ की मिक़्दार से नावाक़िफ है,बल्कि तू अपने हक़ को अधिकतर जानता है, तू उसे पूरा पूरा वसूल करने की शक्ति रखता है,और उसे वसूल करने में हिक्मत दिखाता है।

जो व्यक्ति अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं का संसार और मामलों पर प्रभाव की वैधता पर विचार करेगा,तो उसे ये पता चल जायेगा कि बंदे के हाथों होने वाले यह गुनाह और उस का मुक़द्दर करना भी अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं और उस के कार्यों की पूर्णता में से हैं,अथवा गुनाह के उद्देश्य भी अल्लाह तआला की प्रशंसा, उस की महिमा का तक़ाज़ा करते हैं जिस तरह से अल्लाह तआला की रुबीबियत और उलूहियत भी इसी का तक़ाज़ा करती है।

अल्लाह तआला के हर फैसले और हर हुक्म में ऊँचे दरजे की हिक्मत,प्रभावशाली निशानियाँ,बंदों की अपने रब के नामों और उस की विशेषताओं का ज्ञान,उन के दिलों में अल्लाह की मुहब्बत पैदा करने की चाहत,उन का अल्लाह तआला का ज़िक्र करना और शुक्र अदा करना,और अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं से बंदों का अल्लाह तआला की बंदगी करने का पैग़ाम है,क्योंकि अल्लाह तआला के हर नाम के साथ एक खास इल्मी और अमली इबादत जुड़ी हुयी है,और लोगों में सब से पूर्ण और उŸाम इबादत उस व्यक्ति की है जो अल्लाह तआला के सारे नामों,और अपनी जानकारी अनुसार संपूर्ण विशेषताओं पर ईमान रखते हुये इबादत करता हो,और एक नाम की बंदगी उस को दूसरे नाम की बंदगी से मना नहीं करती,जैसे वह व्यक्ति जिस को ”अल क़दीर“ नाम की बंदगी”अल हलीम“ या ”अर्रहीम“ की बंदगी से रोके,या ”अल मुअ्ती“ की बंदगी ”अल मानेअ्“ की बंदगी से रोके,या ”अर्रहीम“,या ”अल अफ्व“,या ”अल ग़फ़ूर“ की बंदगी या ”अल मुन्तक़िम“ की बंदगी से रोके(अर्थात एक नाम की बंदगी उस को दूसरे नाम की बंदगी से मना नहीं करती) इसी प्रकार दूसरी मिसालें बन सकती हैं।

अल्लाह तआला ने फरमायाः {और अच्छे नाम अल्लाह के लिये ही हैं इस लिये इन नामों से अल्लाह ही को पुकारो"।} [अल आराफः 180].

और इन नामों के ज़रिये की जाने वाली दुआ अपनी ज़रूरत पर,अल्लाह तआला की प्रशंसा पर और उस की बंदगी पर आधारित (शामिल) होती है,अल्लाह तआला स्वयं अपने बंदों को इस बात की हिदायत देता है कि वह उस के नामों और विशेषताओं से उस को पहचानें,उन नामों के ज़रिये उस की प्रशंसा करें,और उन नामों से बंदगी करके अपना हक़ प्राप्त करें।

अल्लाह तआला अपने नामों और विशेषताओं के प्रभाव और उन के तक़ाज़ों से प्रेम करता है,वह ज्ञानी है हर जानकार से प्रेम करता है,वह दानी है हर दानी व्यक्ति को प्रिय रखता है,वह ताक़ है और ताक़ को पसंद करता है,सुंदर है संुदरता को पसंद करता है,वह क्षमा करने वाला है क्षमा और क्षमा करने वालों से मुहब्बत करता है,वह लज्जा करता है और लज्जा एवं लज्जा करने वालों से प्रेम करता है,नेक है नेक लोगों से मुहब्बत करता है,शुक्रगुज़ार है शुक्रगुज़ारों से प्रेम करता है,सब्र करने वाला है सब्र करने वालों से मुहब्बत करता है,सहनशील है सहनशीलों से मुहब्बत करता है, अल्लाह तआला ने तोबा,क्षमा,माफी,दरगुज़र से मुहब्बत के कारण ऐसी मखलूक़ को पैदा किया जिसे वह माफ करे,उस की तोबा क़बूल करे,क्षमा करे और दरगुज़र करे।

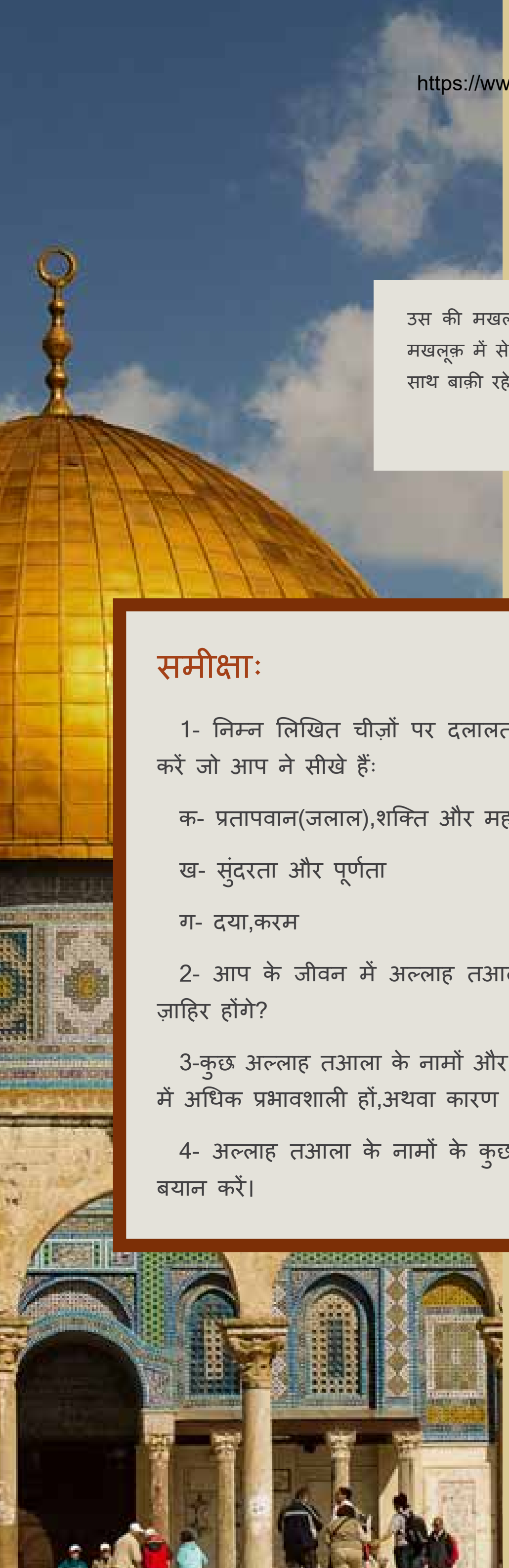

https://www.with-allah.com/hi

उस की मखलूक़ में से कोई भी चीज़ उस के समान नहीं,और न ही वह अपनी मखलूक़ में से किसी के समान है,वह हमेशा हमेश अपने नामों और विशेषताओं के साथ बाक़ी रहेगा।

इमाम अबू हनीफा

समीक्षाः

1- निम्न लिखित चीज़ों पर दलालत करने वाले अल्लाह तआला के उन नामों का ज़िक्र करें जो आप ने सीखे हैंः

क- प्रतापवान(जलाल),शक्ति और महानता

ख- सुंदरता और पूर्णता

ग- दया,करम

2- आप के जीवन में अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं के प्रभाव कैसे ज़ाहिर होंगे?

3-कुछ अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं को बयान करें जो आप के जीवन में अधिक प्रभावशाली हों,अथवा कारण भी बतायें।

4- अल्लाह तआला के नामों के कुछ दृश्यों और आप के जीवन में पड़ने वाले प्रभाव को बयान करें।

समाप्तिः शुद्ध ईमान का निमंन्नण

जो अल्लाह तआला को पहचान लेगा वह उस से प्रेम करेगा,उस की इबादत करेगा और उस के लिये सत्यप्रिय (मुख्लिस) होगा।

समाप्तिः शुद्ध ईमान का निमंन्नण

जो अल्लाह तआला को पहचान लेगा वह उस से प्रेम करेगा,उस की इबादत करेगा और उस के लिये सत्यप्रिय (मुख्लिस) होगा।

अय्यूब सुख्तियानी(रहिमहुल्लाह) पूरी रात इबादत में गुज़ारते थे,और इस अमल को छुप कर करते थे,फिर जब सुबह होती तो कुछ इस प्रकार की ऊँची आवाज़ निकालते कि गोया अभी नींद से उठे हैं।

निष्ठा (इख्लास) का अर्थ

इखलास मुख्लिसीन की जन्नत और मुŸाक़ीन (अल्लाह से डरने वालों) की रूह और बंदे और उस के रब के बीच एक राज़ है,इख्लास वस्वसों और रियाकारी को समाप्त करता है,इख्लास ये है कि आप अपने अमल से केवल अल्लाह की प्रसन्नता चाहें,आप के दिल में इस के अतिरिक्त कोई उद्देश्य न हो,न लोगों की प्रशंसा और तारीफ की चाहत हो और न आप को अल्लाह तआला के अतिरिक्त किसी और से किसी बदले की आशा हो।

इख्लास अमल की सुंदरता और उस की पूर्णता का नाम है,इख्लास दुनिया की सब से अज़ीज़ और प्यारी चीज़ है,इख्लास यह है कि केवल एक अल्लाह की इबादत और उस की पैरवी करें, इख्लास यह है कि मखलूक़ की निगाहों को भूल कर हमेशा अल्लाह की ओर से होने वाली निगरानी को याद रखें,जो काम अल्लाह के लिये होगा तो अल्ला तआला उस का बदला ज़रूर देगा,और जो काम अल्लाह के अतिरिक्त किसी और के लिये होगा तो वह काम बेकार शुमार होगा,पैग़म्बरﷺने फरमायाः

«निःसंदेह अमलों का दारोमदार निय्यतों पर है,और हर इन्सान को वही कुछ मिलने वाला है जिस की उस ने नियय्त की है,जो इन्सान दुनिया प्राप्त करने के लिये या किसी महिला से निकाह के लिये हिज्रत करेगा तो उस की हिज्रत उसी चीज़ के लिये मानी जायेगी जिस के लिये उस ने हिज्रत की है।» (बुखारी)।

इख्लास की स्थिति (मक़ाम):

इख्लास का दीन में बड़ा ऊँचा मक़ाम है, कोई चीज़ इस का मुक़ाबला नहीं कर सकती,चुनांचे कोई अमल बिना इख्लास के क़बूल नहीं है,अल्लाह तआला कुआने करीम की अनेक आयतों में हमें इख्लास पैदा करने की नसीहत की है,उस में से एक अल्लाह तआला का ये कथन है: {उन्हें इस के सिवाय कोई हुक्म नहीं दिया गया कि केवल अल्लाह की इबादत करें,उसी के लिये धर्म को शुद्व कर रखें"।}[अल बय्यिनाः 5].

और अल्लाह तआला ने फरमायाः {कह दीजिये कि बेशक मेरी नमाज़,और मेरी सभी इबादतें और मेरा जीना मरना सारी दुनिया के रब अल्लाह के लिये हैं, उस का कोई शरीक नहीं,मुझे इसी का हुक्म दिया गया है,और मैं पहला हूँ जिन्होंने सब से पहले उसे माना"}।[अल अनआमः 162-163].

और अल्लाह तआला ने फरमायाः {उस ने ज़िंदगी और मौत को इस लिये पैदा किया कि तुम्हारा इम्तेहान ले कि तुम में सें अच्छे अमल कौन करता है"}।[अल मुल्कः 2].

और अल्लाह तआला ने फरमायाः {बेशक हम ने इस किताब को हक़ के साथ आप की ओर उतारा तो आप केवल अल्लाह ही की इबादत करें,उसी के लिये दीन को शुद्व करते हुये,सुनो अल्लाह ही के लिये खालिस इबादत करना है"।} [अज़्ज़ुमरः 2-3].

और अल्लाह तआला ने फरमायाः {तो जिसे भी अपने रब से मिलने की उम्मीद हो उसे चाहिये कि नेकी के काम करे और अपने रब की इबादत में किसी को भी शरीक न करे"।} [अल कहफः 110]

https://www.with-allah.com/hi

किस प्रकार आप मुख्लिस बन सकते हैं?

हर वह छुपी चीज़ जो ज़ाहिरी चीज़ के विपरित हो वह झूट है।

पहली चीज़ः अल्लाह तआला के लिये तौहीद को साबित करना,अल्लाह तआला फरमाता हैः {उसी के लिये दीन को शुद्व करते हुये,सुनो अल्लाह ही के लिये खालिस इबादत करना है“।} [अज़्ज़ुमरः 2-3].

और अल्लाह तआला ने फरमायाः {उन्हें इस के सिवाय कोई हुक्म नहीं दिया गया कि केवल अल्लाह की इबादत करें,उसी के लिये धर्म को शुद्व कर रखें“।} [अल बय्यिनाः 5].

दूसरी चीज़ः रसूलुल्लाह ﷺ की पैरवी का सबूत और जिन चीज़ों के करने का आदेश दिया है उसे करना,और जिन चीज़ों से रोका और मना किया है उस से रुक जाना,और जिन चीज़ों के बारे में आप ﷺ ने खबर दी है उसे सच्चा जानना,अल्लाह तआला ने फरमाया हैः {हे ईमान वालो अल्लाह के हुक्म की पैरवी करो और रसूल की और अपने में से हाकिमों के हुक्म को मानो,फिर अगर किसी बात में इख्तिलाफ करो तो उसे लौटाओ अल्लाह और उस के रसूल की ओर अगर तुम्हें अल्लाह और क़यामत के दिन पर ईमान है,यह सब से अच्छा है और परिणाम के एतबार से बहुत अच्छा है“।}[अन्निसाः 59].

तीसरी चीज़ः जब आप मुख्लिस बनना चाहें तो नेक अमल के करने के लोभी हों,और हमेशा यह याद रखें कि वह सात व्यक्ति जिन को अल्लाह तआला उस दिन अपनी छाया में जगह देगा जिस दिन उस की छाया के अतिरिक्त कोई छाया न होगी उस में से एक वह व्यक्ति भी हैः «जिस ने सदक़ा दिया और लोगों से उसे छुपाये रखा..» (बुखारी),

अर्थात ये भी याद रखें किः «सब अमलों का दारोमदार निय्यतों पर है» (बुखारी).

चैथी चीज़ः अपने दिल से लोगों की प्रशंसा और तारीफ को प्रिय रखो,और जो लोगों के हाथों में है उस की उम्मीद न करो,और अपने पैदा करने वाले (अल्लाह) तआला से तअल्लुक़ जोड़ो, (सत्यप्रिय) मुख्लिस व्यक्ति दुनिया प्राप्त करने या किसी महिला से शादी की लालच नहीं करता,बल्कि उस की लालच केवल अल्लाह तआला की दया प्राप्त करने की होती है।

पाँचवी चीज़ः आप अपने आप को अपने पालनहार

के सामने कर दें,और उस के द्वार के निकट हीनता की चैखट थाम कर अल्लाह तआला से ये दुआ करें कि वह आप को इख्लास प्रदान कर दे,और आप को रियाकारी से बचाये,और आप के पिछले गुनाहों और पापों को क्षमा कर दे।

इख्लास ये है कि आप अपने अमल पर अल्लाह तआला के अतिरिक्त किसी को साक्षी न बनायें,और न किसी को बदला देने वाला स्वीकारें।

छटी चीज़ः रियाकारी से बचें और उस से खबरदार रहें,क्योंकि जब बंदा रियाकारी और उस के रास्तों पर चलने लगता है तो वह इख्लास के मार्ग से दूर हो जाता है,इसी प्रकार रियाकारी में से ये भी है कि आदमी अपने आप को अल्लाह का वली कहे,या अपने आप को वली कहे जाने पर प्रसन्न हो,या वह अपने करम और कथन को लोगों के सामने बयान करे, अल्लाह तआला ने फरमायाः {जो इन्सान दुनियावी जीवन और उस की ज़ीनत पर रिझा हुआ हो हमें ऐसों को उन के सभी अमल का(बदला) यहीं पूरी तरह से पहुँचा देते हैं और यहाँ उन्हें कोई कमी नहीं की जाती,हाँ,यही वे लोग हैं जिन के लिये आखिरत में आग के सिवाय दूसरा कुछ नहीं,और जो कुछ उन्होंने किया होगा वहाँ सब बेकार है और जो कुछ उन के अमल थे वह सब नाश होने वाले हैं"।} [हूदः 15- 16].

और रिया कारी (दिखावा) छोटा शिर्क है,और उस के बुरे अंजाम में से यह काफी है कि रियाकार के आमाल क़बूल नहीं किये जाते हैं,अगरचे ज़ाहिरी तौर पर वह अच्छे ही क्यों न हों,और रियाकार के अमलों को उस के मुँह पर मार दिया जाता है।

सातवीं चीज़ः मुख्लिस लोगों को साथी बनानाः नबी ﷺ ने फरमायाः «आदमी अपने दोस्त के दीन पर होता है..» (त्रिमिज़ी).

आदमी के दिल में इख्लास और प्रशंसा एवं तारीफ की मुहब्बत एक साथ इकठी नहीं हो सकती,ठीक उसी प्रकार जैसे आग और पानी एक साथ इकठे नहीं हो सकते।

आठवीं चीज़ः इबादत को छुप कर अंजाम दें और उसे ज़ाहिर न करें,अल्लाह तआला फरमाता हैः {अगर तुम दान पुण्य को ज़ाहिर करो,तो वह भी अच्छा है,और अगर तुम उसे छिपा कर ग़रीबों को दे दो,तो यह तुम्हारे लिये सब से अच्छा है"}। [अल बक़राः 271].

नौवीं बाताः अपने आप का सख्त से सख्त हिसाब लें,अर्थात हर समय और हर हाल में अपना मुहासबा करते रहें,अल्लाह तआला ने फरमायाः {और जो लोग हमारे रास्ते में दुख सहन करते हैं हम उन्हें अपना रास्ता अवश्य दिखा देंगे"}। [अल अनकबूतः 69].

और अल्लाह तआला के इस फर्मान में विचार करेंः {हमारी राह में"!!}

दस्वीं बातः अल्लाह तआला से हमेशा और बार बार माँगते रहें,क्योंकि मुहताज बंदा जब अपने आक़ा (मालिक) के द्वार पर चिमट जाता है तो आक़ा उस पर दया करने लगता है,और उस की ज़रूरत और चाहत को पूरी करता है और उस की कमी को दूर कर देता है,तो अल्लाह तआला ही से दुआ करें।

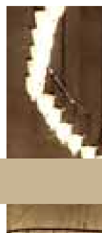

इख्लास के फलः

1- अमलों का क़बूल होनाः

और यह अधिक महत्वपूर्ण है,क्योंकि अमलों के क़बूल होने की शर्तों में से एक शर्त इख्लास है,नबी ﷺ ने फरमायाः «निःसंदेह अल्लाह तआला वही अमल क़बूल करता है जो इख्लास के साथ अथवा अल्लाह तआला की प्रसन्नाता के लिये किया गया हो।» (नसाई).

2- सहायता और अधिकारिताः

नबी ﷺ ने फरमायाः «अल्लाह तआला इस उम्मत के कमज़ोर लोगों की दुआओं,उन की नमाज़ों और उन के इख्लास से सहायता पहुँचायेगा» (नसाई).

3-दिल का बीमारियों से स्वस्थ होनाः

अर्थात दिली बीमारियाँ जैसे कीना,कपट,खियानत और हसद,नबी ﷺ ने हज्जतुल विदा के समय फरमायाः «तीन चीज़ों में मुसलमान का दिल कीना कपट नहीं रखता,ः अल्लाह तआला के लिये अमल को खालिस करने में,मुसलमान हुकमरानों की खैर ख्वाही में,और मुसलमानों की जमाअत के साथ रहने में,क्योंकि दुआयें उन के पीछे से उन्हें घेरे हुये होती हैं» (त्रिमिज़ी).

4- दुनियावी अमलों को नेक अमलों के साथ मिलानाः

नबी ﷺ ने फरमायाः «तुम में से किसी का संभोग करना भी सदक़ा है,सहाबा ने कहा ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! हम में से कोई अपनी जिन्सी चाहत पूरी करे और उस पर सवाब मिले?!आप ने फरमायाः तुम्हारा क्या खयाल है कि अगर वह इन्सान हराम तरीक़े से अपनी इच्छा पूरी करे तो क्या वह गुनहगार नहीं होता? इस लिये जब उस ने हलाल प्रकार से अपनी इच्छा पूरी की (बीवी से भोग किया) तो ज़रूर उस को उस पर सवाब मिलेगा» (मुस्लिम).

5- शैतानी खयालों वहम और बुरे वस्वसों से दूर रहनाः

अल्लाह तआला ने शैतान के बारे में कहा जब उसे खदेड़ दिया और उसे अपनी रहमत से दूर कर दियाः {कहा कि हे मेरे रब! तू ने मुझे भटकाया है,मुझे भी क़सम है कि मैं भी धरती में उन के लिये मोह पैदा करूँगा और उन सब को भटकाऊँगा,सिवाय तेरे उन बंदों के जो चुन कर लिये गये हैं"।} [अल हिज्रः 39-40].

इब्ने उमर रज़िअल्लाहु अन्हुमा ने फरमायाः अगर मुझे इस बात का ज्ञान हो जाये कि अल्लाह तआला ने मेरे एक सज्दे या मेरे एक दिरहम सदक़े को क़बूल कर लिया है,जो कि छुपे तौर पर नहीं था,तो यह चीज़ मुझे मरने से अधिक प्रिय है,क्या आप जानते हैं कि अल्लाह तआला किस बंदे के अमल को क़बूल करता है? {अल्लाह परहेज़गारों से ही क़बूल करता है"।} [अल माइदाः 27].

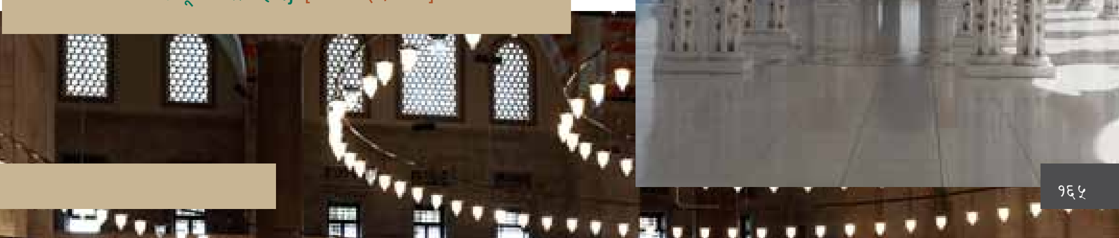

6- मुसीबत और परेशानियों से छुटकाराः और इस की मिसाल वह तीन लोग हैं जिन्हें रात गुज़ारने या वर्षा के कारण एक गुफा में पनाह ले बैठे,और अस्ल हदीस बुखारी एवं मुस्लिम में है।

7- फित्नों के खतरों से मुक्ति और रक्षाः उदाहरण के तौर पर युसुफ अलैहिस्सलाम और हमारे नबी मुहम्मद ﷺ के साथ पेश आने वाले क़िस्से हैं,अल्लाह तआला ने यूसूफ अलैहिस्सलाम के विषय में फरमायाः {और उस औरत ने युसूफ अलैहिस्सलाम की इच्छा की और युसूफ उस की इच्छा करते,अगर वह अपने रब की दलील देख न लेते,इसी प्रकार हुआ इस लिये कि हम उस से बुराई और बेहयाई दूर कर दें, बेशक वह हमारे चुने हुये बंदो में से था“।} [यूसुफः 24].

बहुत से ऐसे लोग हैं जो अपने जिस्म को दुनिया से अलग किये हुये हैं परन्तु उन के दिल में दुनिया की मुहब्बत बैठ गई है,और बहुत से लोग ऐसे हैं जिन का शरीर दुनिया में लिप्त है परन्तु उन के दिल में दुनिया नहीं है, और इन दोनों में यही दूसरे बुद्विमान हैं।

8- अज्रो सवाब की प्राप्ति,अगरचे अमल की सवारी कमज़ोर होः अल्लाह तआला ने फरमायाः

{और न उन पर जो आप के पास आते हैं कि आप उन्हें सवारी का इन्तेज़ाम कर दें तो आप जवाब देते हैं कि मैं तुम्हारे वाहन के लिये कुछ नहीं पाता तो वह दुख से आँसू बहाते लौट जाते हैं कि उन्हें खर्च करने के लिये कुछ भी प्राप्त नहीं“।} [अŸाोबाः 92].

और गुनाहों से मासूम रसूल ﷺ ने इस विषय में फरमायाः «जो व्यक्ति सच्चे दिल से अल्लाह तआला से उस की राह में शहादत (मरजाना) माँगे,तो अल्लाह तआला उस को शहीदों के मरतबे तक पहुँचा देता है,चाहे बिस्तर पर उस की मौत हुयी हो। (मुस्लिम).

9- स्वर्ग में प्रवेशः अल्लाह तआला के इस फर्मान के कारणः {और तुम्हें उसी का बदला दिया जायेगा जो तूम करते थे“।} [अस्साफ्फातः 39].

और अल्लाह तआला ने फरमायाः {लेकिन अल्लाह के मुख्लिस बंदे,उन्हीं के लिये मुक़र्रर रोज़ी है,मेवे और वह बाइज़्ज़त और आदरणीय होंगे,सुखों वाली जन्नतों में,आसनों पर एक दूसरे के सामने बैठे होंगे,जारी शराब के प्यालों का उन पर दौर चल रहा होगा,जो साफ सफेद और पीने में मज़ेदार होंगी,न उस से सिर दर्द होगा और न उस के पीने से बहकेंगे,और उन के निकट नीची और बड़ी बड़ी आँखों वाली होंगी,ऐसी जैसे छिपाये हुये अण्डे।}[अस्साफ्फातः 40-49]. इख्लास के फलों में यह फल सब से महान है।

बहुत से छोटे अमल निय्यत के कारण बड़े बन जाते हैं,और बहुत से बड़े अमल निय्यत के कारण छोटे बन जाते हैं।

इब्नुल मुबारक

अपनी नेकियों को उसी प्रकार छुपाओ जिस प्रकार आप अपने गुनाहों को छुपाते हो।

अबू हाज़िम अल मदीनी

समीक्षाः

1- इख्लास और गैरे इख्लास वाले व्यक्ति के बीच पाये जाने वाले फक्र् को बयान करें।

2- इख्लास की विपरित क्या है?

3- तौहीद और इख्लास की प्रतिष्ठा के बावजूद वे क्या चीज़ें हैं जो लोगों को रियाकारी और शिर्क पर उभारती हैं?

अनुकूल वेबसाइटें

https://www.with-allah.com/hi

SPACE CHANNELS

www.spacechanels.com

नोटिफिकेशन

इबादत के मसाइल फोटो के साथ

بوابة الإسلام

गेटवे इस्लाम

www.islam.spacechanels.com

الطريق إلى السعادة
The Path to Happiness

खुशी का मार्ग

المنبر العالمي
Global Minbar

वैश्विक मंच